कवि पद्माकर कृत

१३

जगद्विनोद

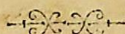
सन १९२६

श्रीः ।

मथुरा-निवासी मोहनलालभट्टात्मज

कवि पद्माकर-कृत

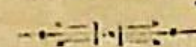
जगद्विनोद



जिसमें

नायक-नायिका-भेद उदाहरण-सहित दोहा और कवित्तों में वर्णित है ।

तेरहवीं बार



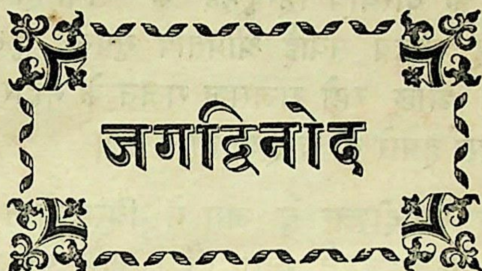
लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९२६ ई०

श्रीगणेशाय नमः



दोहा

सिद्धि-सदन सुंदर बदन, नंदनँदन मुदमूल।
रसिक-शिरोमणि साँवरे, सदा रहहु अनुकूल ॥ १ ॥
जय जय शक्ति शिलामयी, जय जय गढ़ आमेर।
जय जयपुर सुरपुर सदृश, जो जाहिर चहुँ फेर ॥ २ ॥
जय जगजाहिर जगतपति, जगतसिंह नरनाह।
श्री प्रतापनंदन बली, रबिबंशी कछवाह ॥ ३ ॥
जगतसिंह नरनाह को, समुझि सबनको ईश।
कबि पदमाकर देत है, कबित बनाय अशीश॥ ४ ॥

कबित्त

छत्रिन के छत्र छत्रधारिन के छत्रपति छाजत छटा

छिति छेम के छवैया हौ । कहै पदमाकर प्रभाव के प्रभाकर दया के दरियाव हिन्दूहद्द के रखैया हौ ॥ जागते जगतसिंह साहब सवाई श्रीप्रताप नृपनंद कुलचंद रघुरैया हौ। आछे रहो राजराज राजन के महाराज कच्छकुल कलस हमारे तो कन्हैया हौ ॥ ५ ॥

आप जगदीश्वर है जग में बिराजमान हौ हूँ तो कबीश्वर है राज ते रहत हौं। कहै पदमाकर ज्यों जोरत सुजस आप हौं हूँ त्यों तिहारो जस जोरि उमहत हौं ॥ श्रीजगतसिंह महाराज मानसिंहवत बात यह साँची कछू काँची ना कहत हौं। आपु ज्यों चहत मेरी कबिता दराज त्यों मैं उमर दराज राज रावरी चहत हौं ॥ ६ ॥

दोहा

जगतसिंह नृप जगत हित, हरख हिये निधि नेहु।
कबि पदमाकर सों कह्यो, सरस ग्रंथ रचि देहु ॥ ७ ॥
जगतसिंह नृप हुकुम ते, पाइ महा मनमोद।
पदमाकर जाहिर करत, जगहित जगतबिनोद ॥ ८ ॥
[illegible]व रस में श्रृंगार रस, सिरे कहत सब कोइ।
[illegible]स नायिका नायकहिं, आलंबित है होइ ॥ ९ ॥

ताते प्रथमहिं नायिका, नायक कहत बनाइ ।
जुगति यथामति आपनी, सुकबिन को शिरनाइ ॥ १० ॥

नायिका-लक्षण

रस शृँगार को भाव उर, उपजहि जाहि निहारि ।
ताही को कबि नायिका, बरनत बिबिध बिचारि ॥ ११ ॥

उदाहरण-कबित्त

सुंदर सुरंग नैन शोभित अनंग रंग अंग अंग फैलत तरंग परिमल के । बारन के भार सुकुमारि को लचत लंक राजै परजंक पर भीतर महल के ॥ कहै पदमाकर बिलोकि जन रीझैं जाहि अंबर अमल के सकल जल-थल के । कोमल कमल के गुलाबन के दल के सुजात गड़ि पाँयन बिछौना मखमल के ॥ १२ ॥

पुनर्यथा-सवैया

जाहिरै जागत सी जमुना जब बूड़ै बहै उमहै वह बेनी ।
त्यों पदमाकर हीर के हारन गंग-तरंगन को सुख देनी ॥
पाँयन के रँग सों रँगि जातसी भाँतिही भाँति सरस्वति सेनी॥
पैरै जहाँई जहाँ वह बाल तहाँ तहँ तालमें होतत्रिबेनी॥१३॥

पुनर्यथा-कबित्त

आई खेलि होरी घरै नवलकिशोरी कहूँ बोरी गई रंग

में सुगंधन झँकोरै है । कहै पदमाकर इकंत चलि चौकी चढ़ि हारन के बारनके फंद बंद छोरै है ॥ घाँघरे की घूमनि सुऊरुन दुबीचे दाबि आँगिहू उतारि सुकुमारि मुख मोरै है । दंतन अधर दाबि दूनरि भई सी चापि चौवर पचौवर कै चूनरि निचोरै है ॥ १४ ॥

दोहा

सहज सहेलिन सौं जुतिय, बिहँसि बिहँसि बतराति।
शरदचंद की चाँदनी, मंद परत सी जाति ॥ १५।
कही त्रिबिध सों नायिका, प्रथम स्वकीया नाम।
पुनि परकीया दूसरी, गणिका तीजी बाम ॥ १६।

स्वकीया-लक्षण

निज पतिही के प्रेममय, जाको मन बच काय।
कहत स्वकीया ताहि सों, लज्जा शील सुभाय ॥ १७।

उदाहरण-कबित्त

शोभित स्वकीयगन गुनगनती में तहाँ तेरे नामही की एक रेखा रेखियतु है । कहै पदमाकर पगी यों पति प्रेमही में पदमिनि तोसी तिया तूही पेखियतु है ॥ सुबरन रूप जैसो तैसो शील सौरभ है याही ते तिहारो तनु धनि

लेखियतु है। सोने में सुगंध नाहिं गंध में सुन्यो न सोनो
सोनो औ सुगंध तोमें दोनों देखियतु है ॥ १८ ॥

दोहा

खान पान पीछू करति, सोवति पिछले छोर।
प्राणपियारे ते प्रथम, जगति भावती भोर ॥ १९ ॥
एक स्वकीया की कही, कबिन अवस्था तीन।
मुग्धा इक मध्या कहत, पुनि प्रौढ़ा परबीन ॥ २० ॥

मुग्धा-लक्षण-दोहा

झलकत आवै तरुनई, नई जासु अँग अंग।
मुग्धा तासों कहत हैं, जे प्रबीन रसरंग ॥ २१ ॥

उदाहरण–सवैया

ये अलि या बलिके अधरानि में आनि चढ़ी कछु माधुरई सी।
ज्यों पदमाकर माधुरी त्यों कुच दोउन की चढ़ती उनई सी ॥
ज्योंकुच त्योंहीं नितंबचढ़े कछु ज्योंहींनितंब त्यों चातुरई सी।
जानीनऐसीचढ़ाचढ़िमेंकिहिधौंकटिबीचहीलूटिलई सी २२ ॥

दोहा

कछु गजपति के आहटनि, छिन छिन छीजत शेर।
बिधु बिकास बिकसत कमल, कछू दिनन के फेर ॥ २३ ॥

पल-पल पर पलटन लगे, जाके अंग अनूप ।
ऐसी इक ब्रजबाल को, को कहि सकत सरूप ॥ २४ ॥
यह अनुमान प्रमानियतु, तिय तन जोबन जोति ।
ज्यों मेहँदी के पात में, अलख ललाई होति ॥ २५ ॥
मुग्धा द्विबिध बखानहीं, प्रथम कही अज्ञात ।
ज्ञातयौबना दूसरी, भाखत मति अवदात ॥ २६ ॥
जब यौबन को आगमन, जानि परत नहिं जाहि ।
सो अज्ञातयौबन तिया, भाखत सुकबि सराहि ॥ २७ ॥

अज्ञातयौवना का उदाहरण-कवित्त

ये अलि हमैं तो बात गात की न जानि परै बूझति न काहे यामें कौनं कठिनाई है । कहै पदमाकर क्यों अंग ना समात आँगी लागी काह तोहिं जागी उर में उँचाई है ॥ तुव तजि पाँयन चली है चंचलाई कित बावरी बिलोकै क्यों न आँखिन में आई है। मेरी कटि मेरी भटू कौन धौं चुराई तेरे कुचन चुराई कै नितम्बन चुराई है ॥ २८ ॥

पुनर्यथा-सवैया

स्वेद को भेद न कोऊ कहै ब्रत आँखिनहूँ अँसुवान को धारो ।
त्यों पदमाकर देखती हौ तनको तन कंप न जात सँभारो ॥

है धौं कहाको कहागयो यों दिन द्वैकहीते कछु ख्यालहमारो ।
कानननमेंबसी बाँसुरीकीधुनि प्राननमेंबस्यो बाँसुरीवारो ॥ २९॥

दोहा

कहा कहौं दुख कौन सों, मौन गहौं किहि भाँति ।
घरी घरी यह घाँघरी, परत ढीलिये जाति ॥ ३० ॥
उर उकसौहैं उरज लखि, धरति क्यों न धनि धीर ।
इनहिं बिलोकि बिलोकियतु, सौतिन के उर पीर ॥ ३१ ॥
तन में यौबन आगमन, जाहिर जब जिहि होत ।
ज्ञातयौबना नायिका, ताहि कहैं कबि गोत ॥ ३२ ॥

ज्ञातयौबना का उदाहरण-सवैया

चौक में चौकी जराय जरी तिहि पै खरी बार बगारत सौंधे ।
छोरिधरी हरीकंचुकी न्हानको अंगन ते जगे ज्योति के कौंधे ॥
छाई उरोजन की छबि यों पदमाकर देखतही चकचौंधे ।
भाजिगई लरिकाईमनों लरिकै करिकै दुहुँदुंदुभि औंधे ३ ३॥

पुनर्यथा-सवैया

ये बृषभानुकिशोरी भई इतहू वह नंदकिशोर कहावै ।
त्यों पदमाकर दोउन पै नवरंग तरंग अनंग कि छावै ॥
दौरेदुहू दुरि देखिबे को द्युति देह दुहू की दुहून को भावै ।
ह्यां इनके रसभीजत त्यों दृगहै उनके मसि भीजत आवै ३४॥

दोहा

आजु कालिह दिन द्वैक ते, भई औरही भाँति ।
उरज उचौहन दैउरू, तनु तकि तिया अन्हाति ॥ ३५ ॥

नवोढ़ा लक्षण

अति डर ते अति लाजतें, जो न चहै रति बाम ।
त्यहि मुग्धा को कहत हैं, सुकबि नवोढ़ा नाम ॥ ३६ ॥

उदाहरण-सवैया

राजि रही उलही छबि सों दुलही दुरि देखतही फुलवारी ।
त्यों पदमाकर बोलै हँसै हुलसै बिलसै मुखचंद उजारी ॥
ऐसे समय कहुँ चातककी धुनि कान परी डरपी वह प्यारी ।
चौंकिचकी चमकी चितमें चुपह्वैरही चंचलअंचलवारी ॥३७॥

दोहा

तिय देख्यो पियस्वप्न में, गहत आपनी बाँह ।
नहीं नहीं कहि जागि भजी, यदपि नहीं ढिग नाँह ॥ ३८ ॥
पति की कछु परतीति उर, धरै नवोढ़ा नारि ।
सो बिस्त्रब्ध नवोढ़ तिय, बरणत बिबुध बिचारि ॥ ३९ ॥

बिस्त्रब्ध नवोढ़ा का उदाहरण-सवैया

जाहि न चाह कहूँ रतिकी सुकछू पतिको पतियान लगीहै ।
त्यों पदमाकर आननमें रुचि कानन भौंह कमान लगी है ॥

देति तिया न छुवै छतियाँ बतियाँनमें तो मुसकान लगीहै ।
पीतमै पान खवाइबे को परजंकके पासलौं जानलगीहै ॥४०॥

दोहा

दूरिहिं ते दृगदै रहति, कहति कछू नहिं बात ।
छिनक छबीले को सुतिय, छुवन देति क्यों गात ॥४१॥

मध्या-लक्षण

इक समान जब ह्वै रहत, लाज मदन ये दोइ ।
जा तियके तन में तबहिं, मध्या कहिये सोइ ॥ ४२ ॥

मध्या का उदाहरण-सवैया

आईजुचालि गोपालघरै बृजबालबिशाल मृणालसी बाहीं
त्यों पदमाकर सूरति में रति छू न सकै कितहूँ परछाहीं ॥
शोभित शंभु मनों उर ऊपर मौज मनोभव की मन माहीं ।
लाज बिराजरही आँखियानमें प्रानमेंकान्हजबानमें नाहीं४३॥

दोहा

मदन लाज बस तिय नयन, देखत बनत इकंत ।
इँचे खिंचे इत उत फिरत, ज्यों दुनारि के कंत ॥ ४४ ॥

प्रौढ़ा लक्षण

ललित लाज कछु मदन बहु, सकल केलि की खानि ।
प्रौढ़ा ताही सों कहत, सुकबिन की मति मानि ॥४५॥

उदाहरण-कवित्त

रति बिपरीत रची दम्पति गुपति अति मेरे जानि मानि भय मनमथ नेजे तैं । कहै पदमाकर पगी यों रस-रंग जामें खुलिगे सुअंग सब रंगन अमेजे तैं ॥ नीलमणि जटित सुबेंदा उच्च कुच पै पर्‌यो है टूटि ललित ललाट के मजेजे तैं । मानों गिर्‌यो हेमगिरि शृंग पै सुकेलि करि कढ़िकै कलंक कलानिधि के करेजे तैं ॥ ४६ ॥

दोहा

तिय तन लाज मनोज की, यों अब दशा दिखाति ।
ज्यों हिमंत ऋतु में सदा, घटत बढ़त दिन राति ॥ ४७ ॥
प्रौढ़ा द्विबिध बखानहीं, रति प्रीता इक बाम ।
आनँद अति सम्मोहिता, लक्षण इनके नाम ॥ ४८ ॥

रतिप्रीता का उदाहरण-सवैया

लै पट पीतम के पहिरै पहिराइ पियै चुनि चूनरि खासी ।
त्यों पदमाकर साँझहीते सिगरी निसि केलिकला परकासी ॥
फूलत फूल गुलाबन के चटकाहट चौंकि चकी चपला-सी ।
कान्हके कानन आँगुरी नाइरही लपटाइ लवंगलता-सी ४६॥

दोहा

करति केलि पिय हिय लगी, कोक कलनि अवरेखि ।
विमुद कुमुद लौं ह्वै रही, चंद मंद दुति देखि ॥ ५० ॥

आनंदसंमोहा का उदाहरण—सवैया

रीति रची त्रिपरीत रची रति प्रीतम संग अनंग झरी मैं।
त्यों पदमाकर टूटे हरा ते सरासर सेज परे सिगरी मैं॥
यों करि केलि विमोहित ह्वै रही आनँदकी सुघरी उघरी मैं।
नीबी औ बार सँभारिबेकी सुभई सुधि नारिको चारिघरीमैं ५१

दोहा

भई मगन यों नागरी, सुलहि सुरति आनंद।
अँग अँगोछि भूषन बसन, पहिरावत नँदनंद॥ ५२॥
मान समय मध्या त्रिबिध, त्रिधा कहत प्रौढ़ाहिं।
धीरा बहुरि अधीर गनि, धीरा धीरा ताहिं॥ ५३॥
कोप जनावै व्यंग्य सों, तजै न पति सनमान।
मध्या धीरा कहत हैं, तासों सुकबि सुजान॥ ५४॥

मध्या धीरा का उदाहरण—कवित्त

पीतम के संगही उमंगि उड़ि जैबे को न एती अंग अंगन परंद पँखिया दई। कहै पदमाकर जे आरती उतारैं चौंर ढारैं श्रम हारैं पै न ऐसी सखियाँ दई॥ देखि दृग द्वैही सों न नेकहू अघैये इन ऐसे झुकाझुक में झपाक झखियाँ दई। कीजै कहा राम श्याम आनन बिलोकिबे को बिरचि बिरंचि ना अनंत आँखियाँ दई॥ ५५॥

पुनर्यथा-सवैया

भाल पै लाल गुलाल गुलाब सों गेरिगरे गजरा अलबेलो।
यों बनि बानिकसों पदमाकर आये जु खेलनफाग तौ खेलो॥
पै इक या छबि देखिबेके लिये मो बिनतीकै न झोरिनझेलो।
राउर रंग रँगी अँखियाँन में ए बलबीर अबीर न मेलो॥५६॥

दोहा

जो जिय में सो जीभ में, रमन रावरे ठौर।
आजु कालिह के नरन के, जीभ कछू जिय और॥५७॥

मध्या अधीरा का-लक्षण

करै अनादर कंत को, प्रकट जनावै कोप।
मध्य अधीरा नायिका, ताहि कहत करि चोप॥५८॥

उदाहरण-कबित्त

भूले से भ्रमे से काहि सोचत श्रमे से अकुलाने से बिकाने से ठगे-से ठीक ठाये हौ। कहै पदमाकर सुगोरे रंग बोरे दृग थोरे थोरे अजब कुसुंभी करि लाये हौ॥ आगे को धरत पर पीछे को परत पग भोरहीं ते आजु कछु औरै छबि छाये हौ। कहाँ आये तेरे धाम कौन काम घर जानि तहाँ जाउ कहाँ जहाँ मन धरि आये हौ॥५९॥

दोहा

दाहक नाहक नाह मोहिं, करिहौ कहा मनाय।
सुबस भये जा तीय के, ताके परसहु पाँय ॥ ६० ॥
धीर बचन कहिकै जो तिय, रोइ जनावै रोष।
मध्याऽऽधीरा धीर तिय, ताहि कहत निर्दोष ॥ ६१ ॥

मध्याधीराधीरा का उदाहरण–कवित्त

ए बलि कहौ हो किन का कहत कंत अरी रोष तज रोष कै कियो मैं का अचाहे को। कहै पदमाकर यहै तो दुख दूरि करौ दोष न कछू है तुम्हैं नेह निरबाहे को ॥ तोपै इत रोवति कहा हौ कहौ कौन आगे मेरेई जु आगे किये आँसुन उमाहे को। को हौं मैं तिहारी तू तो मेरी प्राणप्यारी आजु होती जो पियारी तब रोती कहौ काहेको ॥ ६२ ॥

दोहा

करि आदर तिय पीय को, देखि दृगन अलसानि।
सुमुख मोरि बरसन लगी, लै उसास अँसुवानि ॥ ६३ ॥
उर उदास रति ते रहै, अति आदर की खानि।
प्रौढ़ा धीरा नायिका, ताहि लीजिये जानि ॥ ६४ ॥

प्रौढ़ा धीरा का उदाहरण-कवित्त

जगर मगर दुति दूनी केलि-मंदिर में बगर बगर धूप अगर बगास्यो तू । कहै पदमाकर त्यों चंदते चटक-दार चुंबन में चारु मुख चंद अनुसास्यो तू ॥ नैनन में बैनन में सखी और सैनन में जहाँ देखो तहाँ प्रेमपूरण पसास्यो तू । छपत छपाये तऊ छल न छबीली अब उर लगिबे की बार हार ना उतास्यो तू ॥ ६५ ॥

दोहा

दरस दौरि पिय-पग परसि, आदर कियो अछेह ।
देह गेहपति जानिगो, निरखि चौगुनो नेह ॥ ६६ ॥
कछु तरजन ताड़न कछू, करि जु जनावै रोष ।
प्रौढ़ अधीरा नायिका, निरखि नाह को दोष ॥ ६७ ॥

प्रौढ़ा अधीरा का उदाहरण-कवित्त

रोस करि पकरि परोस ते लियाई घरै पीको प्राणप्यारी भुज-लतनि भरै भरै । कहै पदमाकर ए ऐसो दोस कीजै फेर सखिन समीप यों सुनावति खरै खरै ॥ प्यौ छल छपावै बात हँसि बहरावै तिय गदगद कंठ दृग आसुन झरै झरै । ऐसी धनधन्य धनी धन्य है सुऐसो जाहि फूल की छरीसों खरी हनति हरै हरै ॥ ६८ ॥

दोहा

नेह तरेरे दृग नहीं, राखत क्यों न अँगोट।
छैल छबीले पै कहा, करति कमल की चोट ॥ ६९ ॥
रति ते रूखी ह्वै जहाँ, डर जु दिखावै बाम।
प्रौढ़ा धीर अधीर तिय, ताहि कहत रसधाम ॥ ७० ॥

प्रौढ़ा धीरा अधीरा का उदाहरण-कवित्त

छबि छलकन भरी पीक पलकन त्योंही श्रम जल-कन अलकन अधिकाने च्वै। कहै पदमाकर सुजान रूपखानि तिया ताकि तकि रही ताहि आपुहि अजाने ह्वै॥ परसत गात मन भावन को भावती की गईं चढ़ि भौंहैं रहीं ऐसी उपमाने ह्वै। मानो अरबिंदन पै चंद को चढ़ाय दीनी मान कमनैत बिनु रोदा की कमानै द्वै ॥७१॥

दोहा

अनत रसे पति की सुरति, गहि गहि गहकि गुनाह।
दृग मरोरि मुख मोरि तिय, छुवन देति नहिं छाँह ॥ ७२ ॥
बरनत ज्येष्ठ कनिष्ठिका, जहँ ब्याही तिय दोइ।
पिय प्यारी जेठा कही, अति प्यारी लघु सोइ ॥ ७३ ॥

ज्येष्ठा कनिष्ठा का उदाहरण-कवित्त

दोऊ छबि छाजती छबीली मिलि आसन पै जिनहिं

बिलोकि रह्यो जात न जितै जितै । कहै पदमाकर पिछौ-हैं आइ आदर सों छलिया छबीली छैल बासर बितै बितै ॥ मूँदे तहाँ एक अलबेली के अनोखे दृग सुदृग मिचाउनी कै ख्यालन हितै हितै । नेसुक नवाइ ग्रीवा धन्य धन्य दूसरी को औचक अचूक मुख चूमत चितै चितै ॥ ७४ ॥

दोहा

जलबिहार पिय-प्यारि को, देखति क्यों न सहेलि ।
लै चुभकी ताजि एक तिय, करत एक सों केलि ॥ ७५ ॥

इति स्वकीया

परकीया लक्षण—दोहा

होइ जो तिय परपुरुषरत, परकीया सो बाम ।
ऊढ़ा प्रथम बखानहीं, बहुरि अनूढ़ा नाम ॥ ७६ ॥
जो ब्याही तिय और को, करत और सों प्रीति ।
ऊढ़ा ताको कहत हैं, हिये राखि रसरीति ॥ ७७ ॥

ऊढ़ा का उदाहरण—कवित्त

गोकुल के कुल के गली के गोप गाँउन के जौ लगि कछू को कछू भारत भनै नहीं । कहै पदमाकर परोस पिछवारन ते द्वारन ते दौरि गुन औगुन गनै नहीं ॥

तौलौं चलि चातुर सहेली आइ कोऊ कहूँ नीके कै निचोरै ताहि करत मनै नहीं। हौं तो श्याम रंग मैं चुराइ चित चोरा चोरी बोरत तौ बोस्यो पै निचोरत बनै नहीं॥ ७८॥

दोहा

चढ़ी हिंडोरे हरषि हिय, सजि तिय बसन सुरंग।
तन झूलत पिय-संग मैं, मन झूलत हरिसंग॥ ७९॥
अनब्याही तिय होत जहँ, सरस पुरुष रस-लीन।
ताहि अनूढ़ा कहत हैं, कवि पंडित परबीन॥ ८०॥

अनूढ़ा का उदाहरण-सवैया

जाब नहीं कुल गोकुल में अरु दूनी दुहूँ दिसि दीपति जागै।
त्यों पद्माकर जोई सुनै जहाँ सो तहँ आनँद मैं अनुरागै॥
ए दई ऐसो कछू कर ब्यौंत जु देखैं अदेखिन के दृग दागै।
जामैं निशंक ह्वै मोहन को भरिये निज अङ्क कलङ्क न लागै८१

दोहा

कुशल करै करतार तौ, सकल शङ्क सियराय।
यार काँरपन को जु पै, कहूँ ब्याहि लै जाय॥ ८२॥
इक परकीया के कहैं, षट् बिधि भेद बखानि।
प्रथमहिं गुप्ता जानिये, बहुरि विदग्धा मानि॥ ८३॥

ललित लक्षिता तीसरी, चौथी कुलटा होइ।
पँचई मुदिता षष्ठई, है अनुशयना सोइ॥ ८४॥
कही जु गुप्ता तीनि बिधि, सुकविनहूँ समुझाइ।
भूत सुरति संगोपना, प्रथम भेद यह आइ॥ ८५॥
वर्तमान रति गोपना, भेद दूसरो जान।
पुनि भविष्यरति गोपना, लच्छन नाम प्रमान॥ ८६॥

भूतसुरतिसंगोपना का उदाहरण–कवित्त

आली हौं गई ही आज भूलि बरसाने कहूँ तापै तू परै है पदमाकर तनैनी क्यों। ब्रजबनिता वै बनितान पै रची है फाग तिनमें मैं जु ऊधमिनि राधा मृगनैनी यों॥ घोरि डारी केसर सुबेसर बिलोरि डारी बोरि डारी चूनरि चुचात रँग नैनी ज्यों। मोहिं झकझोरि डारी कंचुकी मरोरि डारी तोरि डारी कसनि बिथोरि डारी बेनी त्यों॥ ८७॥

दोहा

छुटत कम्प नहिं रैनदिन, विदित बिदाराति काय।
अति शीतल हेमन्त की, अरी जरी यह बाय॥ ८८॥

वर्तमान सुरतिगोपना का उदाहरण–सवैया

ऊधम ऐसो मचो ब्रज में सब रंग तरंग उमंगनि सींचैं।
त्यों पदमाकर छज्जनि छातनि छ्वै छिति छाजती केसर कीचैं॥

दै पिचकी भजी भींजी तहाँ परे पीछे गुपालगुलालउलीचैं।
एकही संग इहाँ रपटे सखी ए भये ऊपर मैं भई नीचैं॥ ८६॥

दोहा

चढ़त घाट बिचल्यौ सुपग, भरीं आन इन अङ्क।
ताहि कहा तुम तक रहीं, यामें कौन कलङ्क॥ ६०॥

अथ भविष्य-सुरति गोपना-कवित्त

आजु तैं न जैहौं दधि बेचन दुहाई खाउँ भैया की कन्हैया उत ठाढ़ोई रहत है। कहै पदमाकर त्यों साँकरी गली है अति इत उत भाजिबे को दाँउ ना लगत है॥ दौरि दधि दान काज ऐसो अमनैक तहाँ आली बनमाली आइ बाहियाँ गहत है। भादौं सुदी चौथ को लख्योरी मृग अङ्क याते झूठहू कलङ्क मोहिं लागिबो चहत है॥६१॥

दोहा

कोऊ कछु अब काहुपै, मति लगाइये दोष।
होन लग्यो बृज-गलिन में, होरिहारिन को घोष॥ ६२॥
द्विविध विदग्धा जानिये, वचन-विदग्धा एक।
क्रिया-विदग्धा दूसरी, भाषत विदित विवेक॥ ६३॥
बचनन की रचनानि सों, जो साधै निज काज।
वचन-विदग्धा नायिका, ताहि कहत कविराज॥ ६४॥

वचन-विदग्धा का उदाहरण-सवैया

जबलौं घर को धनी आवै घरै तब लौं तौ कहूँ चित दैबो करो।
पद्माकर ये बछरा अपने बछरान के संग चरैबो करो ॥
अरु औरन के घर ते हमसों तुम दूनी दुहावनी लैबो करो।
नित साँझ सबेरे हमारी हहा हरि गैया भला दुहि जैबो करो॥९५॥

पुनर्यथा-सवैया

पिय पागे परोसिन के रस में बस में न कहूँ बस मेरे रहैं।
पद्माकर पाहुनी सी ननँदी निशि नींद तजे अवसेरे रहैं॥
दुख और मैं कासों कहौं को सुनै ब्रजकी बनिता दृग फेरे रहैं।
न सखी घर साँझ सबेरे रहैं घनश्याम घरी घरी घेरे रहैं॥९६॥

दोहा

कल करील की कुञ्ज में, रह्यो अरुझि मों चीर।
ये बलबीर अहीर के, हरत क्यों न यह पीर॥ ९७॥
कनक-लता श्रीफल फरी, रही बिजन बन फूलि।
ताहि तजत क्यों बावरे, अरे मधुप मति भूलि॥ ९८॥
जो तिय साधै काज निज, करै क्रिया अनुमानि।
क्रिया-विदग्धा नायिका, ताहि लीजिये जानि॥ ९९॥

क्रिया-विदग्धा का उदाहरण-कवित्त

बंजुल निकुंजन मैं मंजुल महल-मध्य मोतिन की झालरैं

किनारिन में कुरबिन्द। आइगे तहाँई पदमाकर पियारे
कान्ह आनि जुरि गये त्यों चबाइन के नीके बृन्द॥
बैठी फिरि पूतरी अनूतरी फिरंग कैसी पीठि दै प्रबीनी
दृग दृगन मिलै अनन्द। आछे अवलोकि रही आए
रसमंदिर मैं इंदीबर-सुन्दर गुबिन्द को मुखारबिन्द॥ १००॥

दोहा

करि गुलाल सों धुंधुरित, सकल ग्वालिनी ग्वाल।
रोरी मीड़न के सुमिस, गोरी गह्यो गुपाल॥१०१॥
जा तिय को जिय आन रत, जानि कहै तिय आन।
ताहि लक्षिता कहत हैं, जे कबि कलानिधान॥१०२॥

लक्षिता का उदाहरण–सवैया

ब्रजमण्डली देखि सबै पदमाकर ह्वै रही यों चुप चापरी है।
मनमोहन की बहियाँ मैं छुटी उपटी यह बेनी दिखा परी है॥
मकराकृत कुण्डल की झलकैं इतहू भुज-मूल पै छापरी है।
इनकी उनसों जो लगीं अँखियाँ कहिये तो हमैं कछू कापरी है॥

पुनर्यथा–सवैया

बीतिबैही सुतौबीतिचुकी अब आँजतीहौकिहिकाज लुकंजन।
त्यों पदमाकर हाल कहै मतिलालकरौ दृग ख्यालके खंजन॥
देखत कंचुकी केंचुकी के बिच होत छिपाये कहा कुचकंजन।

तोहिं कलंक लगाइबेको लग्यो कान्हहिंके अधरान में अंजन॥

दोहा

घर न कंत हेमन्त ऋतु, राति जागती जात ।
दबकि द्योस सोवन लगी, भली नहीं यह बात ॥१०५॥
है बहुलोगन सों जु तिय, राखति रति की चाह ।
कुलटा ताहि बखानहीं, जे कबीन के नाह ॥१०६॥

कुलटा का उदाहरण-सवैया

यों अलबेली अकेली कहूँ सुकुमारि शृँगारन कै चलै कै चलै ।
त्यों पदमाकर एकन के उर में रसबीजनि ब्वै चलै ब्वै चलै ॥
एकन सों बतराइ कछू छिन एकन को मन लै चलै लै चलै ।
एकन को तकि घूँघुट में मुखमोरि कनैखिन दै चलै दै चलै ॥

दोहा

बिपिन बाग बीथी जहाँ, प्रबल पुरुष मय ग्राम ।
काम कलित बलि काम को, तहाँ तनिक बिश्राम ॥१०८॥
सुनत लखत चित चाह की, बात घात अभिराम ।
मुदित होइ जो नायिका, ताको मुदिता नाम ॥१०९॥

मुदिता का उदाहरण-कबित्त

बृन्दाबन वीथिन बिलोकन गई ही जहाँ राजत रसाल बन ताल रु तमाल को । कहै पदमाकर निहारत बन्योई

तहाँ नेहिन को नेह प्रेम अद्भुत ख्याल को ॥ दूनो दूनो बाढ़त सुपूनो की निशा में अहो आनँद अनूप रूप काहू ब्रज-बाल को। कुंज तैं कहूँ को सुनि कंत को गमन लखि आगमन तैसो मनहरन गोपाल को ॥ ११० ॥

दोहा

परखि प्रेमबश परपुरुष, हरषि रही मन मैन।
तब लगि झुकि आई घटा, अधिक अँधेरी रैन ॥१११॥
कही सुअनुशयना त्रिबिध, प्रथम भेद यह जानि।
बर्त्तमान संकेत के, बिघटन ते सुख हानि ॥११२॥

पहली अनुशयना का उदाहरण-कवित्त

सूने घर परम परोसी के सुजान तिया आई सुनि सुनि कै परोसिन मनो अराति। कहै पदमाकर सुकंचनलता सी लचि ऊँची लेति साँस यों हिये में त्यों नहीं समाति ॥ जाइ आइ जहाँ तहाँ बैठि उठि जैसे तैसे दिन तौ बितायो बधू बीतति है कैसे राति। ताप सरसानी देखैं अति अकुलानी जऊ पति उर आनी तऊ सेज में बिलानी जाति ॥ ११३ ॥

दोहा

सौति सँजोग न रोग कछु, नाहिं बियोग बलवंत।
ननँद होति क्यों दूबरी, लागत ललित बसंत ॥११४॥

होनहार संकेत को, धरि अभाव उर माहिं ।
दुखित होत जो दूबरी, कह अनुशयना ताहि ॥ ११५ ॥

दूसरी अनुशयना नायिका का उदाहरण-कवित्त

चालौ सुनि चंदमुखी चित में सुचैन करि तित बन बागन घनेरे अलि घूमि रहे । कहै पदमाकर मयूर मंजु नाचत हैं चाइ सों चकोरिन चकोर चूमि चूमि रहे ॥ कदम अनार आम अगर अशोक थोक लतन समेत लोने लोने लगि भूमि रहे । फूलि रहे फलि रहे फैलि रहे फबि रहे झपि रहे झूलि रहे झुकि रहे झूमि रहे ॥ ११६ ॥

दोहा

निघटत फूल गुलाब के, धरति क्यों न धन धीर ।
अमल कमल फूलन लगे, बिमल सरोवर-नीर ॥ ११७ ॥
जो तिय सुरत-सँकेत को, रमन-गमन अनुमान ।
व्याकुल होति सु तीसरी, अनुशयना पहिंचान ॥ ११८ ॥

तीसरी अनुशयना का उदाहरण-सवैया

चारिहूँ ओर ते पौन झकोर झकोरनि घोर घटा घहरानी ।
ऐसे समै पदमाकर काहु की आवत पीत पटी फहरानी ॥
गुंज की माल गोपाल गरे ब्रजबाल बिलोकि थकी थहरानी ।
नीरज ते कढ़ि नीर-नदी छबि छीजत छीरज पै छहरानी ११९॥

दोहा

कल करील की कुंज सों, उठत अतर की बोय ।
भयो तोहिं भाभी कहा, उठी अचानक रोय ॥ १२० ॥

परकीया निरूपण गणिका लक्षण-दोहा

करै और सों रति रमनि, इक धनही के हेत ।
गणिका ताहि बखानहीं, जे कवि सुमति-निकेत ॥ १२१ ॥

गणिका का उदाहरण-कवित्त

आरत सों आरत सम्हारत न सीस पट गजब गुजारत गरीबन की धार पर । कहै पदमाकर सुगन्ध सरसावै सुचि बिथुरि बिराजैं बार हीरन के हार पर ॥ छाजत छबीली छिति छहरि छरा की छोर भोर उठि आई केलि मंदिर के द्वारपर । एक पग भीतर सु एक देहरी पै धरे एक कर-कंज एक कर है किंवार पर ॥ १२२ ॥

दोहा

तनसुबरन सुबरन बसन, सुबरन उकति उछाह ।
धनि सुबरनमय ह्वै रही, सुबरन ही की चाह ॥ १२३ ॥
प्रथम कही जे नायिका, ते सब त्रिबिध बिचारि ।
अन्यसुरति दुखिता सुइक, मानवती पुनि नारि ॥ १२४ ॥

फिरि बक्रोकति गर्विता, यहि बिधि भिन्न प्रकार।
तिनके लक्षण लक्ष्य सब, भाषत मति अनुसार॥ १२५॥
प्रीतम प्रीति प्रतीति जो, और तिया तन पाइ।
दुखित होइ सो जानिये, अन्यं सुरत दुखिताइ॥ १२६॥

अन्य सुरति दुःखिता का उदाहरण-कबित्त

बोलति न काहे एरी? पूछे बिन बोलौं कहा, पूछति हौं कहा भई स्वेद अधिकाई है?। कहै पदमाकर सुमारग के गये आये, साँची कहु मोसों आज कहाँ गई आई है?॥ गई आई हौं तो पास साँवरे के, कौन काज? तेरे लिये ल्यावन सु तेरियै दुहाई है। काहे ते न ल्याई फिरि मोहन बिहारी जू को? कैसे वाहि ल्याऊँ? जैसे वाको मन ल्याई है॥ १२७॥

पुनर्यथा-कबित्त

धोइ गई केसर कपोल कुच गोलन की पीक लीक अधर अमोलन लगाई है। कहै पदमाकर त्यों नैननहूं निरंजन भे तजत न कंप देह पुलकनि छाई है॥ बाद मति ठानै झूठ बादिनि भई री अब दूतिपनौ छोड़ धूतपन मैं सुहाई है। आई तोहिं पीर न पराई महा-पापिनि तूं पांपी लौं गई न कहूँ बापी न्हाइ आई है॥ १२८॥

दोहा

खान पान शय्या शयन, जासु भरोसे आइ ।
करै सो छल अलि आपु सों, तासों कहा बसाइ ॥ १२९ ॥
पिय सों करै जो मान तिय, वहै मानिनी जान ।
ताको कहत उदाहरण, दोहा कबित बखान ॥ १३० ॥

मानिनी का उदाहरण—सवैया

मोहिं तुम्हैं न उन्हैं न इन्हैं मनभावती को सु मनावन ऐहै ।
त्यों पदमाकर मोरन को सुनि सोर कहो नहिं को अकुलैहै ॥
धीर धरो किन मेरे गुबिंद घरी इक में जो घटा घहरैहै ।
आपुहिं ते तजि मान तिया हरुवै हरुवै गरुवै लगि जैहै १३१ ॥

दोहा

और तजे तौरहु तजे, भूषण अमल अमोल ।
तजन कह्यो न सुहाग में, अंजन तिलक तमोल ॥ १३२ ॥
वह वक्रोकति गर्विता, द्विविध कहत रसधाम ।
प्रेमगर्विता एक पुनि, रूपगर्विता नाम ॥ १३३ ॥
करै प्रेम को गर्व जो, प्रेमगर्विता नारि ।
रूपगर्विता होत वह, रूप गर्व को धारि ॥ १३४ ॥

प्रेमगर्विता का उदाहरण—सवैया

मो बिनु माइ न खाइ कछू पदमाकर त्यों भई भाभी अचेत है ।

बीरन आइ लिवाइबे को तिनकी मृदुबानि हूँ मानि न लेत है॥
प्रीतम को समुझावति क्यों नहीं ये सखी तू जु पै राखति हेत है।
और तो मोहिं सबै सुखरी दुखरी यहै माइके जान न देतहै १३५

पुनर्यथा-सवैया

हौं अलि आजु बड़े तड़के भरिकै घट गोरस को पगधारो।
त्यों कबको धौं खर्यारी हुतो पदमाकर मो हित मोहिनीवारो॥
साँकरी खोर मैं काँकरी की करि चोट चलौ फिरि लौटि निहारो।
ता छिन ते इन आँखिन तें न कढ़्यो वह माखन चाखनहारो॥

दोहा

कछु न खाति अनखाति अति, बिरह बरी लिललाति।
अरी सयानी सौति की, बिपति कही नहिं जाति १३७

रूपगर्विता का उदाहरण-सवैया

है नहिं माइको मेरी भटू यह सासुरो है सबकी सहिबो करौ।
त्यों पदमाकर पाइ सुहाग सदा सखियानहुँ को चहिबो करौ॥
नेह-भरी बतियाँ कहिकै नित सौतिन की छतियाँ दहिबो करौ।
चन्द्रमुखी कहे होती दुखी तौ न कोऊ कहैगो सुखीरहिबोकरौ॥

दोहा

निरखि नयन मृगमीन सों, उठी सबै मिलि भाखि।
परघर जाइ गमाइ रिस, हौं आई रस राखि ॥१३९॥

दश-नायिका-वर्णन-दोहा

प्रोषितपतिका खण्डिता, कलहन्तरिता होय।
विप्रलब्ध उत्कण्ठिता, बासकसज्जा जोय॥ १४०॥
स्वाधिन पतिकाहू कहत, अभिसारिका बखानि।
प्रगट प्रवत्स्यत् प्रेयसी, आगतपतिका जानि॥ १४१॥
ये सब दस बिधि नायिका, कबिन कही निरधारि।
तिनके लक्षण लक्ष्य सब, क्रम ते कहत बिचारि॥ १४२॥
पिय जाको परदेश में, प्रोषित पतिका सोइ।
उदित उदीपन ते जु तन, सन्तापित अति होय॥ १४३॥

मुग्धा प्रोषितपतिका का उदाहरण-कवित्त

माँगि सिख नौ दिन की न्योतेगे गोबिंद तिय सौ दिन समान छिन मानि अकुलावै है। कहै पदमाकर छपाकर छपाकर तैं बदन छपाकर मलीन मुरझावै है॥ बूझत जु कोऊ कै कहा री भयो तोहिं तब औरही को और कछु बेदन बतावै है। आँसू सकै मोचि न सकोच बस आलिन मैं उलही बिरह-बेलि दुलही दुरावै है॥ १४४॥

पुनर्यथा-सवैया

बालम के बिछुरे ब्रजबाल को हाल कह्यो न परै कछु ह्याहीं।

च्वै-सी गई दिनती नहीमैं तब औधिलौंक्यों बचिहैछबिछाँहीं॥
तीर सों धीर समीर लगै पदमाकर बूझिहूँ बोलत नाहीं।
चन्द्र उदौ लखि चन्द्रमुखी मुख मन्दहै पैठति मन्दिरमाहीं॥

दोहा

भरति उसासन दृग भरति, करति गेह के काज।
पल-पल पर पीरी परति, परी लाज के राज॥ १४६॥

मध्या प्रोषितपतिका-सवैया

अब हैहै कहा अरबिन्दसों आनन इन्दुके हाय हवाले पर्‍यो।
पदमाकर भाषै न भाषै बनै जिय ऐसे कछूक कसाले पर्‍यो॥
इकमीनबिचारोबिध्योबनसी पुनि जालके जाइदुभालै पर्‍यो।
मनतो मनमोहनके सँग गो तन लाज मनोजके पाले पर्‍यो॥

पुनर्यथा-कवित्त

ऊबत हौ डूबत हौ डगत हौ डोलत हौ बोलत न काहे प्रीति रीतिन रितै चलै। कहै पदमाकर त्यों उससि उसासनि सों आँसू वै अपार आइ आँखिन इतै चलै॥ औधि ही के आगम लौं रहत बनै तो रहो बीचही क्यों बैरी बंध बेदनि चितै चलै। ये रे मेरे प्रान कान्ह प्यारे के चलाचल मैं तब तौ चले न अब चाहत कितै चलै॥ १४८॥

दोहा

रमन आगमन अवधि लौं, क्यों जिवाइयतु याहि ।
रहत कण्ठगत आधि ये, आधी निकरति आहि ॥ १४९ ॥

प्रौढ़ा प्रोषितपतिका-कवित्त

लागत बसंत के सुपाती लिखी प्रीतम को प्यारी परबीन है हमारी सुधि आनवी । कहै पदमाकर इहाँ को यों हवाल बिरहानल की ज्वाल सों दवानल ते मानवी ॥ ऊब की उसासन को पूरो परगास सो तो निपट उसास पौनहूँ ते पहिंचानवी । नैनन को ढंग सों अनंग पिचकारिन ते गातन को रंग पीरे पातन ते जानवी ॥ १५० ॥

दोहा

बरसत मेह अछेह अति, अवनि रही जल पूरि ।
पथिक तऊ तुव गेह ते, उठत भभूरन धूरि ॥१५१॥

परकीया प्रोषितपतिका-सवैया

न्यौते गये नँदलाल कहूँ सुनि बाल बिहाल बियोग की घेरी ।
ऊतरु कौनहुँ के पदमाकर दै फिरि कुंज गलीन में फेरी ॥
पावै न चैन सुमैन के बाननि होत छिनै छिन छीन घनेरी ।
बूझै जु कंत कहै तो यहै तिय पीउ पिराति है पाँसुरी मेरी १५२

दोहा

व्यथित वियोगिनि एक तू, यों दुख सहत न कोइ ।
ननँद तिहारे कंत को, पंथ बिलोकति जोइ ॥ १५३॥

गणिका प्रोषितपतिका—सवैया

बीर अबीर अभीरन को दुख भाषे बनै न बनै बिनु भाखैं ।
त्यों पदमाकर मोहन मीत के पाये सँदेसन आठयें पाखैं ॥
आये न आप न पाती लिखी मन की मनहीं में रहीं अभिलाखैं ।
सीत के अंत बसंत लग्यो अब कौनके आगे बसंत लै राखैं १५४

दोहा

पग अंकुश कर में कमल, करि जु दियो करतार ।
सुसखि सुफल है है तबहिं, जब ऐहैं घर यार ॥ १५५ ॥

खंडिता का लक्षण

अनत-रमे रति चिह्न लखि, पीतम के सुभ गात ।
दुखित होइ सो खण्डिता, बरनत मति-अवदात ॥१५६॥

मुग्धा खण्डिता का उदाहरण—कवित्त

बैठी परजंक पै नवेली निरसंक जहाँ जागी जोति जाहिर जवाहिर की जागै ज्यों । कहै पदमाकर कहूँ तैं नँद नंदन हूँ औचकहीं आइ अलसाय प्रेम पागै यों ॥ झप-कौहैं पलनि पिया के पीक-लीक लखि झुकि झहराइहू

न नेकु अनुरागै त्यों। वैसही मयंकमुखी लागत न अंक हुती देखि कै कलंक अब एरी अंक लागै क्यों ॥ ५७ ॥

दोहा

बिनु गुन माल गोपाल उर, क्यों पहिरी परभात।
चकित चित्त चुप ह्वैरही, निरखि अनोखी बात ॥ ५८ ॥

मध्या खण्डिता का उदाहरण-कवित्त

ख्याल मन-भाये कहूँ करिकै गोपाल घरै आये अति आलस मढ़ेई बड़े तरके। कहै पदमाकर निहारी गजगामिनि के गजमुकतान के हिये पै हार दरके ॥ येते पै न आनन ह्वै निकसे बधू के बैन अधर उराहनै सु दीबै काज फरके। कन्धन ते कंचुकी भुजानि ते सु बाजूबंद पौंचन ते कङ्कन हरे ही हरे सरके ॥ ५९ ॥

दोहा

रसिकराज आलस भरे, खरे दृगन की ओर।
कछुक कोप आदर कछू, करत भावती भोर ॥ ६० ॥

प्रौढ़ा खंडिता का उदाहरण–कवित्त

खाये पान बीरी सी बिलोचन बिराजैं आज अंजन अँजाये अधअधरा अमी के हैं। कहै पदमाकर गुबिन्द देखौ

आरसी लै अमल कपोलन पै किन पान पीके हैं ॥ ऐसो अवलोकबेई लायक मुखारबिन्द जाहि लखि चंद अरबिंद होत फीके हैं । प्रेमरस पागि जागि आये अनुराग यातें अब हम जानी कै हमारे भाग नीके हैं ॥ ६१ ॥

दोहा

ताकि रहाति छिन और तिय, लेत और को नाउँ ।
ये बलि ऐसे बलम की, बिबिध भाँति बलिजाउँ ॥६२॥

परकीया खंडिता का उदाहरण-कवित्त

एहो ब्रजठाकुर ठगोरी डारि कीन्ही तब बौरी बिनु काज अब ताकी लाज मरिये । कहै पदमाकर इते पै ये रँगीलो रूप देखे बिनु देखे कहो कैसे धीर धरिये ॥ अंकहू न लागी पै कलंकिनी कहाई यातें अरज हमारी एक यही अनुसरिये । सांझ कै सबेरे दिन दसयें दिवारी फाग कबहूँ भलै जु भलै आइबो तौ करिये ॥ ६३ ॥

पुनर्यथा-सवैया

सीख न मानी सयानी सखीनकी यों पद्माकर कीय मनेकी।
प्रीति करी तुमसों बजिकै सुबिसारि करी तुम प्रीति घने की ॥
रावरी रीति लखी इमि साँवरे होति है सम्पति ज्यों सपने की।
साँचहू ताको न होत भलो जो न मानत है कही चारि जने की॥

पुनर्यथा-सवैया

साहसहूँ न कहूँ रुख आपनो भाखै बनै न बनै बिनु भाखैं।
त्यों पदमाकर यों मग में रँग देखति हौं कबकी रुख राखैं॥
या बिधि साँवरे रावरे की न मिलै मरजी न मजा न मजाखैं।
बोलनि बानि बिलोकनि प्रीति की वो मन वै न रहीं अब आँखैं॥

दोहा

गन्यो न गोकुल कुल घनो, रमन रावरे हेत।
सु तुम चोरिचित चोर लौं, भोर दिखाई देत॥ ६६ ॥

गणिकाखंडिता-कवित्त

गोश पेंच कुण्डल कलंगी शिरपेंच पेंच पेंचन ते खैंचि बिनु बेंचे बारि आये हौ। कहै पदमाकर कहाँ वा मूरि जीवन की जाकी पगधूरि पगरी पै पारि आये हौ॥ बेगुन के सार ऐसे बेगुन के हार अब मेरी मनुहारि कै वृथाही धरि आये हौ। पाँसासार खेली कित कौन मनुहारिन सों जीति मनुहारिन मनुहारि हरि आये हौ॥ ६७ ॥

दोहा

बड़े साह लखि हम करी, तुमसों प्रीति बिचारि।
कहा जानि तुम करत हौ, हमैं और की नारि॥ ६८ ॥

कलहांतरिता का लक्षण-दोहा

प्रथम कछू अपमान करि, पिय को फिरि पछिताय ।
कलहंतरिता नायिका, ताहि कहत कबिराय ॥ ६९ ॥

मुग्धा कलहांतरिता का उदाहरण-सवैया

बारी बहू मुरझानी बिलोकि जिठानी करै उपचार किती को ।
त्यों पदमाकर ऊँची उसास लखै मुख सास को ह्वै रह्यो फीको ॥
एकै कहै इन्हैं डीठि लगी पर भेद न कोऊ लहै दुलही को ।
ह्वैकैअजानजोकान्हसोंकीन्होंगुमानभयोवहैज्यानहीजीको७०

दोहा

प्रथम केलितिय कलह की, कथा न कछु कहि जाय ।
अतन ताप तनही सहै, मनहीं मन अकुलाय ॥ ७१ ॥

मध्या कलहांतरिता-कबित्त

झालरनदार झुकि झूमति बितान बिछे गहब गलीचा अरु गुलगुली गिल में । जगर मगर पदमाकर सुदीपन की फैली जगाज्योति केलि मंदिर अखिल में ॥ आवत तहाँई मनमोहन को लाज मैन जैसी कछू करी तैसी दिलही की दिल में । हेरि हरि बिलमें न लीन्हों हिलमिल में रही हौं हाइ मिल में प्रभाकी झिलमिल में ॥७२॥

दोहा

ल्यावो पियहि मनाइ यह, कह्यो चहति रहि जाति।
कलह कहर की लहर में, परी तिया पछिताति॥ ७३॥

प्रौढ़ा कलहांतरिता का उदाहरण-कबित्त

ये अलि इकंत पाइ पाइँन परे हे आइ हौं न तब हेरी या गुमान बजमारे सों। कहै पदमाकर वै रूठिगे सु ऐसी भई नैनन ते नींद गई हाइ के दवारे सों॥ रैन दिन चैन है न मैन है हमारे बस ऐन मुख सूखत उसास अनुसारे सों। प्रानन की हानि सी दिखान सी लगी है हाइ कौन गुन जानि मान कीन्हों प्रानप्यारे सों॥ ७४॥

दोहा

घन घमण्ड पावस निसा, सरवर लग्यो सुखान।
परखि प्रानपति जानिगो, तज्यो मानिनी मान॥ ७५॥

परकीया कलहांतरिता का उदाहरण-सवैया

कासों कहा मैं कहौं दुख यों मुख सूखतई है पियूष पिये तैं।
त्यों पदमाकर यों उपहास को त्रास मिटै न उसास लिये तैं॥
व्यापी बिथा यह जानि परी मनमोहन मीत सों मान किये तैं।
भूलिहू चूक परी जो कहूँ तिहि चूक की हूक न जात हिये तैं॥

दोहा

मोहन मीत सभीत गो, लखि तेरो सनमान ।
अब सु दगा दै तू चल्यो, अरे मुदई मान ॥ ७७ ॥

गणिका कलहांतरिता का उदाहरण-सवैया

हीर के हार हजारन को धन देत हुते सुख से सरसाने।
हौं न लियो पदमाकर त्यों अरु बोली न बोल सुधारस साने ॥
वे चलि ह्यांते गये अनतैं अब का हम आपनी बात बखाने।
आपने हाथ सों आपने पाइँ पै पाथर पारि पस्यो पछिताने ॥

दोहा

कहा देखि दुखि दाहिये, कुमति कछू जो कीनि ।
छैल छगूनी छोर तैं, छला न लीनो छीनि ॥ ७९ ॥

बिप्रलब्धा का लक्षण-दोहा

पिय बिहीन संकेत लखि, जो तिय अति अकुलाय ।
ताहि बिप्रलब्धा कहत, सुकबिन के समुदाय ॥ ८० ॥

मुग्धा विप्रलब्धा का उदाहरण-कवित्त

खेल को बहानो कै सहेलिन के संग चलि आई केलिमन्दिर लौं सुन्दर मजेज पर। कहै पदमाकर तहां न पिय पायो तिय त्योंहीं तन तै रही तमीपति के तेजपर ॥ बादत बिथा की कथा काहू सों कछू न कही लचकि लतालौं

गई लाजही की लेजपर । बीरी परी बिथरि कपोल पर पीरी परी धीरी परी धाय गिरी सीरी परी सेजपर ॥ ८१ ॥

दोहा

नवल गूजरी ऊजरी, निरखि ऊजरी सेज ।
उदित उजेरी रैनि को, कहि न सकत कछु तेज ॥ ८२ ॥

मध्या विप्रलब्धा का उदाहरण-कवित्त

पूर अँसुवानको रह्यो जो पूरि आँखिन में चाहत बह्यो पै बदि बाहिरै बहै नहीं । कहै पदमाकर सुधोखेहू तमाल तरु चाहत गह्यो पै है गहब गहै नहीं ॥ काँपि कदली लौं या अलीको अवलम्ब कहूँ चाहत लह्यो पै लोक लाजनि लहै नहीं । कन्त न मिले को दुखदारुन अनन्त पाय चाहति कह्यो पै कछू काहू सों कहै नहीं ॥ ८३ ॥

दोहा

सजन बिहीनी सेज पर, परे पेखि मुकतान ।
तबहिं तिया को तन भयो, मनहुँ अधपक्यो पान ॥ ८४ ॥

प्रौढ़ा विप्रलब्धा का उदाहरण-कवित्त

आई फाग खेलन गुविन्द सों अनंद भरी जाको लसै लंक मंजु मखतूल ताग सों । कहै पदमाकर तहाँ न ताहि मिल्यो श्याम छिन में छबीली को अनंग दह्यो दाग सों ॥

कौन करै होरी कोऊ गोरी समुझावै कहा नागरी को राग लग्यो विषसों बिराग सों । कहर सी केसर कपूर लग्यो काल सम गाज सों गुलाब लग्यो अरगजा आगसों ॥८५॥

दोहा

निरखि सेज रँग रँग भरी, लगी उसासैं लैन ।
कछु न चैन चितमें रह्यो, चढ़त चाँदनी रैन ॥ ८६ ॥

परकीया बिप्रलब्धा का उदाहरण-कबित्त

गुंजन सुगुंज लग्यो तैसो पौन पुंज लग्यो दोस मनि कुंज लग्यो गुंजन सों गाजि कै । कहै पदमाकर न खोज लग्यो ख्यालन को घालन मनोज लग्यो बीर तीर सजि कै ॥ सूखन सुबिंब लग्यो दूखन कदंब लग्यो मोहिं न बिलंब-लग्यो आई गेह तजि कै । मींजन मयंक लग्यो मीतहूँ न अंक लग्यो पंकलग्यो पायँन कलंक लग्यो बाजि कै ॥ ८७ ॥

दोहा

लखि सँकेत सूनो सुमुखि, बोली बिकल सभीति ।
कहौ कहा किहि सुख लह्यो, करि कुमीत सों प्रीति ॥ ८८ ॥

गणिका बिप्रलब्धा का उदाहरण-कबित्त

निशि अँधियारी तऊ प्यारी परबीन चढ़ि मान के मनोरथ के रथ पै चली गई । कहै पदमाकर तहाँ न

मन मोहन सों भेंट भई सटकि सहेत तैं अली गई ॥ चंदन सों चाँदनी सों चंद सों चमेलिन सों और बनबेलिन के दलनि दली गई । आई हुती छैल के छलै को छल छंदनि सों छैल तो छल्यो न आपु छैल सों छली गई ॥ ८९ ॥

दोहा

इत न मैन मूरति मिल्यो, परत कौन बिधि चैन ।
धन की भई न धाम की, गई ऐसही रैन ॥ ९० ॥

उत्कंठिता का लक्षण-दोहा

लहि सँकेत सोचै जु तिय, रमन आगमन हेत ।
ताही को उत्कंठिता, बरनत सुकबि सचेत ॥ ९१ ॥

उत्कंठिता का उदाहरण-सवैया

सोचै अनागम कारन कंत को मोचै उसासन आँसहू मोचै ।
मोचै न हेरि हरा हिय को पदमाकर मोच सकै न सँकोचै ॥
कोचै तकै इह चाँदनी ते अलि याहि निबाहि बिथा अवलोचै ।
लोचै परी सियरीपरजंक पै बीती घरी न खरी खरी सोचै ॥९२॥

दोहा

अरे सुमोमन बावरे, इतहि कहा अकुलात ।
अटकि अटा कित पति रह्यो, तितहि क्यों न चलिजात ॥९३॥

मध्या उत्का-सवैया

आये न कंत कहाँधौं रहे भयो भोर चहै निसिजाति सिरानी ।
यों पदमाकर बूझयो चहै पर बूझि सकै न सकोच की सानी ॥
धारि सकै न उतारि सकै गुनि हारि सिंगार हिये हहरानी ।
सूल से फूल लगे फर पै तिय फूलछरी सी परी मुरझानी ॥ ९४ ॥

दोहा

अनत रहे रमि कंत क्यों, यह बूझन के चाइ ।
सुमुखि सखी के श्रवन सों, मुख लगाइ रहिजाइ ॥ ९५ ॥

प्रौढ़ा उत्का का उदाहरण -कवित्त

सौतिन के त्रास तैं रहे धौं और बास तैं न आये कौन गास तैं प्यौ करु तौ तलास तैं । कहै पदमाकर सुत्रास तैं जवास तैं सु फूलन की रास तैं जगी है महा सास तैं ॥ चाँदनी बिकास तैं सुधाकर प्रकास तैं न राखत हुलास तैं न लाउ खसखास तैं । पौन करु आस तैं न जाउ उठि बास तैं अरी गुलाबपास तैं उठाउ आस पास तैं ॥ ९६ ॥

दोहा

कियहुँ न मैं कबहूँ कलह, गह्यों न कबहूँ मौन ।
पिय अबलौं आये न कत, भयो सु कारन कौन ॥ ९७ ॥

परकीयाउत्का का उदाहरण कवित्त

फागुन में कागुन विचारि ना दिखाई देत एती बेर लाई उन कानन में नाइ आव । कहै पदमाकर हितू जो है हमारी तौ हमारे कहे बीर वहि धाम लगि धाइ आव ॥ जोरि जो धरी है बेदरद दुआरे होरी मेरी बिरहागि की उलूकनि लौ लाइ आव । एरी इन नयनन के नीर में अबीर घोरि बोरि पिचकारी चितचोर पै चलाइ आव ॥ ९८ ॥

दोहा

तजत गेह अरु गेहपति, मोहिं न लगी बिलंब ।
हरि बिलंब लाई सुकत, क्यों नाहिं कहत कदंब ॥ ९९ ॥

गणिका उत्का का उदाहरण-सवैया

काहू कियो धौं कहै बस भावतो काहू कहूँ धौं कछू छल छायो ।
त्यों पदमाकर तान तरंगनि काहू किधौं रचि रंग रिझायो ॥
जानि परै न कछू गति आज की जाहित एतो बिलंब लगायो ।
मोहन मोमन मोहिबेको किधौं मो मन को मनिहार न पायो ॥

दोहा

कहत सखिन सों ससिमुखी, सजि सजि सकल सिंगार ।
मो मन अटक्यो हार में, अटकि रह्यो कित यार ॥१०१॥

बास-कसज्जा लक्षण-दोहा

साजहि सेज सिंगार तिय, पिय-मिलाप के काज ।
बासकसज्जा नायिका, ताहि कहत कबिराज ॥ १०२ ॥

मुग्धा बासकसज्जा का उदाहरण—कबित्त

सोरह सिंगार कै नवेली को सहेलिन हूँ कीन्हीं केलि-मंदिर में कलपित केरै हैं । कहै पदमाकर सुपास ही गुला-बपास खासे खसखास खुसबोइन की ढेरै हैं ॥ त्यों गुलाब नीरन सों हीरन के हौज भरे दंपति मिलाप हित आरती उजेरै हैं । चोखी चाँदनी में बिछी चौसर चमेलिन के चंदन की चौकी चारु चाँदी के चँगेरै हैं ॥ १०३ ॥

दोहा

साजि सैन भूषन बसन, सबकी नजर बचाइ ।
रही पौढ़ि मिस नींद के, दृग दुवार से लाइ ॥ १०४ ॥

मध्या बासकसज्जा का उदाहरण—कबित्त

सजि ब्रजबाल नंदलाल सों मिलै के लिये लगनि लगालगि मैं लमकि लमकि उठै । कहै पदमाकर चि-राग ऐसी चाँदनी सी चारों ओर चौकानि में चमकि चमकि उठै ॥ झुकि झुकि झूमि झूमि झिलि झिलि झेलि झेलि झरहरी झाँपन मैं झमकि झमकि उठै । दर दर देखौ

दरी कानन मैं दौरि दौरि दुरि दुरि दामिनी सी दमकि दमकि उठै ॥ १०५ ॥

दोहा

शुभ सिंगार साजे सबै, दै सखीन को पीठ।
चली अधखुले द्वार लौं, खुली अधखुली डीठ ॥ १०६ ॥

प्रौढ़ा-वासकसज्जा का उदाहरण—कवित्त

चहचही चहल चहूँघा चारु चंदन की चन्द्रक चुनीन चौक चौकन चढ़ी है आब। कहै पदमाकर फराकत फरस बंद फहरि फुहारन की फरस फबी है फाब॥ मोद मदमाती मनमोहन मिलै के काज साजि मनि मंदिर मनोज कैसी महताब। गोल गुलगादी गुल गिलमैं गुलाब गुल गजक गुलाबी गुल गिन्दुक गुले गुलाब ॥ १०७ ॥

दोहा

यों सिंगार साजे सुतिय, को करि सकत बखान।
रह्यो न कछु उपमान को, तिहूँलोक मैं आन ॥ १०८ ॥

परकीयावासकसज्जा का उदाहरण—कवित्त

सोसनी दुकूलनि दुराये रूप रोसनी है बूटेदार घाँघरी की घूमनि घुमाइ कै। कहै पदमाकर त्यों उन्नत उरोजन पै तंग आँगिया है तनी तनिन तनाइ कै॥ छज्जन

की छाँह छकि छैल के मिलै के हेतु छाजती छपा मैं यों छबीली छबिछाइ कै। ह्वै रही खरी है छरी फूल की छरी सी छपि साँकरी गली मैं फूल पाँखुरी बिछाइ कै ॥ १०९ ॥

दोहा

फूल बिनन मिस कुंज में, पहिरि गुंज के हार ।
मग निरखत नँदलाल को, सुबलि बारहीबार ॥ ११० ॥

गणिका बासकसज्जा का उदाहरण-सवैया

नीर के तीर उसीर के मंदिर धीर समीर जुड़ावत जीरे।
त्यों पदमाकर पंकज पुंज पुरैन के पात परे जनु पीरे ॥
ग्रीषम की क्यों गनै गरमी गज गौहर चाह गुलाब गँभीरे।
बैठी बधूबनि बाग बिहार में बार बगारि सिवार से सीरे॥ १११॥

दोहा

अमल अमोलिक लालमय, पहिरि बिभूषन भार ।
हरषि हिये परतिय धस्यो, सुरख सीप को हार ॥ ११२ ॥

स्वाधीन पतिका का लक्षण-दोहा

जातिय के आधीन है, पीतम रहै हमेस ।
स्वाधिनपतिका नायिका, कही कबिन के बेस ॥ ११३ ॥

मुग्धा स्वाधीनपतिका का उदाहरण-कवित्त

चाह भस्यो चंचल हमारो चित नौल बधू तेरी चाल चंचल

चितौनि में बसत है। कहै पदमाकर सुचंचल चितौनिहूँ ते औझकि उझकि झझकनि में फँसत है॥ औझकि उझकि झझकनि तैं सुरझि बेश बाहीं की गहनि माहिं आइ बिलसत है। बाहीं की गहनि तैं गुनाहीं की कहनि आयो नाहीं की कहनि तैं सुनाहीं निकसत है॥ ११४॥

पुनर्यथा-सवैया

कबहूँ फिरि पाँउ न देहौं यहाँ भजि जैहौं तहाँ जहाँ सूधी सहौ।
पदमाकर देहरी द्वार किवार लगे ललचैहौ न ऐसी चहौ॥
बहियाँ को कहा छहियाँ न कहूँ छुवै पावहुगे लहु लाज लहौ।
चित चाहै कहौ न कहौ बतियाँ उतही रहौ हा हा हमैं न गहौ॥

पुनर्यथा-सवैया

सतरैबो करो बतरैबो करो इतरैबो करो करो जोई चहौ।
पदमाकर आनँद दीबो करो रस लीबो करो सुखसों उमहौ॥
कछु अंतर राखौ न राखौ चहौ पर या बिनती इक मेरी गहौ।
अब ज्यों हिय में नित बैठि रहो त्यों दया करिकै ढिग बैठी रहौ॥

दोहा

तुव अयानपन लखि भट्ट, लट्टू भये नँदलाल।
जब सयानपन पेखिहैं, तब धौं कहा हवाल॥ ११७॥

मध्या स्वाधीनपतिका का उदाहरण–सवैया

ता छिन तैं रहै औरनि भूलि सुभूली कदंबन की परछाहीं ।
त्यों पदमाकर संग सखान को भूलि भुलाय कला अवगाहीं ॥
जा छिन तें तू बशीकर मन्त्र सी मेली सुकान्ह के कानन माहीं ।
दै गलबाँहीं जु नाहीं करी वह नाहीं गुपाल को भूलत नाहीं ॥

दोहा

आधे आधे दृगनि रति, आधे दृगनि सु लाज ।
राधे आधे बचन कहि, सुबसकिये ब्रजराज ॥ ११९ ॥

प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका का उदाहरण–सवैया

मो मुख बीरी दई सु दई सु रही रचि साधि सुगन्ध घनेरो ।
त्यों पदमाकर केसरि खौरि करी तो करी सो सुहाग है मेरो ॥
बेनी गुही तो गुही मनभावते मोतिन माँग सँवारि सबेरो ।
और सिंगार सजे तौ सजो इक हार हहा हियरे मति गेरो ॥

दोहा

अंगराग औरै अँगन, करत कछू बरजी न ।
पै मेहँदी न दिवाइहौं, तुम सों पगन प्रबीन ॥ १२१ ॥

परकीया स्वाधीनपतिका का उदाहरण–कवित्त

उझकि झरोखा है झमकि झुकि झाँकी बाम श्याम को बिसरि गई खबरि तमासा की । कहै पदमाकर चहूँघा

चैत चाँदनी सी फैलि रही तैसियै सुगंध शुभ श्वासा की ॥ तैसी छवि तकत तमोर की तरुयोनन की वैसी छवि बसन की बारन की बासा की । मोतिन की माँग की मुखौ की मुसक्यान हूँ की नथ की निहारबे की नैनन की नासा की ॥ १२२ ॥

पुनर्यथा-कवित्त

ईश की दुहाई शीशफूल तैं लटकि लट लट तैं लटकि लट कंध पै ठहरिगो । कहै पदमाकर सुमंद चलि कंधहूँ तैं भूमि भ्रमि भाई सी भुजा में त्यों भभरिगो ॥ भाई सी भुजा तैं भ्रमि आयो गोरी गोरी बाँह गोरी बाँहहू तैं चपि चूरिन में अरिगो । हेरेउ हरे हरैं हरी चूरिन तैं चाहौ जौ लौं तौलौं मन मेरो दौरि तेरे हाथ परिगो ॥ १२३ ॥

दोहा

मैं तरुनी तुम तरुनतन, चुगुल चवाई गाउँ ।
मुरली लै न बजाइए, कबहुँ हमारो नाउँ ॥ १२४ ॥

गणिका स्वाधीनपतिका का उदाहरण-सवैया

छाक छकी छतियाँ धरकैं दरकै आँगिया उचकैं कुच नीके ।
त्यों पदमाकर छूटत बारहू टूटत हार सिंगार जे हीके ॥
संग तिहारे न भूलहुँगी फिर रंग हिंडोरे सुजीवन जीके ।

यों मिचकी मचकौ न हहा लचकै करिहाँ मचकै मिचकीके ॥

दोहा

या जग में धनि धन्य तू, सहज सलोने गात ।
धरनीधर जो बश कियो, कहा और की बात ॥ १२६ ॥

अभिसारिका का लक्षण-दोहा

बोलि पठावै पियहि कै, पिय पै आपुहि जाय ।
ताही को अभिसारिका, बरनत कबि समुदाय ॥ १२७ ॥

मुग्धा अभिसारिका का उदाहरण-सवैया

किंकिनी छोरि छपाई कहूँ कहुँ बाजनी पायल पाँय ते नाई ।
त्यों पदमाकर पातहु के खरकै कहूँ काँपि उठै छबि छाई ॥
लाजहिं ते गड़ि जात कहूँ अड़ि जात कहूँ गज की गति भाई ।
बैस की थोरी किशोरी हरे हरे या बिधि नन्दकिशोर पै आई ॥

दोहा

केलिभवन नवबेलि सी, दुलही उलहि इकंत ।
बैठि रही चुप चंदलखि, तुमहिं बुलावत कंत ॥ १२६ ॥

मध्या अभिसारिका का उदाहरण-सवैया

हूलै इतै पर मैन महावत लाज के आँदू परे गाथि पाइन ।
त्यों पदमाकर कौन कहै गति माते मतंगनि की दुखदाइन ॥

ये अँग अंगकी रोसनी मैं शुभ सोसनी चीर चुभ्यो चितचाइन।
जाति चली व्रज ठाकुर पै ठमका ठुमकी ठमकी ठकुराइन ॥

दोहा

इक पग धरत सुमंद मग, इकपग धरति अमंद।
चली जाति यहि बिधि सखी, मन-मन करत अनंद॥ १३१॥

प्रौढ़ा अभिसारिका का उदाहरण-सवैया

कौन है तू कित जाति चली बलि बीति निशा अधराति प्रमानैं।
हौं पदमाकर भावति हौं निज भावते पै अबहीं मोहिं जानैं॥
तौ अलबेली अकेली डरै किन क्यों डरौं मेरी सहाय के लानैं।
है सखि संग मनोभव सो भट कान लौं बान शरासन तानैं॥

पुनर्यथा-कबित्त

घूँघुट की घूमके सुभूमके जवाहिर के झिलमिल झालर की भूमि लौं झुलत जात। कहै पदमाकर सुधाकरमुखी के हीर हारन में तारन के तोम से तुलतजात॥ मन्द मन्द हैकल मतंग लौं चलेई भले भुजन समेत भुज भूषन डुलत जात। घाँघरै झकोरन चहूँघा खोर खोरन में खूब खसबोई के खजाने से खुलत जात॥ १३२॥

दोहा

पग दूपुर नूपुर सुभग, जनु अलापि सुरसात ।
पियसों तिय आगमन की, कही सु अगमन बात ॥ १३४॥

परकीया अभिसारिका का उदाहरण-कवित्त

मौलसिरी मंजुल की गुंजन की कुंजन को मोंसों घन-श्याम कहि काम की कथै गयो । कहै पदमाकर अथाइन को तजि तजि गोपगन निज निज गेह के पथै गयो ॥ शोच मति कीजै ठकुरानी हम जानी चित चंचल तिहारो चढ़ि चाहके रथै गयो । छीनन छपाकर छपाकरमुखी तू चल बदन छपाकर छपाकर अथै गयो ॥ १३५ ॥

दोहा

चली प्रीति बस मीत पै, मीत चल्यो तिय चाहि ।
भई भेंट अधबीच तहँ, जहाँ न कोऊ आहि ॥ १३६ ॥

गणिका अभिसारिका का उदाहरण-सवैया

केसर रंग रँगी शिर ओढ़नी कानन कीन्हें गुलाबकलीहौ ।
भाल गुलाल भस्यो पदमाकर अंगन भूषित भाँति भलीहौ ॥
औरन को छलती छिन मैं तुम जाती न औरन सों जु छलीहौ ।
फागुमेंमोहनकोमनलैफगुआसेंकहाअबलेनचलीहौ ॥१३७॥

दोहा

सही साँझ ते सुमुखि तू, सजि सब साज समाज।
को अस बड़भागी जु है, चली मनावन काज॥ १३८॥

दिवा अभिसारिका का उदाहरण-कवित्त

दिन कै किवार खोलि कीनों अभिसारि पै न जानि परी काहू कहाँ जाति चली छल सी। कहै पदमाकर न नाँक री सकारै जाहि काँकरी पगन लगै पंकज के दल सी॥ कामद सों कानन कपूर ऐसी धूरि लगै पद सों पहार नदी लागत है नल सी। घाम चाँदनी सों लगै चंद सों लगत रबि मग मखतूल सों मही हू मखमल सी॥ १३९॥

दोहा

सजि सारँग सारँगनयनि, सुनि सारँग बनमाहँ।
भर दुपहर हरि पै चली, निरखि नेह की छाहँ॥ १४०॥

कृष्णा अभिसारिका का उदाहरण-सवैया

साँवरी सार सखी सँग साँवरी साँवरे धारि बिभूषन ध्वैकै।
त्यों पदमाकर साँवरेई अँगरागनि आँगी रची कुच द्वैकै॥
साँवरी रैनि में साँवरी पै घहरै घनघोर घटा छिति छ्वैकै।
साँवरी पामरीकी दै खुही बलि साँवरेपै चली साँवरीह्वैकै१४१॥

दोहा

कारी निशि कारी घंटा, कचरति कारे नाग ।
कारे कान्हर पै चली, अजब लगन की लाग ॥ १४२ ॥

शुक्लाअभिसारिका का उदाहरण-कवित्त

सजि ब्रजचन्द पै चली यों मुखचन्द जाको चन्द
चाँदनी को मुख मन्द सों करत जात । कहै पदमाकर त्यों
सहज सुगंध ही के पुंज बन कुंजन में कंज से भरत जात ॥
धरत जहाँई जहाँ पग है सुप्यारी तहाँ मंजुल मँजीठ ही
की माठ सी ढुरत जात । हारन ते हीरे ढरैं सारी के
किनारन तैं बारन तैं मुकुता हजारन झरत जात ॥ १४३ ॥

दोहा

जुवति जुन्हाई सों न कछु, और भेद अवरेखि ।
तिय आगम पिय जानिगो, चटक चाँदनी पेखि ॥ १४४ ॥
चलन चहै परदेश को, जा तिय को जब कन्त ।
ताहि प्रवत्स्यत् प्रेयसी, कहतसुकबि मतिवन्त ॥ १४५ ॥

मुग्धा प्रवत्स्यत्पतिका का उदाहरण-सवैया

सेज परी सफरी सी पलोटति ज्यों ज्यों घटा घन की गरजै री ।
त्यों पदमाकर लाजनि तैं न कहै दुलही हिय की हरजै री ॥
आली कछू को कछू उपचार करै पै न पाइ सकै मरजै री ।

जाहि न ऐसे समै मथुरै यह कोऊ न कान्हर को बरजै री॥

दोहा

बोलत बोल न बलि बिकल, थरथरात सब गात।
नवजोबन के आगमन, सुनि पिय गमन प्रभात॥१४७॥

मध्या प्रवत्स्यत्प्रेयसी का उदाहरण—सवैया

गो गृह काज गुवालन के कहै देखिबे को कहूँ दूरि के खेरौ।
मांगि बिदा लइ मोहनी सों पदमाकर मोहन होत सबेरौ॥
फेंट गही न गही बहियाँ नगरो गहि गोबिंद गौन ते फेरौ।
गोरी गुलाब के फूलन को गजरा लै गोपाल की गैल में गेरौ॥

दोहा

सुनि सखीनमुख शशिमुखी, बलम जाहिंगे दूरि।
बूझ्यो चहति बियोगिनी, जिय ज्यावन की मूरि॥१४९॥

प्रौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका का उदाहरण—कवित्त

सौ दिन को मारग तहाँ को बेगि माँगि बिदा प्यारी पदमाकर प्रभात राति बीते पर। सो सुनि पियारी पिय-गमन बराइबे को आसुन अन्हाई बैठि आसन सु तीते पर॥ बालम बिदेश तुम जात हौ तो जाउ पर साँची कहि जाउ कब ऐहौ भौन रीते पर। पहर के भीतर कै दो पहर भीतर ही तीसरे पहर कैधौं साँझ ही बितीते पर॥ १५०॥

पुनर्यथा-सवैया

जात हैं तो अब जान देगी छिन में चलिबे की न बात चलैहैं।
जो पदमाकर पौन के झूँकनि कैलिया कूकनि को सहि लैहैं॥
वे उलहै बन बाग बिहारि निहारि निहारि जबै अकुलैहैं।
जैहैं न फेरि फिरे घर ऐहैं सु गाँव ते बाहर पाँउ न दैहैं ॥१५१॥

दोहा

असन चले आँसू चले, चले मैन के बान।
रमन गमन सुनि सुख चले, चलत चलैंगे प्रान ॥ १५२ ॥

परकीया प्रवत्स्यत्प्रेयसी का उदाहरण-सवैया

जो उरझार नहीं झरसी मृदु मालती माल वहै मग नाखै।
नेहवती जुवती पदमाकर पानी न पान कछू अभिलाखै॥
झाँकि झरोखे रही कबकी दबकी वह बाल मनै मन भाखै।
कोउ न ऐसो हितू हमरो जु परोसिन के पिय को गहि राखै॥

दोहा

ननँद चाह सुनि चलन की, बरजत क्यों न सुकन्त।
आवत बन बिरहीन को, बैरी बधिक बसंत ॥ १५४ ॥

गणिका प्रवत्स्यत्प्रेयसी का उदाहरण-सवैया

आँखिन के अँसुवानि ही सों निज धाम ही धाम धरा भरि जैहैं।
त्यों पदमाकर धीर समीरनि जीय धनी कहु क्यों धरि जैहैं॥

जो तजि मोहिं चलोगे कहूँ तो इती बिरहागिनियाँ अरि जैहैं।
जैहैं कहाँ कछु रावरे को हमरे हिय को तो हरा हरि जैहैं १५५॥

दोहा

फबत फाग फजिहत बड़ी, चलन चहत जदुराय।
को फिरि जाइ रिझाइबो, धुनि धमारि को गाय॥ १५६॥

आगतपतिका का लक्षण-दोहा

आवत बल्लम बिदेश ते, हरषित होत जु बाम।
आगतपतिका नायिका, ताहि कहत रसधाम॥ १५७॥

मुग्धा आगतपतिका का उदाहरण-कवित्त

कान सुनि आगम सुजान प्रानप्रीतम को आनि सखियान सजीं सुंदरि के आस पास। कहै पदमाकर सुपन्नन के हौज हरे ललित लबालब भरे हैं जल बाँस बाँस॥ गूँदि गेंदे गुलगंज गौहरन गंज गुल गुपत गुलाबी गुल गजरे गुलाबपास। खासे खसबीजन सुपौन पौनखाने खुले खस के खजाने खसखाने खूब खास खास॥ १५८॥

दोहा

आवत लेन द्विरागमन, रमनि सुनत यह बानि।
हरषि छपावन हित भटू, रही पौढ़ि पट तानि॥ १५९॥

मध्या आगतपतिका का उदाहरण-सवैया

नँदगाँउते आइगो नन्दलला लखि लाड़िली ताहि रिझायरही।
मुख घूँघट घालि सकै नहिं माइके माइके पीछे दुराय रही॥
उचकैं कुच कोरन की पदमाकर कैसी कछू छबि छाय रही।
ललचाइ रही सकुचाइ रही शिर नाइ रही मुसकाइ रही॥

दोहा

बिछुरि मिले पिय तीय को, निरखत सुमुखि सरूप।
कछु उराहनो देन को, फरकत अधर अनूप॥ १६१॥

प्रौढ़ा आगतपतिका का उदाहरण-कवित्त

आजु दिन कान्ह आगमन के बधाये सुनि छाये मग फूलन सुहाये थल थल के। कहै पदमाकर त्यों आरती उतारिबे को थारन में दीप हीरा हारन के छलके॥ कंचन के कलश भराये भूरि पन्नन के ताने तुंग तोरन तहाँई झलाझलके। पौर के दुवारे ते लगाइ केलि मंदिर लौं पदमिनि पाँउड़े पसारे मखमल के॥ १६२॥

दोहा

आवत कंत विदेश ते, हौं ठानहुँ मुद मान।
मानहुँगी जब करहिंगे, पुनि न गमन की आन॥ १६३॥

परकीया आगतपतिका का उदाहरण-सवैया

एकै चलै रस गोरस लै अरु एकै चलै मग फूल बिछावत ।
त्यों पदमाकर गावत गीत सु एकै चलै उर आनँद छावत ॥
यों नँदनंद निहारिबे को नँदगाँउ के लोग चले सब धावत ।
आवत कान्ह बने बन ते बर प्रान परेसे परोसिनि पावत ॥

दोहा

रमनि रंग औरै भयो, गयो बिरह को शूल ।
आयो नैहर सों जु सुनि, वहै बैद रसमूल ॥ १६५ ॥

गणिका आगतपतिका का उदाहरण-सवैया

आवत नाह उछाह भरे अवलोकिबे को निज नाटकशाला ।
हौं नचि गाइ रिझावहुँगी पदमाकर त्यों रचि रूप रसाला ॥
ये शुक मेरे सुमेरे कहे यों इतै कहि बोलियो बैन बिशाला ।
कंत बिदेश रहे हौ जिते दिन देहु तिते मुकुतान की माला ॥

दोहा

वै आये ल्याये कहा, यह देखन के काज ।
सखिन पठावति शशिमुखी, सजत आपनो साज ॥ १६७ ॥
त्रिबिध कही ये सब तिया, प्रथम उत्तमा मानि ।
बहुरि मध्यमा दूसरी, तीजी अधमा जानि ॥ १६८ ॥

उत्तमा का लक्षण-दोहा

सुपिय दोष लखि सुनि जुतिय, धरै न हिय में रोस ।
ताहि उत्तमा कहत हैं, सुकबि सबै निरदोस ॥ १६९ ॥

उत्तमा का उदाहरण-कवित्त

पाती लिखी सुमुखी सुजान पिय गोबिंद को श्रीयुत सलोने श्याम सुखनि सने रहौ । कहै पदमाकर तिहारी छेम छिन-छिन चाहियतु प्यारे मन मुदित घने रहौ ॥ बिनती इती है कै हमेशहू हमैं तौ निज पाँयन की पूरी परिचारिका गने रहौ । याही में मगन मनमोहन हमारो मन लगानि लगाइ मन मगन बने रहौ ॥ १७० ॥

दोहा

धरति न नाह गुनाह उर, लोचन करति न लाल ।
तिय पिय की छतियाँ लगी, बतियाँ करति रसाल ॥ १७१ ॥

मध्यमा का लक्षण-दोहा

पिय गुनाह चितचाह लखि, करै मान सनमान ।
ताही तिय को मध्यमा, भाषत सुकबि सुजान ॥ १७२ ॥

मध्यमा का उदाहरण-कवित्त

मन्द मन्द उर पै अनन्दही के आँसुन की बरसैं सुबूँदैं मुकुतानही के दाने सी । कहै पदमाकर प्रपंची पंचबान के

सुकानन के मान पै परी त्यों घोर घानै सी ॥ ताजी त्रिब-लीन मैं बिराजी छबि छाजी सबै राजी रोमराजी करि अमित उठानै सी। सौहैं पेखि पीको बिहँसौहैं भये दोऊ दृग सौहैं सुनि भौहैं गईं उतरि कमानै सी ॥ १७३ ॥

पुनर्यथा-कवित्त

जाके मुख सामुहे भयोई जो चहत मुख लीन्हों सो नवाइ डीठि पगन अवाँगी री। बैन सुनिबे को अति ब्याकुल हुते जे कान तेऊ मूँदि राखे मजा मनहूँ न माँगी री ॥ झारि डास्यो पुलकि प्रसेदहू निवारि डास्यो एक रसना हूँ त्यों भरी न कछु हाँगी री। एते पै रह्यो न मान मोहन लटू पै भटू टूक-टूक ह्वैकै जो छटूक भई आँगी री ॥ १७४ ॥

दोहा

रह्यो मान मन के मनहिं, सुनत कान्ह के बैन।
बरजि बरजि हारे तऊ, रुके न गरजी नैन ॥ १७५ ॥

अधमा का लक्षण-दोहा

ज्यों ही ज्यों पिय हित करत, त्यों त्यों परति सरोस।
ताहि कहत अधमा सुकबि, निठुराई की कोस ॥ १७६ ॥

अधमा का उदाहरण-सवैया

हौं उरझाइ रिझाइबे को रसराग कबित्तन की धुनि छाई।

त्यों पदमाकर साहस कै कबहूँ न बिषाद की बात सुनाई ॥
सपनेहू कियो न कछू अपराध सु आपने हाथन सेज बिछाई।
प्यो परि पाँय मनाय जऊ तउ पापिनि को कछु पीर न आई ॥

दोहा

मान ठानि बैठी इतो, सुबस नाह निज हेरि ।
कबहुँ जु परबस होहि तौ, कहा करैगी फेरि ॥ १७८ ॥

नायिका का निरूपण समाप्त ।

नायक-निरूपण-दोहा

सुंदर गुनमंदिर युवा, युवति बिलोकैं जाहि ।
कबिता राग रसज्ञ जो, नायक कहिये ताहि ॥ १७९ ॥

नायक का लक्षण-कवित्त

जगत बशीकरन ही हरन गोपिन को तरुन त्रिलोक मैं न तैसी सुन्दराई है। कहै पदमाकर कलानि को कदम्ब अवलम्बानि सिंगार को सुजान सुखदाई है ॥ रसिक शिरोमनि सुराग रतनाकर है शील गुन आगर उजागर बड़ाई है। ठौर ठकुराई को जु ठाकुर ठसकदार नन्द के कन्हाई सों सुनन्द के कन्हाई है ॥ १८० ॥

दोहा

दौरै को न बिलोकिबे, रसिक रूप अभिराम।
सब सुखदायक साँचहू, लखिबे लायक श्याम॥ १८१॥

नायक के भेद–दोहा

त्रिबिध सुनायक पति प्रथम, उपपति बैसिक और।
जो बिधि सों ब्याह्यो तियन, सोई पति सब ठौर॥ १८२॥

पति का उदाहरण–सवैया

मण्डप ही में फिरै मड़रात न जात कहूँ तजि नेह को औनो।
त्यों पदमाकर ताहि सराहत बात कहै जो कछू कहुँ कौनो॥
ये बड़भागिनी तोसी तुहीं बलि जो लखि रावरो रूप सलौनो।
ब्याह हीते भये कान्ह लटू तब ह्वैहै कहा जब होहिगो गौनो १८३

दोहा

आई चालि सु शशिमुखी, नख शिख रूप अपार।
दिन दिन तिय जोबन बढ़त, छिन छिन तिय को प्यार॥१८४॥
सानुकूल दक्षिण बहुरि, शठ अरु धृष्ट बिचारि।
कहै कबिन-पति एक के, भेद पेखि कै चारि॥ १८५॥
जो पर बनिता तैं बिमुख, सानुकूल सुखदानि।
जु बहु तियन को सुखद सम, सो दच्छिन गुनखानि॥ १८६॥

अनुकूल का उदाहरण-सवैया

एक ही सेज पै सोवत हैं पदमाकर दोऊ महा सुख साने।
सापने मैं तिय मान कियो यह देखि पिया अतिही अकुलाने॥
जागि परे पै तऊ यह जानत पौढ़ि रही हमसों रिस ठाने।
प्रानपियारी के पाँ परिकै करि सौंह गरै की गरै लपटाने॥ १८७॥

दोहा

मनमोहन तन धन सघन, रमण राधिका मोर।
श्रीराधा-मुखचन्द को, गोकुलचन्द चकोर॥ १८८॥

दक्षिण का उदाहरण-कवित्त

देखि पदमाकर गोबिन्दको अनन्दभरी आईसाजि साँझही तैं हरषि हिलोरे मैं। ए हरि हमारे ई हमारे चलो झूलन को हेम के हिंडोरन झुलान के झकोरे मैं॥ या बिधि बधून के सुबैन सुनि बनमाली मृदु मुसुक्याय कह्यो नेह के निहोरे मैं। कालिह चलि झूलैंगे तिहारे ई तिहारी सौंह आजु तुम झूलौ ह्यां हमारे ई हिंडोरे मैं॥ १८९॥

दोहा

निज निज मन के चुनि सबै, फूल लेहु इक बार।
यह कहि कान्ह कदम्ब की, हरषि हलाई डार॥ १९०॥
धरै लाज उर में न कछु, करै दोष निरशंक।
टरै न टारो कैसहूँ, कह्यो धृष्ट सकलंक॥ १९१॥

धृष्ट का उदाहरण-सवैया

ठानै मजा अपने मन की उर आनै न रोसहू दोस दिये को।
त्यों पदमाकर जोबन के मद पै मद है मधुपान पिये को॥
राति कहूँ रमिआयो घरै उर मानै नहीं अपराध किये को।
गारि दै मारि दै टारत भावती भावतो होतहै हार हिये को१६२

दोहा

यदपि न बैन उचारियतु, गहि निबाहियतु बांह।
तदपि गरेई परत है, गजब गुनाही नाह॥ १६३॥

शठ का लक्षण-दोहा

सहित काज मधुरै मधुर, बैननि कहै बनाइ।
उर अन्तर घट कपटमय, सो शठ नायक आइ॥ १६४॥

शठ का उदाहरण—सवैया

करि कन्द को मन्द दुचन्द भई फिरि दाखन के उर दागती है।
पदमाकर स्वादु सुधा तैं सिरै मधु तें महा माधुरी जागती है॥
गनती कहा येरी अनारन की ये अँगूरन तें अति पागती हैं।
तुम बातैं निसीठी कहौ रिस में मिसरी तें मीठी हमैं लागती हैं॥

दोहा

हौं न कियो अपराध बलि, बृथा तानियतु भौंह।
तुम उरसिज हर परसि कै, करत रावरी सौंह॥ १६६॥

उपपति ताहि बखानहीं, जो परबधू को मीत ।
बारबधुन को रसिकसों, बैसिक अलज अभीत ॥ १६७ ॥

उपपति का उदाहरण—सवैया

आछे किये कुच कंचुकी में घट में नट कैसे बटा करिबे को ।
मो दृग दूपै किये पदमाकर तो दृग छूट छटा करिबे को ॥
कीजै कहा बिधि की बिधि को दियो दारुण लौटपटा करिबे को ।
मेरो हियो कटिबे को कियो तिय तेरो कटाक्ष कटा करिबे को १६८

पुनर्यथा-सवैया

ऐसे कढे गन गोपिन के तन मानो मनोभव भाइ से काढे ।
त्यों पदमाकर ग्वालन के डफ बाजि उठे गल गाजत गाढे ॥
छाक छके छलहाइन में छिक पावै न छैल छिनौ छबि बाढे ।
केसर लै मुख मींजिबे को रस भींजत से कर मींजत ठाढे॥१६६॥

दोहा

जाहिर जाइ न सकै तहँ, घरहाइन के त्रास ।
परे रहत नित कान्ह के, प्रान परोसिन पास ॥ २०० ॥

बैसिक का उदाहरण—सवैया

छोरत ही जु छरा के छिनौ छिन छाये तहाँई उमंग अदा के ।
त्यों पदमाकर जै सिसकीन के सोर घनै मुख मोरि मजा के ॥
दै धन धाम धनी अब ते मनही मन मानि समान सुधा के ।
बारबिलासिनि ती के जुपै अखरा अखरा नखरा अखरा के २०१

दोहा

हेरि हीहरन कांति वह, सुनि सीकरति सुभाँति।
दियौ सौंपि मन ताहि तौ, धन की कहा बिसाति ॥ २०२ ॥
औरौ तीन प्रकार के, नायक भेद बखान।
मानि सुबसन चतुर पुनि, क्रियाचतुर पहिंचान ॥ २०३ ॥
करै जु तिय पै मान पिय, मानी कहिये ताहि।
करै बचन की चातुरी, बचन चतुर सो आहि ॥ २०४ ॥
करै क्रिया सों चातुरी, क्रियाचतुर सो जान।
इनके उदित उदाहरन, क्रम ते कहत बखान ॥ २०५ ॥

मानी का उदाहरण—सवैया

बाल बिहाल परी कबकी दबकी यह प्रीति की रीति निहारो।
त्यों पदमाकर है न तुम्हैं सुधि कीन्हों जो बैरी बसन्त बगारो॥
ताते मिलो मनभावती सों बलि ह्यांते हहा बच मान हमारो।
कोकिल की कल बानि सुनें पुनि मान रहैगो न कान्ह तिहारो॥

दोहा

जगत जुराफा ह्वै जियत, तज्यो तेज निज भान।
रूस रहे तुम पूस में, है यह कौन सयान ॥ २०७ ॥
संयुत सुमन सुबेलिसी, सेलीसी गुनग्राम।
लसत हबेली सी सुघर, निरखि नवेली बाम ॥ २०८ ॥

वचनचतुर का उदाहरण-सवैया

दाऊ न नन्दबबा न जसोमति न्योते गये कहूं लै सँग भारी।
हौहूं इकै पदमाकर पौरि मैं सूनी परी बखरी निसिकारी॥
देखै न क्यों कढ़ि तेरे सु खेत पै धाइ गई छुटि गाइ हमारी।
ग्वाल सों बोलि गोपाल कह्यो सु गुवालिनि पै मनमोहिनीडारी॥

दोहा

बिजन बाग सकरी गली, भयो अँधेरो आइ।
कोऊ तोहिं गहै जु इत, तौ फिरि कहा बसाइ॥ २१०॥

क्रिया चतुर का उदाहरण-सवैया

आइ सु न्योति बुलाई भली दिनचारि को जाहि गोपालहीं भावै।
त्यों पदमाकर काहू कह्यो कै चलो बलि बेगिही सासु बुलावै॥
सो सुनि रोकि सकै क्यों तहाँ गुरु लोगन से यह ब्यौंत बनावै।
पाहुनी चाहैं चल्यो जबहीं तबहीं हरि सामुहें छींकत आवै २११

दोहा

जल बिहार मिसु भीर में, लै चुभकी इक बार।
दह भीतर मिलि परस्पर, दोऊ करत बिहार॥ २१२॥

प्रोषित का लक्षण-दोहा

व्याकुल होय जो बिरहबस, बसि बिदेस में कन्त।
ताही सों प्रोषित कहत, जे कोबिद बुधिवंत॥ २१३॥

प्रोषित का उदाहरण-कबित्त

साँझ के सलोने घन सबुज सुरंगन सों कैसे कै अनंग अंग अंगनि सताउतो। कहै पदमाकर झकोर झिल्ली सोरन को मोरन को महत न कोऊ मन ल्याउतो॥ काहू बिरही की कही मानि लेतो जो पै दई जग मैं दई तो दयासागर कहाउतो। एरी बिधि बौरी गुनसार घनो होतो जो पै बिरह बनायो तौ न पावस बनाउतो॥ २१४॥

दोहा

ताजि बिदेश सजि वैसही, निज निकेत में जाइ।
कब समेटि भुज भेंटवी, भामिनि हिये लगाइ॥ २१५॥
फिर फिर सोचत पथिक यह, मेरो निरखि सनेह।
तज्यो गेह निज गेहपति, त्यों न तजै कहुं देह॥ २१६॥
बिकल बटोही बिरहबस, यहै रहो चित चाहि।
मिलै जु कहुँ पारस पस्यो, मुरकि मिलौं तौ ताहि॥ २१७॥
बूझै जो न तियान के, ठानै बिबिध बिलास।
सुवनभिज्ञ नायक कह्यो, वहै नाथिका भास॥ २१८॥

अनभिज्ञ नायक-कबित्त

नैननहीं सैन करै बीरी मुख दैन करै लैन करै चुंबन पसारि प्रेम पाता है। कहै पदमाकर त्यों चातुरी चरित्र करै

चित्र करै सोहैं जो विचित्र रति राता है॥ हाव करै भाव करै बिबिध बिभाव करै बूझौ यौन एते पै अबूझन को भ्राता है। ऐसी परबीन को कियो जो यह पूरुष तौ बीस बिसे जानी महामूरुख बिधाता है॥ २१९॥

दोहा

करि उपाउ हारी जु मैं, सनमुख सैन बताइ।
समुझत प्यो न इतेहु पै, कहा कीजियतु हाइ॥ २२०॥
जाहि जबहिं आलम्बि कै, उर उपजत रस-भाव।
आलम्बन सुविभाव कहि, बरनत सब कबिराव॥ २२१॥
आलम्बन शृंगार के, कहे भेद समुझाइ।
सकल नायिका नायकहु, लच्छन लच्छ बनाइ॥ २२२॥
बरनत आलम्बनहिं मैं, दरसन चारि प्रकार।
श्रवण चित्र शुभ स्वप्न में, पुनि परतच्छ निहार॥ २२३॥
इन चारिहु दरसनन के, लच्छन नाम प्रमान।
तिनके कहत उदाहरन, समुझहु सबै सुजान॥ २२४॥

श्रवण-दर्शन-सवैया

राधिका सों कहि आई जु तू सखि साँवरे की मृदु मूरति जैसी।
ता छिन तें पदमाकर ताहि सुहात कछू न बिसूरति वैसी॥
मानहुँ नीर भरी घन की घटा आँखिन मैं रही आनि उनैसी।

ऐसी भई सुनि कान्ह कथा जु बिलो कहिगी तब होइगी कैसी ॥

दोहा

सुनत कहानी कान्ह की, तीय तजी कुलकान ।
मिलन काज लागी करन, दूतिन सों पहिंचान ॥ २२६ ॥

चित्र-दर्शन-सवैया

चित्र के मन्दिर तें इक सुन्दरी क्यों निकसी जिन्हैं नेह नसा है ।
त्यों पदमाकर खोलि रही दृग बोलै न बोल अडोल दसा है ॥
भृंगी प्रसंग ते भृंगही होत जु पै जग में जड़ कीट महा है ।
मोहन मीत को चित्र लिखे भई चित्र ही सी तो बिचित्र कहा है ॥

दोहा

हरषि उठति फिर फिर परखि, फिर परखति चखलाइ ।
मित्र चित्रपट को तिया, उरसों लेति लगाइ ॥ २२८ ॥

स्वप्न-दर्शन-सवैया

सूने सँकेत में सोंधे सनी सपने में नई दुलही तू मिलाई ।
हौंहूं गही पदमाकर दौरि सो भौंहैं मरोरति सेज लौं आई ॥
या मन की मनही में रही जु समेटि तिया लै हिया सों लगाई ।
आँखैं गईं खुलि सीबी सुने सखि हाइ मैं नीबी न खोलन पाई ॥

दोहा

सुन्दरि सपने में लख्यो, निशि में नन्दकिशोर ।
होत भोर लै दधि चली, पूछत सँकरी खोर ॥ २३० ॥

प्रत्यक्षदर्शन का उदाहरण-सवैया

आई भले हौं चली सखियान में पाई गोबिंद के रूप की झाँकी ।
त्यों पदमाकर हार दियो गृह काज कहा अरु लाज कहाँकी ॥
हैं नख तैं सिखलौं मृदु माधुरी बाँकि ये भौंहैं बिलोकनि बाँकी ।
आजु की या छबि देखि भटू अब देखिबे को न रह्यो कछु बाकी ॥

दोहा

हौं लखि आई लखहुँगी, लखैं न क्यों ब्रजलोग ।
निसिदिन साँचहु साँवरो, दुगुन देखिबे जोग ॥ २३२ ॥

इति श्रीकूर्मवंशावतंसश्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्रश्रीसवाई
महाराजजगत्सिंहाज्ञया मथुरास्थायि-मोहनलालभट्टा-
त्मजकविपद्माकरविरचिते जगद्विनोदनाम्नि
काव्ये शृङ्गाररसालम्बनविभाव-
प्रकरणम् ॥ १ ॥

उद्दीपन-विभाव-लक्षण-दोहा

जिनहिं बिलोकत ही तुरत, रस उद्दीपन होत ।
उद्दीपन सुबिभाव है, कहत कबिन को गोत ॥ २३३ ॥
सखा सखी दूती सुवन, उपबन षटऋतु पौन ।
उद्दीपनहिं बिभाव में, बरणत कबि मतिभौन ॥ २३४ ॥

दोहा

चंद चाँदनी चन्दनहु, पुहुप पराग समेत ।
योंहीं और श्रृंगार सब, उद्दीपन के हेत ॥ २३५ ॥
कहे जु नायक के सबै, प्रथमहिं बिबिध प्रकार ।
अब बरणत हौं तिनहिं के, सचिव सखा जे चार ॥ २३६ ॥
पीठमर्द बिट चेट पुनि, बहुरि बिदूषक होइ ।
मोचै मान तियान को, पीठमर्द है सोइ ॥ २३७ ॥

पीठमर्द का उदाहरण-कबित्त

घूमि देखो धराकि धमारन की धूम देखौ भूमि देखौ भू-मित छबावै छबी छबिकै । कहै पदमाकर उमंग रंग सींचि देखौ केसरि की कीच जो रह्यो मैं ग्वाल गबि कै ॥ उड़त गुलाल देखौ तानन के ताल देखौ नाचत गोपाल देखौ लहौ कहा दबिकै । झेलि देखौ झरपि सकेलि देखौ ऐसो मुख मेलि देखौ मूठि खेलि देखौ फाग फाबिकै ॥ २३८ ॥

दोहा

हौं गोपाल पै भल चहत, तेरोई ब्रजबाल ।
चलति क्यों न नँदलाल पै, लै गुलाल रँग लाल ॥ २३६ ॥
सुबिट बखानत हैं सुकबि, चातुर सबल कलान ।
दुहुन मिलावै में चतुर, वहै चेट उर आन ॥ २४० ॥

बिट का उदाहरण–सवैया

पीत पटी लकुटी पदमाकर मोर पखालै कहूँ गहि नाखी ।
योंलखिहाल गुवालकोताछिन बालसखासुकलाअभिलाखी॥
कोकिल कोकिल कैसी कुहूकुहू कोमल कोककी कारिकाभाखी।
रूसि रही ब्रजबाल के सामुहे आइ रसाल की मञ्जरी राखी २४१

दोहा

हरि को मीत पछीत इमि, गायो बिरह बलाय ।
परत कान्ह तजि मान तिय, मिली कान्ह सों जाय ॥ २४२॥

चेटक का उदाहरण–सवैया

साजि सकेत में साँवरे को सुगयोई जहाँ हुती ग्वालि सयानी ।
त्यों पदमाकर बोलि कह्यो बलि बैठी कहा इतही अकुलानी॥
तौलौं न जाइ तहाँ पहिरै किन जौलौं रिसात न सासु जिठानी ।
हौं लखिआयोनिकुंज ही में परी काल्हि जु रावरी माल हिरानी॥

दोहा

उतन ग्वालि तू कित चली, ये उनये घनघोर ।

हौं आयो लखि तुव घरै, पैठत कारो चोर ॥ २४४ ॥
स्वाँग ठानि ठानै जु कछु, हाँसी बचन बिनोद ।
कह्यो बिदूषक सो सखा, कबिन मानि मन मोद॥ २४५ ॥

विदूषक का उदाहरण-सवैया

फाग के घोस गोपालन ग्वालिनी कै इक ठानि कियो मिसकाऊ ।
त्यों पदमाकर झोरि झमाइ सुदौरी सबै हरि पै इकहाऊ ॥
ऐसे समै वहै भीत बिनोदी सुने सुकनैन किये डरपाऊ ।
लै हर मूसर ऊसर ह्वै कहूँ आयो तहाँ बनिकै बलदाऊ॥ २४६॥

दोहा

कटि हलाय हलकाय कछु, अद्भुत ख्याल बनाय ।
अस को जाहि न फाग में, परगट दियो हँसाय ॥ २४७ ॥

इति सखा ॥

अथ सखी-दोहा

जिनसों नायक नायिका, राखैं कछु न दुराव ।
सखी कहावैं ते सुघर, साँचो सरल सुभाव ॥ २४८ ॥
काज सखिन के चारि ये, मंडन शिक्षा दान ।
उपालंभ परिहास पुनि, बरणत सुकबि सुजान ॥ २४९ ॥
मंडन तियहि शृंगारिबो, शिक्षा बिनय बिलास ।
उपालंभ सों उरहनो, हँसी करब परिहास ॥ २५० ॥

मंडन का उदाहरण-सवैया

माँग सवाँरि शृँगारि सुबारन बेनी गुही जु छवानि लौं छावै।
त्यों पदमाकर या बिधि औरहू साजि शृँगार जु श्यामको भावै॥
रीझै सखी लखि राधिका को रँग जा अँग जो गहनो पहिरावै।
होत यों भूषित भूषण गात ज्यों डाँकत ज्योति जवाहिरपावै २५१

दोहा

कहा करौं जो आँगुरिन, अनी घनी चुभि जाय ।
अनियारे चख लखि सखी, कजरा देत डराय ॥ २५२ ॥

अथ शिक्षा-सवैया

झाँकतिहै का झरोखालगीलगलागिबेकोइहाँझेलनहींफिर।
त्यों पदमाकर तीखे कटाच्छन की सर कौसर सेल नहीं फिर॥
नयननहीं की घलाघलकै घन घावनको कछु तेल नहीं फिर ।
प्रीतिपयोनिधिमेंधँसिकैहँसिकैकढ़िबोहँसीखेलनहींफिर २५३

दोहा

बहत लाज बूड़त सुमन, भ्रमत नैन तेहि ठाँव ।
नेह नदी की धार में, तू न दीजिये पाँव ॥ २५४ ॥

उपालम्भन-कवित्त

ब्रज बहि जाय न कहूँ यों आइ आंखिन ते उमँगि अनोखी घटा बर्षति नेह की। कहै पदमाकर चलावै खान

पान की को प्राणन परी है आनि दहसति देह की ॥
चाहिये न ऐसी बृषभानु की किशोरी तोहिं देइबो दगा जो
ठीकठाकुर सनेह की । गोकुलकी कुलकी न गैलकी गोपालै
सुधि गोरस की रस की न गौवन की न गेह की ॥ २५५ ॥

दोहा

कौन भाँति आये निरखि, तुम तिहिं नन्दकिशोर ।
भरभराति भामिनि परी, घनघराति घन घोर ॥ २५६ ॥

परिहास का उदाहरण-सवैया

आई भले द्रुत चाल तूं चातुर आतुर मोहन के मन भाई ।
सौतिन के सर को पद्माकर पाई कहांधौ इती चतुराई ॥
मैंनसिखाई सिखाइसि मैंनहि यों कहि रैन की बात जताई ।
ऊपर ग्वालि गोपाल तरे सुहरे हँसि यों तसबीर दिखाई ॥ २५७ ॥

दोहा

को तेरो यह साँवरो, यों बूझ्यो सखि आय ।
मुखते कही न बात कछु, रही सुमुखि मुख नाय ॥ २५८ ॥

दूती-लक्षण-दोहा

दूत पने में ही सदा, जो तिय परम प्रबीन ।
उत्तम मध्यम अधम हैं, सो दूती बिधि तीन ॥ २५९ ॥

हरे सोच उचरै बचन, मधुर मधुर हित मानि।
सो उत्तम दूती कही, रसग्रंथन में जानि ॥ २६० ॥

उत्तम दूती का उदाहरण-कवित्त

गोकुल की गलिन गलीन यह फैली बात कान्है नन्दरानी बृषभानु भौन ब्याहती। कहै पदमाकर यहाँई त्यों तिहारो चलै ब्याह को चलन यहै साँवरो सराहती ॥ सोचति कहा हौ कहा करिहैं चवाइन ये आनँद की अवली न काहे अवगाहती। प्यारो उपपति तैं सु होत अनुकूल तुम प्यारी परकीया ते स्वकीया होन चाहती ॥ २६१ ॥

दोहा

कालिह कलिन्दी के निकट, निरखि रहे हौ जाहि।
आई खेलन फाग वह, तुमहीं सों चित चाहि ॥ २६२ ॥
कछुक मधुर कछु कछु परुष, कहै बचन जो आय।
ताही को कबि कहत हैं, मध्यम दूती गाय ॥ २६३ ॥

मध्यम दूती का उदाहरण-सवैया

बैन सुधा से सुधासी हँसी बसुधा में सुधा की सटा करती हौ।
त्यों पदमाकर बारहिबार सुबार बगारि लटा करती हौ ॥
बीर बिचारे बटोहिन पै बिनकाजही तौ यों छटा करती हौ।
बिज्जुछटा सी अटा पै चढ़ी सुकटाक्षनि घालि कटा करती हौ ॥

दोहा

कुञ्जभवन लों भावते, कैसे सकहि सुआय।
जावक रँग भारनि भट्ठ, मग में धरति न पांय॥ २६५॥
कै पियसों कै तियहि सों, कहै परुष ही बैन।
अधम दूतिका कहत हैं, ताही सों मति ऐन॥ २६६॥

अधमा का उदाहरण-सवैया

ऐहै न फेरि गई जो निशा तनु योबन है घन की परछाहीं।
त्यों पदमाकर क्यों न मिलै उठि यों निबहैगो न नेह सदाहीं॥
कौन सयानि जो कान्ह सुजान सों ठानि गुमान रही मन माहीं।
एक जु कंजकली न खिली तो कहा कहुँ भौंर को ठौर है नाहीं॥

दोहा

कै गुमान गुनरूप के, तैं न ठान गुनमान।
मनमोहन चित चढ़ि रही, तोसी किती न आन॥ २६८॥

दूती के कार्य-दोहा

द्वै दूती के काज ये, बिरह निवेदन एक।
संघट्टन दूजी कह्यो, सुकबिन सहित बिबेक॥ २६९॥
बिरह ब्यथानि सुनाइबो, बिरह-निबेदन जानि।
दोउन को जु मिलाइबो, सो संघट्टन मानि॥ २७०॥

बिरह-निवेदन का उदाहरण-कवित्त

आई तजिहौं तो ताहि तरनितनूजा तीर ताकि ताकि

तारापति तरफति ताती सी। कहै पदमाकर घरीकही में घनश्याम काम तो कतलबाज कुंजन ह्वै काती सी॥ याही छिन वाही सों न मोहन मिलौगे जोपै लगनि लगाइ एती अगिनि अवाती सी। रावरी दुहाई तौ बुझाई न बुझैगी फेरि नेह भरी नागरी की देह दियाबाती सी॥ २७१॥

दोहा

को जियावतो आजुलौं, बाढ़े बिरह बलाय।
होती जु पै न तोहिं सी, ताकी तनक सहाय॥२७२॥

उदाहरण-कवित्त

तासनकी गिलमें गलीचा मखतूलन के झरपै झुमाऊ रही भूमि रँगद्वारी मैं। कहै पदमाकर सुदीपमणि मालनकी लालन की सेज फूल जालन समारी मैं॥ जैसे तैसे नित छलबल सों छबीली वह छिनक छबीले को मिलाय दई प्यारी मैं। छूटि भाजी करतें सुकरके बिचित्र गति चित्र कैसी पूतरी न पाई चित्रसारी मैं॥ २७३॥

दोहा

गोरी को गोपाल को, होरी के मिस ल्याय।
बिजन सांकरी खोरि में, दोऊ दिये मिलाय॥ २७४॥

आपुहि अपनो दूतपन, करै जु अपने काज।
ताहि स्वयंदूती कहत, ग्रंथन में कविराज ॥ २७५ ॥

स्वयंदूतिका का उदाहरण-सवैया

रूसि कहूँ कढ़ि माली गयो गई ताहि मनावन सासु उताली।
त्यों पदमाकर न्हान नदी जे हुतीं सजनी सँग नाचनवाली ॥
मंजु महाछबि की कबकी यह नीकी निकुंज परी सब खाली।
हौं इहबागकी मालिनिहौं इतआयेभले तुमहौ बनमाली२७६

दोहा

मोहीं सों किन भेंटि ले, जौलौं मिलै न बाम।
शीत भीत तेरो हियो, मेरो हियो हमाम ॥ २७७ ॥

षटऋतु-वर्णन

बसन्त-कवित्त

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में क्यारिन में कलिन कलीन किलकन्त है। कहै पदमाकर परागन में पौनहू में पानन में पीक में पलाशन पगन्त है ॥ द्वार में दिशान में दुनी में देश देशन में देखो दीप दीपन में दीपत दिगन्त है। बीथिन में ब्रज में नबेलिन में बेलिनमें बनन में बागन में बगरो बसन्त है ॥ २७८ ॥

और भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर और डौर झौरन में बौरन के है गये। कहै पदमाकर सुऔरै भाँति गलियान

छलिया छबीले छैल और छवि छ्वै गये ॥ और भाँति बिहँग समाज में अवाज होत ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये । औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रङ्ग औरै तन औरै मन औरै बन ह्वै गये ॥ २७९ ॥

पात बिन कीन्हे ऐसी भाँति गन बेलिनके परत न चीन्हे जे ये लरजत लुञ्ज हैं । कहै पदमाकर बिसासी या बसन्त के सु ऐसे उतपात गात गोपिन के भुञ्ज हैं ॥ ऊधो यह सूधो सो सँदेशो कहि दीजो भले हरि सों हमारे ह्यां न फूले बन कुञ्ज हैं । किंशुक गुलाब कचनार औ अनारन की डारन पै डोलत अँगारन के पुञ्ज हैं ॥ २८० ॥

सवैया

ये ब्रजचंद चलो किन वा ब्रज लूकैं बसन्त की ऊकन लागीं ।
त्यों पदमाकर पेखो पलाशन पावक सी मनो फूकन लागीं ॥
वै ब्रजवारी बिचारी बधू बनवारी हियेलौं सुहूकन लागीं ।
कारी कुरूप कसाइनै पै सुकुहूकुहू कैलिया कूकन लागीं ॥ २८१ ॥

ग्रीष्म-कवित्त

फहरैं फुहार नीर नहर नदी सी बहैं छहरैं छबीन छाम छीटिन की छाटी हैं । कहै पदमाकर त्यों जेठ की जलाकैं तहाँ पावैं क्यों प्रबेश बेश बेलिन की बाटी हैं ॥ बारहूदरीन

बीच बारहू तरफ तैसो बरफ बिछाई तापै शीतल सुपाटी हैं। गजक अँगूर को अँगूर सों उँचो हैं कुच आसव अँगूर को अँगूरही की टाटी हैं ॥ २८२ ॥

वर्षा-कवित्त

मल्लिकान मंजुल मलिन्द मतवारे मिले मन्द मन्द मारुत मुहीम मन साकी है। कहै पदमाकर त्यों नदन नदीन नित नागर नवेलिन की नजर नसा की है ॥ दौरत दरेरो देत दादुर सुदूंदै दीह दामिनी दमंकत दिशान में दसाकी है। बद्दलनि बुन्दनि बिलोकि बगुलान बाग बँगला नवेलिन बहार बरसा की है ॥ २८३ ॥

चंचला चमंकैं चहूँ ओरन ते चाह भरी चरज गई थीं फेर चरजन लागींरी। कहै पदमाकर लवंगन की लोनी लता लरज गई थीं फेर लरजन लागींरी ॥ कैसे धरौं धीर बीर त्रिबिध समीरैं तन तरज गई थीं फेर तरजन लागींरी। घुमड़ि घमण्ड घटा घन की घनेरी अबै गरज गई थीं फेरि गरजन लागींरी ॥ २८४ ॥

बरसत मेह नेह सरसत अंग अंग झरसत देह जैसे जरत जवासो है। कहै पदमाकर कलिन्दी के कदम्बन पै मधुपन कीन्हों आइ महत मवासो है॥ ऊभो यह ऊधम जताइ

दीजो मोहन को ब्रज को सुबासो भयो अगिनि अवासो है। पातकी पपीहा जलपान को न प्यासो कहूँ व्यथित बियोगिन के प्रानन को प्यासो है ॥ २८५ ॥

शरद-कबित्त

तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै बृन्दाबन बीथिन बहार बंशीबट पै। कहै पदमाकर अखण्ड रासमण्डल पै मण्डित उमड़ि महाकालिन्दी के तट पै ॥ क्षिति पर छान पर छाजत छतान पर ललित लतान पर लाड़िली के लट पै। आई भली छाई यह शरद जुन्हाई जेहि पाई छबि आजुही कन्हाई के मुकुट पै ॥ २८६ ॥

खनक चुरीन की त्यों ठनक मृदंगन की रुनुक झुनुक सुर नूपुर के जाल को। कहै पदमाकर त्यों बाँसुरी की धुनि मिलि रह्यो बाँधि सरस सनाको एक ताल को ॥ देखतै बनत पै न कहत बनैरी कछू बिबिध बिलास यों हुलास यह ख्याल को। चन्द छबि रास चाँदनी को परकाश राधिका को मन्दहास रासमण्डल गोपाल को ॥ २८७ ॥

हेमन्त-कबित्त

अगर की धूप मृगमद की सुगन्धवर बसन बिशाल जाल अंग ढाकियतु है। कहै पदमाकर सु प्रौन को न गौन जहां

ऐसे भौन उमँगि उमँगि छाकियतु है ॥ भोग औ सँयोग हित सुऋतु हेमन्त ही में एते और सुखद सुहाय वाकियतु है। तानकी तरंग तरुणापन तरणि तेज तेल तूल तरुणि तमाल ताकियतु है ॥ २८८ ॥

गुलगुली गिलमें गलीचा हैं गुणीजन हैं चाँदनी हैं चिक हैं चिरागन की माला हैं। कहै पदमाकर त्यों गजक गिजा हैं सजी सेज हैं सुराही हैं सुरा हैं और प्याला हैं ॥ शिशिर के पाला को न व्यापत कसाला तिन्हैं जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं। तान तुक ताला हैं बिनोदके रसाला हैं सुबाला हैं दुशाला हैं बिशाला चित्रशाला हैं ॥ २८९ ॥

इति श्रीकूर्मवंशावतंसश्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्र
श्रीसवाईमहाराजजगत्सिंहाज्ञया कविपद्माकर-
विरचिते जगद्विनोदनाम्निकाव्ये आलम्बन-
विभावप्रकरण समाप्तम् ॥ २ ॥

अनुभाव का लक्षण-दोहा

जिन हीं ते रतिभावको, चित में अनुभव होत।
ते अनुभव शृंगार के, बरणत हैं कबिगोत ॥ २९० ॥
सात्त्विक भाव स्वभावधृत, आनँदअंग बिकास।
इनहीं ते रतिभाव को, परगट होत बिलास ॥ २९१ ॥

अनुभाव का उदाहरण-कवित्त

गोरस को लूटिबो न छूटिबो छराको गनै टूटिबो गनै न कछू मोतिन के माल को। कहै पदमाकर गुवालिनि गुनीली हेरि हरषै हँसै यों करै झूठे झूठे ख्याल को ॥ हां करति ना करति नेह की निशा करति सांकरी गली में रंग राखति रसाल को। दीबो दधिदान को सुकैसे ताहि भावत है जाहि मन भायो झार झगरो गोपाल को ॥ २९२ ॥

स्तम्भ का लक्षण-दोहा

मृदु मुसकाय उठाय भुज, छन घूँघुट उलटारि।
को धनि ऐसो जाहि तू, इकटक रही निहारि ॥ २९३ ॥
स्तम्भ स्वेद रोमांच कहि, बहुरि कहत स्वरभंग।
कम्प बरण बैबर्ण्य पुनि, आँसू प्रलय प्रसंग ॥ २९४ ॥
अन्तरगत अनुमान में, आठहु सात्त्विक भाव।
जृम्भा नवम बखानहीं, जे कबीन के राव ॥ २९५ ॥

हरष लाज भय आदि ते, जबै अंग थकि जात ।
स्तम्भ कहत तासों सबै, रसग्रंथन सरसात ॥ २६६ ॥

स्तम्भ का उदाहरण-सवैया

या अनुराग की फाग लखो जहँ रागती राग किशोर किशोरी।
त्यों पदमाकर घाली घली फिर लाल ही लाल गुलाल की झोरी॥
जैसी कि तैसी रही पिचकी कर काहू न केसरि रंग में बोरी।
गोरिन के रँग भीजिगो साँवरो साँवरे के रँग भीजी सुगोरी २६७॥

स्वेद का लक्षण-दोहा

पियहि परखि तिय थकि रही, बूझेउ सखिन निहार।
चलति क्यों न क्यों चलहु मग, परत न पग रँग भार ॥ २६८ ॥
रोष लाज उर हरष श्रम, इनहीं ते जो होत ।
अंग अंग जाहिर सलिल, स्वेद कहत कबि गोत ॥ २६९ ॥

स्वेद का उदाहरण-कबित्त

ये री बलबीर के अहीरन की भीरन में सिमिटि समीरन अँबीरन को अटा भयो । कहै पदमाकर मनोज मन मौज नहीं मैन के हटा में पुनि प्रेम को पटा भयो ॥ नेही नँदलाल की गुलाल की घलाघल में राजै तन तपसी जघन की घटा भयो । चोरै चखचोटिन चलाक चित्त चोरी भयो लूटि गई लाज कुलकानि को कटा भयो ॥ ३०० ॥

रोमांच का लक्षण-दोहा

यों श्रमसीकर सुमुख ते, परत कुचन पर वेश ।
उदित चन्द्र मुकुता छतानि, पूजत मनहुँ महेश ॥ ३०१ ॥
शीत भीत हरषादि ते, उठे रोम समुहाय ।
ताहि कहत रोमांच हैं, सुकबिन के समुदाय ॥ ३०२ ॥

रोमांच का उदाहरण-सवैया

कैधों डरी तू खरी जलजन्तु ते कै अँगभार सिवार भयो है ।
कै नख ते शिख लौं पदमाकर जाहिरै भ्भार शृँगार भयो है ॥
कैधों कछू तोहिं शीत विकार है ताही को या उदगार भयो है ।
कैधों सुवारि बिहारहि में तन तेरो कदम्ब को हार भयो है ॥ ३०३ ॥

स्वर-भंग का लक्षण-दोहा

पुलकित गात अन्हात यों, अरी खरी छबि देत ।
उठे अंकुरे प्रेम के, मनहुँ हेम के खेत ॥ ३०४ ॥
हरष भीत मद क्रोध ते, बचन भाँति ही और ।
होत जहाँ स्वर भंग को, बरणत कबि शिरमौर ॥ ३०५ ॥

स्वरभंग का उदाहरण-सवैया

जात हुती निज गोकुल को हरि आवैं तहाँ लखिकै मग सूना ।
तासों कहौं पदमाकर यों अरे साँवरे बावरे तैं हमैं छू ना ॥
आज धौं कैसी भई सजनी उत वा विधि बोल कढ्यो इकहू ना ।
आनिलगायोहियेसोंहियोभरि आयोगरो कहिआयोकछूना ३०६

कम्प का लक्षण-दोहा

हौं जानत जो नाहँ तुम, बोलत अध अखरान।
संग लगे कहुँ और के, करि आये मदपान ॥३०७॥
हरषहि ते कै कोप ते, कै भ्रम भय ते गात।
थरथरात तासों कहत, कम्प सुमति सरसात ॥३०८॥

कम्प का उदाहरण-सवैया

साजि शृँगारन सेज पै पारि भई मिस ही मिस ओट जिठानी।
त्यों पदमाकर आयगो कन्त इकन्त जबै निज तन्त में जानी ॥
सो लखि सुन्दरि सुन्दर सेज ते यों सरकी थिरकी थहरानी।
बात के लागे नहीं ठहरात है ज्यों जलजात के पात पै पानी ३०९॥

विवरण का लक्षण-दोहा

थरथरात उर कर कँपत, फरकत अधर सुरंग।
फरकि पीव पलकनि प्रकट, पीक लीक को ढंग ॥३१०॥
मोहित ते कै क्रोध ते, कै भय ही ते जान।
बरण होत जहँ और बिधि, सो बैबर्ण्य बखान ॥३११॥

विवरण का उदाहरण-सवैया

सापनेहूँ न लख्यो निशि में रति भौन ते गौन कहूँ निज पीको।
त्यों पदमाकर सौति सँयोगन रोग भयो अनभावती जी को ॥
हारन सों हहरात हियो मुकता सियरात सुबेस रही को।
भावते के उर लागी जऊ तऊ भावती को मुख ह्वै गयो फीको ३१२

अश्रु का लक्षण-दोहा

कहि न सकत कछु लाज ते, अकथ आपनी बात ।
ज्यों ज्यों निशि नियरात है, त्यों त्यों तिय पियरात ॥ ३१३ ॥
हरष रोष अरु शोक भय, धूमादिक ते होत ।
प्रकट नीर अँखियान में, अश्रु कहत कबिगोत ॥ ३१४ ॥

अश्रु का उदाहरण-कवित्त

भेद बिन जाने एती बेदन बिसाहिबे को आज हौं गई हीं बाट बंशीबटवारे की । कहै पदमाकर लटू ह्वै लोट पोट भई चित्त में चुभी जो चोट चाय चटवारे की ॥ बावरी लौं बूझति बिलोकित कहा तू बीर जाने कहा कोऊ पीर प्रेम हटवारे की । उमड़ि उमड़ि बहै बरखै सु आँखिन ह्वै घट में बसी जो घटा पीत पटवारे की ॥ ३१५ ॥

प्रलय का लक्षण-दोहा

आँखिन ते आँसू उमड़ि, परत कुचन पर आन ।
जनु गिरीश के शीश पर, डारत झख मुकतान ॥ ३१६ ॥
तनमन की न सम्हार जहँ, रहै जीवगन गोय ।
सो शृँगार रस में प्रलय, बरणत कबि सब कोय ॥ ३१७ ॥

प्रलय का उदाहरण-सवैया

ये नदगांव ते आये इहाँ उत आई सुता वह कौनहूँ ग्वाल की ।
त्यों पदमाकर होत जुराजुरी दोउन फाग करी इह ख्याल की ॥

डीठि चली उनकी इनपै इनकी उनपै चली मूठि उताल की ।
डीठिसीडीठिलगीउनकीइनकेलगीमूठिसीमूठिगुलालकी ३१८

जम्भा का लक्षण–दोहा

दै चखचोट अँगोट मग, तजी युवति बन माहिं ।
खरी बिकल कबकी परी, सुधि शरीर की नाहिं ॥ ३१९ ॥
पिय बिछोह सम्मोह कै, आलस ही अवगाहि ।
छिन छिन बदन बिकासिबो, जृम्भा कहिये ताहि ॥ ३२० ॥

जृम्भा का उदाहरण–सवैया

आरस सों रस सों पदमाकर चौंकि परे मुख चुम्बन के किये ।
पीक भरी पलकैं झलकैं अलकैं झलकैं छबि छूटि छटा लिये ॥
सो सुख भाषि सकै अब को रसकै कसकै मसकै छतियां छिये ।
रातिकीजागीप्रभातउठीअँगरातजँभातलजातलगीहिये ३२१

दोहा

दरदर दौरति सदन द्युति, सम सुगन्ध सरसाति ।
लखत क्यों न आलस भरी, परी तिया जमुहात ॥ ३२२ ॥

सात्विक भाव वर्णन समाप्त ।

दोहा

अनुभावहि में जानिये, लीलादिक जे हाव ।
ते सँजोग श्रृंगार में, बरणत सब कबिराव ॥ ३२३ ॥

लीलाहाव लक्षण-दोहा

प्रकट स्वभाव तियान के, निज श्रृंगार के काज ।
हाव जानिये ते सबै, यों भाषत कबिराज ॥ ३२४ ॥
लीला प्रथम बिलास बिय, पुनि बिक्षिप्त बखान ।
बिभ्रम किल किंचित बहुरि, मोट्टाइत पुनि जान ॥ ३२५ ॥
बिब्बोकहु पुनि बिहृत गनि, बहुरि कुट्टमित गाव ।
रस ग्रंथन में ये दसहु, हाव कहत कबिराव ॥ ३२६ ॥
पिय तिय को तिय पीय को, धरै जु भूषणचीर ।
लीला हाव बखानही, ताही को कबि धीर ॥ ३२७ ॥

लीलाहाव का उदाहरण-कवित्त

रूप रचि गोपी को गोबिन्द गो तहाईं जहाँ कान्ह बनि बैठी कोऊ गोप की कुमारी है । कहै पदमाकर यों उलट कहै को कहा कसकै कन्हैया कर मसकै जु प्यारी है ॥ नारी ते न होत नर नर ते न होत नारी बिधि के करे हू कहूँ काहू ना निहारी है । काम करता की करतूत या निहारी। जहाँ नारी नर होत नर होत लख्यो नारी है ॥ ३२८ ॥

पुनर्यथा-सवैया

ये इत घूँघट घालि चलैं उत बाजत बाँसुरी की धुनि खोलैं ।
त्यों पदमाकर ये इतै गोरस लै निकसैं यों चुकावत मोलैं ॥

प्रेम के पंथ सु प्रीति की पैठ में पैठत ही है दशा यह जोलैं।
राधामयी भई श्यामकी सूरत श्याममयीभई राधिका डोलैं ३२९

विलासहाव का लक्षण-दोहा

तिय बैठी पिय को पहिरि, भूषण बसन बिशाल।
समुझि परत नहिं सखिन को, को तिय को नँदलाल॥ ३३०॥
जो तिय पियहि रिझावई, प्रकट करै बहु भाव।
सुकबि बिचार बखान हीं, सो बिलास निधि हाव॥३३१॥

विलासहाव का उदाहरण-कवित्त

शोभित सुमनवारी सुमन सुमनवारी कौनहूँ सुमनवारी को नाहिं निहारी है। कहै पदमाकर त्यों बाँधनू बसनवारी वा ब्रज बसनवारी ह्यो हरनहारी है॥ सुबरनवारी रूप सुबरनवारी सजै सुबरनवारी कामकर की सम्हारी है। सीकरनवारी स्वेद सीकरनवारी रति सीकरनवारी सो बसीकरनवारी है॥ ३३२॥

पुनर्यथा-सवैया

आई हो खेलन फाग इहाँ बृषभानुपुरा ते सखी सँग लीने।
त्यों पदमाकर गावती गीत रिझावती भाव बताय नवीने॥
कंचन की पिचकी कर में लिये केसरि के रँग सों अँग भीने।
छोटीसी छातीछुटी अलकैं अतिबैसकीछोटी बड़ीपरबीने ३३३

विक्षिप्तहाव का लक्षण-दोहा

समुझि श्याम को सामुहे, करते बार बगार ।
मनमोहन मनहरन को, लगी करन शृंगार ॥ ३३४ ॥
तनक शृँगारहि में जहाँ, तरुणि महाछबि देत ।
सोई विक्षित हाव को, बरणत बुद्धि निकेत ॥ ३३५ ॥

विक्षित हाव का उदाहरण-सवैया

मानौं मयंकहि के पर्यंक निशंक लसै सुत बंक मही को ।
त्यों पदमाकर जागि रह्यो जनु भाग हिये अनुराग जु पीको ॥
भूषण भार शृँगारन सों साजि सौतिन को जुकरे मुख फीको ।
ज्योतिकोजालबिशालमहातियभालपैलालगुलालकोटीको ॥

विभ्रमहाव का लक्षण-दोहा

जनु मलिन्द अरबिन्द बिच, बस्यो चाहि मकरन्द ।
इमि इक मृगमद बिन्दु सों, कियो सुबस ब्रजचन्द ॥ ३३७ ॥
होत काज कछु को कछू, हरबराय जिहि ठौर ।
विभ्रम तासों कहत हैं, हाव सबै शिरमौर ॥ ३३८ ॥

विभ्रमहाव का उदाहरण-सवैया

बछरै खरी प्यावै गऊ तिहि को पदमाकर को मन लावत है ।
तिय जानि गेरैयां गही बनमाल सु ऐंचै लला इच्योछावतहैं॥
उलटी कर दोहनी मोहनी की अँगुरी थन जानि कै दाबत है ।
दुहिबोऔदुहाइबोदोउनकोसखिदेखतहीबनिआवतहै३३६॥

किलकिञ्चितहाव का लक्षण-दोहा

पहिरि कंठ बिच किंकिणी, कस्यो कमर बिच हार।
हरबराय देखन लगी, कबते नंदकुमार ॥ ३४० ॥
होत जहाँ इक बारही, त्रास हास रस रोष।
तासों किलकिञ्चित कहत, हाव सबै निरदोष ॥ ३४१ ॥

किलकिञ्चितहाव का उदाहरण-सवैया

फागुन में मधुपान समै पदमाकर आइगे श्यामसँघाती।
अंचल ऐंचि उँचाय भुजाभरै भूमि गुलाल की ख्याल सुहाती॥
भूठिहुदै भभकायतहाँ तिय भाँकी भुकी भभकी मदमाती।
रूसिरहीघरीआधिक लौं तिय भारत अंगनिहारतछाती ३४२॥

ललितहाव का लक्षण-दोहा

चढ़त भौंह धरकत हियो, हरषत मुख मुसक्यात।
मद छाकी तिय को जु पिय, छबि छकि परसत गात ॥ ३४३ ॥
जहँ अंगन की छबि सरस, बरनन चलन चितौन।
ललित हाव ताको कहत, जे कबि कबिताभौन ॥ ३४४ ॥

ललितहाव का उदाहरण-कबित्त

सजि ब्रजचंद पै चली यों मुखचंद जाको चंद चाँदनी को मुखमंद सो करत जात। कहै पदमाकर त्यों सहज सुगंध ही के पुंज बन कुंजन में कंज से भरत जात ॥ धरत

जहाँई जहाँ पग है पियारी तहाँ मंजुल मजीठ ही के माठ से ढरत जात। बारन तें हीरा सेत सारी की किनारन तें हारन तें मुकता हज़ारन झरत जात॥ ३४५॥

मोट्टायितहाव का लक्षण-दोहा

सजि शृँगार सुकुमार तिय, कुटिल सुदृगन दराज।
लखहु नाह आवत चली, तुमहिं मिलन ताकि आज॥३४६॥
सुनत भावते की कथा, भाव प्रकट जहँ होत।
मोट्टायित तासों कहैं, हाव कबिन के गोत॥३४७॥

मोट्टायितहाव का उदाहरण-सवैया

रूप दुहूँ को दुहून सुन्यो सुर हैं तब ते मनों संग सदाहीं
ध्यान में दोऊ दुहून लखैं हरषैं अँग अंग अनंग उछाहीं॥
मोहि रहे कबके यों दुहूँ पदमाकर और कछू सुधि नाहीं।
मोहनकोमनमोहनीमेंबस्योमोहनीको मनमोहन माहीं ३४८॥

बिब्बोकहाव का लक्षण-दोहा

वशीकरण जबते सुन्यो, श्याम तिहारो नाम।
दृगनि मूँदि मोहित भई, पुलकि पसीजति बाम॥ ३४९॥
करै निरादर ईठ को, निज गुमान गहि बाम।
कहत हाव बिब्बोक बहु, जे कवि मति अभिराम॥ ३५०॥

विव्वोक हाव का उदाहरण—सवैया

केसर रंग महावर से सरसै रस रंग अनंगचमू के।
धूम धमारन को पदमाकर छाय अकाश अबीर के मूके॥
फाग यों लाड़िली की तिहि में तुम्हैं लाज न लागत गोप कहूँके।
छैल भये छतियाँ छिरकौ फिरौ कामरी ओढ़े गुलाल के ढूके॥

विहृत हाव का लक्षण—दोहा

रहौ देखि दृग दै कहा, तुहिं न लाज कछु छूत।
मैं बेटी बृषभानु की, तू अहीर को पूत॥३५२॥
लाजनि बोलि सकै नहीं, पियहि मिलेहू नारि।
बिहृत हाव तासों सबै, कबिजन कहत बिचारि॥३५३॥

बिहृत हाव का उदाहरण—सवैया

सुन्दरि को मणि मंदिर में लखि आये गोबिन्द बने बड़भागे।
आनन ओप सुधाकर सी पदमाकर जोबन जोति के जागे॥
औचक ऐंचत अंचल के पुलकी अँग अंगहि यों अनुरागे।
मैन के राज में बोलि सकी न भटू ब्रजराज सों लाजके आगे॥

कुट्टमित हाव का लक्षण—दोहा

यह न बात आछी कछू, लहि यौबन परकास।
लाजहिते चुप ह्वै रहति, जो तू पिय के पास॥३५५॥
तन मर्दति पिय के तिया, दरसावति झुठ रोष।
कहत कुट्टमित भाव हैं, याहि सुकबि निर्दोष॥३५६॥

कुट्टमित हाव का उदाहरण—कबित्त

अंचल के ऐंचे चल करती दृगंचल की चंचलता तैं
चंचल चलै न भजि द्वारे को। कहै पदमाकर परैसी
चौंकि चुम्बन में छलनि छपावै कुच कुंभनि किनारे को॥
छाती के छुए पै परै राती सी रिसाय गलबाहीं के किये पै
नाहिं नाहिंए उचारे को। ही करति सीतल तमासे तुंग ती
करति सीकरति रति में बसीकरति प्यारे को॥ ३५७॥

हेला हाव का लक्षण—दोहा

कर ऐंचत आवत इँची, तिय आपुहि पिय ओर।
झूठहु रूसि रहै छिनक, छुवत छरा को छोर॥ ३५८॥
दै जुड़िठाई नाह सँग, प्रकटै बिबिध बिलास।
कहत ग्यारहें हाव सों, हेला नाम प्रकास॥ ३५९॥

हेला हाव का उदाहरण—सवैया

फाग के भीर अभीरन मैं गहि गोबिंदै लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मनकी पदमाकर ऊपर नाय अबीर की झोरी॥
छीनि पितंबर कंबर तैं सुबिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नयन नचाय कही मुसकाइ लला फिरि आइयो खेलन होरी॥

बोधक हाव का लक्षण—दोहा

हर बिरंचि नारद निगम, जाको लहत न पार।
ता हरि को गहि गोपिका, गरब गुहावत बार॥ ३६१॥

ठानि क्रिया कछु तिय पुरुष, बोधन करै जु भाव।
रस ग्रंथन में कहत हैं, तासों बोधक हाव ॥ ३६२ ॥

बोधक हाव का उदाहरण—सवैया

दोऊ अटान चढ़े पदमाकर देखैं दुहूँ को दुवो छबि छाई।
त्यों ब्रजबाल गोपाल तहाँ बनमाल तमालहि की दरशाई ॥
चंद्रमुखी चतुराई करी तब ऐसी कछू अपने मन भाई।
अंचल ऐंचि उरोजन तैं नँदलाल को मालतीमाल दिखाई ॥

दोहा

निरखि रहे निधि बन तरफ़, नागर नंदकुमार।
तोरि हीर को हार तिय, लगी बगारन बार ॥ ३६४ ॥

इति श्रीकूर्मवंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्रश्रीसवाई
महाराज जगतसिंहाज्ञया मथुरास्थ मोहनलाल भट्टा-
त्मज कवि पद्माकरविरचिते जगद्विनोदे
अनुभावप्रकरणम् ॥ ३ ॥

संचारीभाव का लक्षण—दोहा

थाई भावन को जिते, अभिमुख रहैं सिताव।
जे नवरस में संचरैं, ते संचारी भाव ॥ १ ॥
थाई भावन में रहत, या बिधि प्रकट बिलात।
ज्यों तरंग दरियाव में, उठि उठि तितहि समात ॥ २ ॥

थिर है थाई भाव तब, परि पूरण रस होत।
थिर न रहत रसरूप लों, संचारिन को गोत॥ ३॥
थाई संचारिकन को, है इतनोई भेद।
संचारिन के कहत हैं, तेंतिस नाम निबेद॥ ४॥

संचारी भाव का उदाहरण—कवित्त

कहि निरबेद ग्लानि शंका त्यों असूया श्रम मद धृति आलस बिषाद मति मानिये। चिन्ता मोह सुपन बिबोध स्मृति अमर्ष गर्व उतसुकता सु अवहित ठानिये॥ दीनता हरष व्रीड़ा उग्रता सुनिद्रा ब्याधि मरण अपस्मार आवेग हू आनिये। त्रास उन्माद पुनि जड़ता चपलताई तेंतिसौ वितर्क नाम याही बिधि जानिये॥ ५॥

निर्वेद का लक्षण—दोहा

या बिधि संचारी सबै, बरणत हैं कबि लोग।
जे ज्याहि रस में संचरैं, ते तहँ कहिबे जोग॥ ६॥
डर उपजै कछु खेद लहि, बिपति ईर्षा ज्ञान।
ताही ते निज निदरिबो, सो निरबेद बखान॥ ७॥
अति उसास अरु दीनता, बिबरण अश्रु निपात।
निरबेदहु ते होत है, ए सुभाव निजगात॥ ८॥

निर्वेद का उदाहरण—सवैया

यों मन लालची लालच में लगि लोभ तरंगन में अवगाह्यो।
त्यों पदमाकर देह के गेह के नेह के काजन काहि सराह्यो॥
पाप किये पै न पातकी पावन जानिकै राम को प्रेम निबाह्यो।
चाह्यो भयो न कछू कबहूँ यमराजहूँ सों बृथा बैर बिसाह्यो ९॥

ग्लानि का लक्षण—दोहा

भयो न कोऊ होइगो, मो समान मतिमंद।
तजे न अबलों बिषय बिष, भजे न दशरथनंद॥ १०॥
भूखहि तें कि पियासतें, कै रति श्रम तें अंग।
बिह्वल होत गलानि सों, कंपादिक स्वर-भंग॥ ११॥

ग्लानि का उदाहरण—सवैया

आजु लखी मृगनैनी मनोहर बेनी छुटी छहरै छबि छाई।
टूटे हरा हियरा पै परे पदमाकर लीक सी लंक लुनाई॥
कै रतिकेलि सकेलि सुखै कलि केलि के भौन ते बाहिर आई।
राजि रही रति आँखिन में मन में धौं कहा तनमें शिथिलाई १२

शंका का लक्षण—दोहा

शिथिल गात काँपत हियो, बोलत बनत न बैन।
करी खरी बिपरीत कहुँ, कहत रँगीले नैन॥ १३॥

कै अपनी दुर्नीति कै, दुवन क्रूरता मानि ।
आवै उर में शोच अति, सो शंका पहिंचानि ॥ १४ ॥

शंका का उदाहरण—कवित्त

मोहिं लखि सोवत बिथोरिगो सुबेनी बनी तोरिगो हिये को हरा छोरिगो सुगैया को । कहै पदमाकर त्यों घोरिगो घनेरो दुख बोरिगो बिसासी आज लाज ही की नैया को ॥ अहित अनैसो ऐसो कौन उपहास यहै सोचत खरी मैं परी जोवत जुन्हैया को । बूझैंगे चबैया तब कहौं कहा दैया इत पारिगो को मैया मेरी सेज पै कन्हैया को ॥ १५ ॥

असूया का लक्षण—दोहा

लगै न कहुँ ब्रजगलिन में, आवत जात कलंक ।
निरखि चौथ को चाँद यह, सोचत सुमुखि सशंक ॥ १६ ॥
सहि न सकै सुख और को, यहै असूया जान ।
क्रोध गर्व दुख दुष्टता, ये सुभाव अनुमान ॥ १७ ॥

असूया का उदाहरण—कवित्त

आवत उसासी दुख लगै और हाँसी सुनि दासी उर लाय कहौ को नहिं दहा कियो । कहै पदमाकर हमारे जान ऊधो उन तात को न मात को न भ्रात को कहा कियो ॥ कंकालिनि कूबरी कलंकिनि कुरूप तैसी चेटकनि चेरी

ताके चित्त को चहा कियो । राधिका की कहवत कहि दीजो मोहन सों रसिकशिरोमणि कहाय धौं कहा कियो ॥१८॥

मद का लक्षण—दोहा

जैसे को तैसो मिलै, तबहीं जुरत सनेह ।
ज्यों त्रिभंग तन श्याम को, कुटिल कूबरी देह ॥ १९ ॥
धन जोबन रूपादि तैं, कै मदाब्दि के पान ।
प्रकट होत मदभाव तहँ, औरै गति बतरान ॥ २० ॥

मद का उदाहरण—सवैया

पूषनिशा में सुबारुणी लै बनि बैठे दुहूँ मद के मतवाले ।
त्यों पदमाकर झूमैं झुकैं घन घूमि रचे रसरंग रसाले ॥
शीत को जीत अभीत भये सुगनै न सखी कछु शाल दुशाले ।
छाक छकी छबिही को पिये मद नैनन के किये प्रेमके प्याले २१

श्रम का उदाहरण दोहा

धनमद जोबनमद महा, प्रभुता को मद पाय ।
तापर मद को मद जिन्हैं, को त्यहि सकै सिखाय ॥ २२ ॥
अति रति अति गति ते जहाँ, सुअति खेद सरसाय ।
सो श्रम तहाँ सुभाव ये, स्वेद उसास मनाय ॥ २३ ॥

श्रम का उदाहरण-सवैया

कै रतिरंग थकी थिर ह्वै पर्यंक में प्यारी परी सुखपायकै ।

त्यों पदमाकर स्वेद के बुंद रहे मुक्ताहल से तन छायकै ॥
बिंदु रचे मेहँदी के लसे कर तापर यों रह्यो आनन आयकै ।
इन्दु मनो अरबिंद पै राजत इन्द्रबधून के बृंद बिछायकै ॥२४॥

धृति का लक्षण—दोहा

श्रमजलकन दलकन प्रकट, पलकन थकित उसास ।
करी खरी बिपरीत रति, परी बिसासी पास ॥ २५ ॥
साहस ज्ञान सुसंग तैं, धरै धीरता चित्त ।
ताही सों धृति कहत हैं, सुकबि सबै नितनित्त ॥ २६ ॥

धृति का उदाहरण—सवैया

रे मन साहसी साहस राखु सुसाहस सों सब जेर फिरैंगे ।
ज्यों पदमाकर या सुख में दुख त्यों दुख में सुख शेर फिरैंगे ॥
वैस ही बेणु बजावत श्याम सुनाम हमार हू टेर फिरैंगे ।
एकदिना नहिं एकदिना कबहूँ फिरि वै दिन फेर फिरैंगे ॥२७॥

पुनर्यथा—सवैया

या जग जीवन को है यहै फल जो छल छाँड़ि भजै रघुराई ।
शोधि कै संत महंतन हूं पदमाकर बात यहै ठहराई ॥
ह्वै रहै होनी प्रयास बिना अनहोनी न ह्वै सकै कोटि उपाई ।
जो बिधि भालमें लीक लिखी सो बढ़ाई बढ़ै न घटै न घटाई २८

आलस का लक्षण—दोहा

बनचर बनचर गगनचर, अजगर नगर निकाय।
पदमाकर तिन सबन की, खबर लेत रघुराय॥ २९॥
जागरणादिक ते जहाँ, जो उपजंत अलसानि।
ताही सों आलस कहत, जे कोबिद रसखानि॥ ३०॥

आलस का उदाहरण—कबित्त

गोकुल में गोपिन गोबिंद संग खेली फाग राति भरी आलस में ऐसी छबि छलकैं। देह भरी आलस कपोल रस रोरी भरे नींद भरे नयनन कछूक झपैं झलकैं॥ लाली भरे अधर बहाली भरे मुखबर कबि पदमाकर बिलोकै कोन सलकैं। भाग भरे लाल औ सुहाग भरे सब अङ्ग पीक भरी पलकैं अबीर भरी अलकैं॥ ३१॥

विषाद का लक्षण—दोहा

निशि जागी लागी हिये, प्रीति उमंगत प्रात।
उठि न सकत आलस बलित, सहज सलोने गात॥ ३२॥
फुरै न कछु उद्योग जहँ, उपजैअति ही शोच।
ताहि बिषाद बखान हीं, जेकबि सदा अपोच॥ ३३॥

बिषाद का उदाहरण—कबित्त

सोच न हमारे कछू त्याग मनमोहन के तनको न सोच

जो पै योंही जरि जाय है। कहै पदमाकर न सोच अब एहू यह आइ है तौ आनि है न आइ है न आइ है॥ योग को न सोच अरु भोग को न सोच कछु यही बड़ो सोच सोतो सबनि सुहाइ है। कूबरी के कूबर में बेध्यो है त्रिभंगता त्रिभंग को त्रिभंगी लाल कैसे मुरझाइ है॥ ३४॥

पुनर्यथा—कवित्त

एकै संग धाए नंदलाल औ गुलाल दोऊ दृगनि गये जु भरि आनँद मढ़ै नहीं। धोय धोय हारी पदमाकर तिहारी सौंह अब तो उपाय एकौ चित्त पै चढ़ै नहीं॥ कैसी करों कहाँ जाउँ कासों कहौं कौन सुनै कोऊ तो निकासो जासों दरद बढ़ै नहीं। येरी मेरी बीर जैसे तैसे इन आँखिन तें कढ़िगो अबीर पै अहीर को कढ़ै नहीं॥ ३५॥

मतिका लक्षण—दोहा

अब न धीर धारत बनत, सुरति बिसारी कंत।
पिक पापी पीकन लगे, बगरेउ बधिक बसंत॥ ३६॥
नीति निगम आगमन ते, उपजै भलो बिचार।
ताही सों मति कहत हैं, सब ग्रंथन को सार॥ ३७॥

मति का उदाहरण—सवैया

बादिहि बादि बदीकै बकै मति बोरि दै बंज विषय बिषही को

मानि लै या पदमाकर की कही जो हित चाहत आपने जी को ॥
शंभु के जीव को जीवनमूरि सदा सुखदायक है सबही को ।
रामहि राम कहै रसना कस ना तु भजै रसनाम सही को ॥३८॥

चिंता का लक्षण—दोहा

पाछे पर न कुसंग के, पदमाकर यहि डीठ ।
परधन खात कुपेट ज्यों, पिटत बिचारी पीठ ॥ ३९ ॥
जहाँ कौन हूँ बात की, चित में चिंता होय ।
चिंता तासों कहत हैं, कबि कोबिद सब कोय ॥ ४० ॥

चिंता का उदाहरण—कबित्त

झिल्लत झकोर रहै जोबन को जोर रहै समद मरोर रहै शोर रहै तब सों । कहै पदमाकर तकैयन के गेह रहै नेह रहै नैनन न मेह रहै दब सों ॥ बाजत सुबैन रहै उनमदमैन रहै चित में न चैन रहै चातकी के रव सों । गेह में न नाथ रहै द्वारे ब्रजनाथ रहै कब लों मन हाथ रहै साथ रहै सब सों ॥ ४१ ॥

मोह का लक्षण—दोहा

कोमल कंज मृणाल पै, कियो कलानिधि बास ।
कब को ध्यान रह्यो जु धरि, मित्र मिलन की आस ॥ ४२ ॥
आपुहि अपनी देह को, ज्ञान जबै नहिं होय ।

बिरह दुःख चिन्ता जनित, मोह कहावत सोय ॥ ४३ ॥

मोह का उदाहरण—सवैया

दोउन को सुधि है न कछू बुधि वाही बलाइ में बूड़ि बही है।
त्यों पदमाकर दीन मिलाय क्यों चंग चवायन को उमही है॥
आजुहि की वा दिखादिखमें दशा दोउन की नहिं जातकहीहै।
मोहन मोहि रह्यो कबको कबकी वह मोहनी मोहि रही है४४॥

स्वप्न का लक्षण—दोहा

सटपटाति तसबीह सी, दीह दृगन में मेह।
सुब्रजबाल मोही परत, निर्मोही के नेह ॥ ४५ ॥
सुपन स्वप्न को देखिबो, जगिबो वहै बिबोध।
सुमिरन बीती बात को, सुमृति भाव सब शोध ॥ ४६ ॥

स्वप्न का उदाहरण—सवैया

काँपि रहै छिन सोवत हूँ कछु भाषिबो मो अनुसारि रही है।
त्यों पदमाकर रंच रुमंचनि स्वेद के बुंदनि धारि रही है॥
बेष दिखा दिखी के सुख में तन की तन को न सम्हार रही है।
जानतिहौं सखिसापनेमें नँदलालको नारि निहारि रही है ४७

बिबोध का लक्षण—दोहा

क्यों करि झूठी मानिये, सखि सपने की बात।
जु हरि रह्यो सोवत हियो, सो न पाइयत प्रात ॥ ४८ ॥

विबोध का उदाहरण—कवित्त

अधखुली कंचुकी उरोज अध आधे खुले अधखुले बैस नख रेखन की झलकैं। कहै पदमाकर नवीन अधनीबी खुली अधखुले छहरि छराके छोर छलकैं॥ भोर जगि प्यारी अध ऊरध इतै की ओर भाखी झिखि झिरकि उचारि अध पलकैं। आँखैं अधखुली अधखुली खिरकी हैं खुली अधखुले आनन पै अधखुली अलकैं॥ ४९॥

स्मृति का लक्षण—दोहा

अनुरागी लागी हिये, जागी बड़े प्रभात।
ललित नैन बेनी छुटी, छाती पर छहरात॥ ५०॥

स्मृति का उदाहरण—सवैया

कञ्चन आभा कदंब तरे करि कोऊ गई तिय तीज तियारी।
हौं हूं गई पदमाकर त्यों चलि औचक आइगो कुंजबिहारी॥
हेरि हिंडोरे चढ़ाय लियो कियो कौतुक सो न कह्यो परै भारी।
फूलनवारी पियारी निकुंज की झूलन है नव झूलनवारी ५१

अमरष का लक्षण—दोहा

करी जुही तुम बादिना, वाके सँग बतरान।
वहै सुमिरि फिरि फिरि तिया, राखति अपने प्रान॥ ५२॥
जहाँ जु अमरष होत लखि, दूजे को अभिमान।

अमरष ताको कहत हैं, जे कवि सदा सुजान॥ ५३ ॥

अमरष का उदाहरण—कवित्त

जैसो तैं न मोसों कहूँ नेकहू डरात हुतो ऐसो अब हौंहूँ तोसों नेकहू न डरिहौं। कहै पदमाकर प्रचंड जो परैगो तौ उमंड करि तोसों भुजदंड ठोंकि लरिहौं॥ चलो चलु चलो चलु बिचलु न बीचही तैं कीच बीच नीच तो कुटुंब को कचरिहौं। येरे दगादार मेरे पातक अपार तोहिं गंगा की कछार में पछारि छार छरिहौं॥ ५४ ॥

गर्व का लक्षण—दोहा

गरब सुअंजनहीं बिना, कंजन को हरि लेत।
खंजन मद भंजन अरथ, अंजन अँखियन देत॥ ५५ ॥
बल बिद्या रूपादि को, कीजै जहाँ गुमान।
गरब कहत सब ताहि को, जे कबि सुमति सुजान॥ ५६ ॥

गर्व का उदाहरण—कबित्त

बानी के गुमान कल कोकिल कहानी कहा बानी की सुबानी जाहि आवत भनै नहीं। कहै पदमाकर गोराई के गुमान कुच कुम्भन पै केसरि की कंचुकी ठमै नहीं॥ रूप के गुमान तिल उत्तमा न आनै उर आनन निकाई पाइ चन्द्र-

कीरनै नहीं । मृदुता गुमान मखतूलहू न मानै कछु गुन के गुमान गुनगौरि को गनै नहीं ॥ ५७ ॥

उत्सुकता का लक्षण—दोहा

गुल पर गालिब कमल है, कमलन पै सु गुलाब ।
गालिब गहब गुलाब पै, मो तन सुरभि सुभाव ॥ ५८ ॥
जहाँ हितू के मिलन हित, चाह रहति हिय माहि ।
उतसुकता तासों कहत, सब ग्रंथन में चाहि ॥ ५९ ॥

उत्सुकता का उदाहरण—कवित्त

ताकिये तितै तितै कुसुम्म सौं चुवोई परै प्यारी परबीन पाउँ धराति जितै जितै । कहै पदमाकर सुपौन ते उताली बनमाली पै चली यों बाल बासर बितै बितै ॥ बारही के भारन उतारि देत आभरन हीरन के हार देत हिलिन हितै हितै । चाँदनी के चौसर चहूँघा चौकचाँदनी में चाँदनी सी आई चंद चाँदनी चितै चितै ॥ ६० ॥

अवहित्थ का लक्षण—दोहा

सजे बिभूषण बसन सब, सुपिय मिलन की हौस ।
सह्यो परति नहिं कैसहूँ, रह्यो अधघरी द्यौस ॥ ६१ ॥
जो जहँ करि कछु चातुरी, दशा दुरावै आय ।
ताही सों अवहित्थ यह, भाव कहत कबिराय ॥ ६२ ॥

अवहित्थ का उदाहरण—सवैया

जोर जगी जमुना जलधार में धाय धँसी जलकेलि की माती।
त्यों पदमाकर पैग चलै उछलै जब तुंग तरंग बिघाती॥
टूटे हरा छरा छूटे सबै सरबोर भई अँगिया रँगराती।
को कहतो यह मेरी दशा गहतो न गोबिंद तो मैं बहि जाती ६३

दीनता का लक्षण—दोहा

निरखत ही हरि हरष कै, रहै सुआँसू छाय।
बूझत अलि केवल कह्यो, लग्यो धूमहीं धाय॥ ६४॥
अति दुख तें बिरहादि तें, परति जबहिं जो दीन।
ताहि दीनता कहत हैं, जे कबित्त रसलीन॥ ६५॥

दीनता का उदाहरण—सवैया

कै गिनती सी इती बिनती दिन तीनक लौं बहु बार सुनाई।
त्यों पदमाकर मोह मया करि तोहिं दया न दुखीन की आई॥
मेरो हरा हरहार भयो अब ताहि उतारि उन्हैं न दिखाई।
ल्याई न तू कबहूँ बनमाल गोपाल की वा पहिरी पहिराई ६६

हर्ष का लक्षण—दोहा

मुख मलीन तन छीन छबि, परी सेज पर दीन।
लेत क्यों न सुधि साँवरे, नेही निपट नवीन॥ ६७॥
जहाँ कौन हूँ बात में, उर उपजत आनंद।

प्रकटै पुलक प्रस्वेद ते, कहतहरष कबिबृन्द ॥ ६८ ॥

हर्ष का उदाहरण-सवैया

जग जीवन को फल जानि पस्यो धानि नैननि को ठहरैयतु है।
पदमाकर ह्यो हुलसै पुलकै तन सिंधु सुधा के अन्हैयतु है॥
मन पैरत सो रस के नद में अति आनँद में मिलिजैयतु है।
अब ऊँचे उरोज लखे तिय के सुरराज के राज सों पैयतु है ६९

व्रीड़ा का लक्षण-दोहा

तुमहिं बिलोकि बिलोकिये, हुलसि रहे यों गात।
आँगी में न समात उर, उर में मुद न समात ॥ ७० ॥
जहाँ कौनहूँ हेतु ते, उर उपजत अतिलाज।
व्रीड़ा ताको कहत हैं, सुकबिन के शिरताज ॥ ७१ ॥

व्रीड़ा का उदाहरण-सवैया

कालिह परों फिरिसाजवी स्यानसुआजु तो नैन सों नैनमिलालै।
त्यों पदमाकर प्रीति प्रतीति में नीति की रीति महा उरशालै॥
ये दिन यौबन जातो इतै सुनु लाज इती तु करैगी कहाँलै।
नेकु तो देखन दे मुखचन्द्र सों चन्द्रमुखी मति घूँघुट घालै ७२

उग्रता का लक्षण-दोहा

प्रथम समागम की कथा, बूझी सखिन जु आय।
मुख नवाय सकुचाय तिय, रही सुघूँघुट नाय ॥ ७३ ॥

निरदैपन सों उग्रता, कहति सुमति सब कोय ।
शयन कहावत सोइबो, वहै सुनिद्रा होय ॥ ७४ ॥

उग्रता का उदाहरण—कबित्त

सिंधु के सपूत सुत सिंधुतनया के बंधु मंदिर असंद शुभ सुंदर सुधाई के। कहै पदमाकर गिरीश के बसे हौ शीश तारन के ईश कुलकारन कन्हाई के॥ हालही के बिरह बिचारी ब्रजबाल ही पै ज्वाल से जगावत जुआलसी लुनाई के। येरे मतिमंद चंद आवत न तोहिं लाज है कै द्विजराज काज करत कसाई के॥ ७५ ॥

निद्रा का लक्षण—दोहा

कहा कहौं सखि काम को, हिय निरदैपन आज ।
तन जारत पारत बिपति, अपति उजारत लाज ॥ ७६ ॥

निद्रा का उदाहरण—कबित्त

चहचही चुभके चुभी है चौंक चुंबनकी लहलही लाँबी लटैं लपटीं सुलंक पर । कहै पदमाकर मजानि मरगजी मंजु मसकी सुआँगी है उरोजन के अंक पर ॥ सोई सरसायों सुगंधनि समोई स्वेद शीतल सुलोने लोने बदन मयंक पर । किन्नरी नरी है कै छरी है छबिदार परी टूटि सी परी है कै परी है परजंक पर ॥ ७७ ॥

व्याधि का लक्षण-दोहा

नंद नँदन नव नागरी, लखि सोवत निरमूल ।
उर उघरे उरजन निरखि, रह्यो सुआनन फूल ॥ ७८ ॥
बिरह बिबश कामादि ते, तन संतापित होय ।
ताही को सब कबि कहत, ब्याधि कहावत सोय ॥ ७९ ॥

व्याधि का उदाहरण-कवित्त

दूरहि ते देखत बिथा मैं वा बियोगिनि की आई भले भाजि यहाँ लाज मढ़ि आवैगी । कहै पदमाकर सुनो हो घनश्याम जाहि चेतत कहूँ जो एक आहि कढ़ि आवैगी ॥ सर सरितान को न सूखत लगैगी देर येती कछु जुलमिन ज्वाल बढ़ि आवैगी । ताते तन ताप की कहौं मैं कहा बात मेरे गातहि छुवो तो तुम्हैं ताप चढ़ि आवैगी ॥ ८० ॥

मरण का लक्षण-दोहा

कबकी अजब अजार मैं, परी बाम तन छाम ।
नित कोऊ मत लीजियो, चन्द्रोदय को नाम ॥ ८१ ॥
प्राण त्यागि कहिये मरन, सो न बरनिबे जोग ।
बरनत सूर सतीन को, सुजश हेत कबिलोग ॥ ८२ ॥

मरण का उदाहरण-सवैया

जानकी को सुनि आरतनाद सुजानि दशानन की छलहाई।
त्यों पद्माकर नीच निशाचर आइ अकाश में आड़्यो तहाँई॥
रावण ऐसे महारिपु सों अति जुद्ध कियो अपने बलताई।
सोहित श्रीरघुराजके काज पै जीव तजै तौ जटायु की नाई ८३॥

पुनर्यथा-कवित्त

पाली पैज पलकी प्रवेश करि पावक मों पौन से शिताब सहगौनकी गतीभई। कहै पद्माकर पताका प्रेम-पूरण की प्रकट पतिव्रत की सौगुनी रती भई॥ भूमि हू अकाश हू पताल हू सराहैं सब जाको जशगावत पवित्र मो सती भई। सुनत पयान श्री प्रताप को पुरंदर पै धन्य पटरानी जोधपुर में सती भई॥ ८४॥

अपस्मार का लक्षण-दोहा

हने राम दशशीश के, दशो शीश भुज बीस।
लै जटायु की नजरि जनु, उड़े गीध नभ सीस॥ ८५॥
सह दुःखादिक ते जहाँ, होत कंप भूपात।
अपस्मार सो फेनमुख, श्वासादिक सरसात॥ ८६॥

अपस्मार का उदाहरण-सवैया

जा छिन तें सुनु साँवरे रावरे लागे कटाच्छ कछू अनियारे।

त्यों पदमाकर ता छिनतें तिय सों अँग अंग न जात सम्हारे ॥
ह्वै हियहायल घायलसी घन घूमि गिरी परी प्रेम तिहारे ।
नैन गये फिरि फेन बहै मुख चैन रह्यो नहिं मैन के मारे ॥ ८७ ॥

आवेग का लक्षण-दोहा

लखि बिहाल एकै कहत, भई कहूँ भय भीत ।
इकै कहत मिरगी लगी, लगी न जानत प्रीत ॥ ८८ ॥
अति डर ते अति नेह ते, जु उठि चालियतु बेग ।
ताही को सब कहत हैं, संचारी आवेग ॥ ८९ ॥

आवेग का उदाहरण-कवित्त

आई संग आलिन के ननँद पठाई नीठि सोहत सुहाई सीस इँगुरी सुपट की । कहै पदमाकर गँभीर यमुना के तीर लागी घटभरन नवेली नेह अटकी ॥ ताही समय सोहन सुबाँसुरी बजाई तामें मधुर मलार गाई ओर बंशीबटकी । तान लगे लटकी रही न सुधि घूँघुट की घट की न औघट की न बाट की न घटकी ॥ ९० ॥

त्रास का लक्षण-दोहा

सुनि आहट पिय पगनि को, भभरि भजी यों नारि ।
कहुँ कनाक कहुँ किंकिणी, कहूँ सु नूपुर डारि ॥ ९१ ॥

जहाँ कौनहू अहित ते, उपजत कछु भय आय ।
ताही को नित त्रास कहि, बरणत हैं कबिराय ॥ ९२ ॥

त्रास का उदाहरण–सवैया

ये व्रजचंद गोबिन्द गोपाल सुन्यो न कितेक कलाम किये मैं ।
त्यों पदमाकर आनँद के नद हौ नँदनन्दन जानि लिये मैं ॥
माखन चोरी कै खोरिन ह्वै चले भागि कछू भय मानि जिये मैं ।
दूरि ही दौरि दुरे जो चहौ तौ दुरौ किन मेरे अँधेरे हिये मैं ॥ ९३ ॥

उन्माद का लक्षण–दोहा

शिशिर शीत भयभीत कछु, सुपरि प्रीति के पाय ।
आपुहि ते तजि मान तिय, मिली पीत मैं जाय ॥ ९४ ॥
अविचारित आचरण जो, सो उनमाद बखान ।
ब्यर्थ बचन रोदन हँसी, ये स्वभाव तहँ जान ॥ ९५ ॥

उन्माद का उदाहरण–सवैया

आपुहि आप पै रूसि रही कबहूँ पुनि आपुहि आप मनावै ।
त्यों पदमाकर ताके तमालनि भेंटिबे को कबहूँ उठिधावै ॥
जो हरि रावरो चित्र लखै तौ कहूँ कबहूँ हाँसि हेरि बुलावै ।
ब्याकुल बाल सुआलिनसों कह्यो चाहै कछू तौ कछू कहिआवै॥

जड़ता का लक्षण-दोहा

छिन रोवति छिन हँसि उठति, छिन बोलति छिनमौन ।
छिन छिन पर छीनी परति, भई दशा धौं कौन ॥९७॥
गमन ज्ञान आचरण की, रहै न जहँ सामर्थ ।
हित अनहित देखै सुनै, जड़ता कहत समर्थ ॥९८॥

जड़ता का उदाहरण-कबित्त

आज बरसाने की नवेली अलबेली बधू मोहन बिलो-किबे को लाज काज लै रही । छज्जा छज्जा झाँकती झरो-खनि झरोखनि ह्वै चित्रसारी चित्रसारी चन्द्रसम ह्वै रही ॥ कहै पदमाकर त्यों निकस्यो गोविन्द ताहि जहाँ तहाँ इकटक ताकि घरी द्वै रही । छज्जावारी छकी सी उझकी सी झरोखावारी चित्र कैसी लिखी चित्रसारी वारी ह्वै रही ॥ ९९ ॥

चपलता का लक्षण-दोहा

हलै दुहूँ न चलै दुहूँ, दुहुँन बिसारिगे गेह ।
इकटक दुहुँन दुहूँ लखै, अटकि अटपटे नेह ॥ १०० ॥
जहँ अति अनुरागादि ते, थिरता कछू रहै न ।
तित चित चाहै आचरण, वहै चपलता ऐन ॥ १०१ ॥

चपलता का उदाहरण-सवैया

कौतुक एक लख्यो हरि ह्यां पदमाकर यों तुम्हैं जाहिरकी मैं ।
कोऊ बड़े घरकी ठकुराइनि ठाढ़ी न घात रहै छिनकी मैं ॥
झाँकति है कबहूँ झँझरीन झरोखनि त्यों सिरकी सिरकी मैं ।
झाँकतिही खिरकीमैं फिरै थिरकी थिरकी खिरकी खिरकी मैं॥

वितर्क का लक्षण-दोहा

चकरी लौं सँकरी गलिन, छिन आवत छिन जात ।
परी प्रेम के फन्द में, बधू बितावत रात ॥१०३॥
उर उपजत सन्देह जहँ, कीजै कछू बिचार ।
ताहि बितर्क बिचारहीं, जे कबि सुमति उदार ॥१०४॥

वितर्क का उदाहरण-कवित्त

द्यौस गुणगौरिके सुगिरिजा गोसांइन को आवत यहां ही अति आनँद इतै रहे । कहै पदमाकर प्रतापसिंह महाराज देखो देखिबे को दिव्य देवता तितै रहे ॥ शैल तजि बैल तजि फैल तजि गैलन में हेरत उमाको यों उमापति हितै रहे । गौरिन में कौन धौं हमारी गुणगौरि यहै शम्भु घरी चारक लौं चकित चितै रहे ॥ १०५ ॥

पुनर्यथा-कवित्त

वेऊ आये द्वारे ही हूँ हुती जो अगवारे ओर द्वारे अगवारे

कोऊ तौ न तिहि काल में। कहै पदमाकर वे हरखि निरखि रहे त्यों ही रही हरखि निरखि नँदलाल में॥ मोहिं तो न जान्यो गयो मेरी आली मेरो मन मोहन के जाइ धौं पर्‌यो है कौन ख्याल में। भूल्यो भौंह भाल में चुर्‌यो है टेढ़ी चाल में छक्यो कै छबिजाल में कै बींध्यो बनमाल में॥ १०६॥

दोहा

किधौं सुअधपक आम में, मानहुँ मिलो मलिंद।
किधौं तनक है तम रह्यो, कै ठोढ़ी को बिंद॥ १०७॥

इति श्रीकूर्मवंशावतंसश्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेन्द्रश्री
सवाईमहाराजजगत्‌सिंहाज्ञया कबिपद्माकरविरचित
जगद्विनोदनाम्नि काव्ये संचारीभाव
प्रकरणम् समाप्तम्॥ ४॥

स्थायीभाव-प्रकरण

स्थायी भाव का लक्षण-दोहा

रस अनुकूल बिकार जो, उर उपजत है आय।
थायीभाव बखानहीं, तिनहीं को कबिराय॥ १॥
है सब भावन में सिरे, टरत न कोटि उपाव।

है परिपूरण होत रस, तेई थाई भाव ॥ २ ॥
रति इक हास जु शोक पुनि, बहुरि क्रोध उतसाह ।
भय गलानि आचरज निर, बेद कहत कबिनाह ॥ ३ ॥
नव रस के नौई इतै, थायी भाव प्रमान ।
तिनके लक्षण लक्ष सब, या बिधि कहत सुजान ॥ ४ ॥

रति का लक्षण–दोहा

सुप्रिय चाहते होत जो, सुमन अपूरब प्रीति ।
ताही को रति कहत हैं, रस ग्रंथन की रीति ॥ ५ ॥

रति का उदाहरण–कबित्त

सजन लगी है कहूँ कबहूँ श्रृँगारन को तजन लगी है कहूँ ऐसे बसवारी की । चखन लगी है कछू चाह पदमाकर त्यों लखन लगी है मंजु मूरति मुरारी की ॥ सुन्दर गोबिन्द गुण गनन लगी है कछू सुनन लगी है बात बाँकुरे बिहारी की । पगन लगी है लगी लगन हिये सों नेकु लगन लगी है कछू पी की प्राणप्यारी की ॥ ६ ॥

हांस का लक्षण–दोहा

कान्ह तिहारे मान को, अति आतप यह आय ।
तिय उर अंकुर प्रेम को, जाइ न कहुँ कुम्हिलाय ॥ ७ ॥
बचन रूप की रचन तें, कछु डर लहै बिकास ।

तातै परमित जो हँसनि, वहै जु कहियतु हाँस ॥ ८ ॥

हांस का उदाहरण-सवैया।

चन्द्रकला चुनि चूनरी चारु दई पहिराय सुनाय सुहोरी।
बेंदी बिशाखा रची पदमाकर अंजन आँजि समाजि कै रोरी ॥
लागी जबै ललिता पहिरावन कान्ह को कंचुकी केसरबोरी।
हेरि हरै मुसकाइ रही अँचरा मुख दै बृषभानु किशोरी ॥ ९ ॥

शोक का लक्षण-दोहा

बिबश न ब्रज बनितान के, सखि मोहन मृदुकाय।
चीर चोरि सुकदंब पै, कछुक रहे मुसकाय ॥ १० ॥
अहित लाभहित हानि ते, कछु जु हिये दुख होत।
शोक सुथायी भाव है, कहत कबिन को गोत ॥ ११ ॥

शोक का उदाहरण-सवैया

मोहिं न सोच इतो तन प्राण को जाय रहै कि लहै लघुताई।
येहू न सोच घनो पदमाकर साहिबी जो पै सुकण्ठ ही पाई ॥
सोच इहै इक बाल बधू बिन देहिगो अंगद को युवराई।
यों बच बालि बधू के सुने करुणाकर को करुणा कछु आई १२

क्रोध का लक्षण-दोहा

काम बाम को खसम की, भसम लगावत अंग ।
त्रिनयन के नैननि जम्यो, कछु करुणा को रंग ॥ १३ ॥
रिपुकृत अपमानादि ते, परमित चित्त बिकार ।
जु प्रतिकूल हिय हरष को, वहै क्रोध निरधार ॥ १४ ॥

क्रोध का उदाहरण-कबित्त

नद्दत बिहद्द नृप राम दल बद्दल में ऐसो एक हौं हीं दुष्ट दानव दलन हौं । कहै पदमाकर चहै तो चहुँ चक्रन को चीरि डारों पल में पलैया पैज पन हौं ॥ दशरथ लाल है कराल कछु लाल परिभाषत भयो ई नेकु रावनै न गन हौं । रीतौ करौं लंकगढ़ इन्द्रहि अभीतौ करौं जीतौं इन्द्रजीतौं आजु तो मैं लच्छमन हौं ॥ १५ ॥

उत्साह का लक्षण-दोहा

फारौं बक्ष न अक्ष को, जौ लगि मैं हनुमान ।
तौलौं पलक न लाइ हौं, कछुक अरुन अँखियान ॥ १६ ॥
लखि उदभट प्रतिभट जु कछु, जगजगात चित चाव ।
सहरष सौनर बीर को, उतसाहस थिरभाव ॥ १७ ॥

उत्साह का उदाहरण-कबित्त

इत कपि रीछ उत राक्षसन ही की चमू डंक देत बंका

गढ़ लंका ते कढ़ै लगी। कहै पदमाकर उमंड जग ही के हित चित में कछूक चोप चाप की चढ़ै लगी॥ बाननि के बाहिबे को कर में कमानि कसि धाई धूर धान आसमान में मढ़ै लगी। देखतै बनी है दुहूँ दल की चढ़ाचढ़ी में रामदृगहू पै नेकु लाली जो चढ़ै लगी॥ १८॥

भय का लक्षण—दोहा

मेघनाद को लखि लखन, हरषे धनुष चढ़ाय।
दुखित बिभीखन दबि रह्यो, कछु फूले रघुराय॥ १९॥
बिकृत भयंकर के डरन, जोकछु चित अकुलात।
सो भय थायी भाव है, कछु सशंक जहँ गात॥ २०॥

भय का उदाहरण—कवित्त

चितै चितै चारों ओर चौंकि चौंकि परे त्यों हीं जहाँ तहाँ जबतब खटकत पात हैं। भाजन सो चाहत गँवार ग्वालिनी के कछू डरन डराने से उठाने रोम गात हैं॥ कहै पदमाकर सुदेखि दशा मोहन की शेशहू महेशहू सुरेशहू सिहात हैं। एक पाय भीत एक पाय मीत काँधे धरे एक हाथ छीको एक हाथ दधि खात हैं॥ २१॥

ग्लानि का लक्षण—दोहा

तीन पैग पुहुमी दई, प्रथमहिं परम पुनीत।

बहुरि बढ़त लखि बामनहिं, भे बलि कछुक सभीत ॥२२॥
जहँ घिनाय चित चीजलखि, सुमिरि परस मन माह ।
उपजत जो कछु घिन यहै, ग्लानि कहत कबिनाह ॥२३॥

याही को नाम जुगुप्सा जानिये ॥

ग्लानि का उदाहरण-कवित्त

आवत गलानि जो बखान करों ज्यादा यह मादा मल मूत और मज्जा की सलीती है। कहै पदमाकर जरा तौ जागि भीजी तब छीजी दिन रैन जैसे रैनही की भीती है॥ सीतापति राम के सनेह बश बीती जू पै तौ तौ दिव्य देह यम यातना तें जीती है। रीती रामनाम तें रही जो बिन काम तौ या खारिज खराब हाल खाल की खलीती है २४

आचरज का लक्षण-दोहा

लखि बिरूप शूरपनखैं, सरुधिर चरबि चुवात ।
सिय हिय में घिन की लता, भई सु द्वै द्वै पात ॥२५॥
दरस परस सुनि सुमिरि जहँ, कानहुँ अजब चरित्र ।
होइ जु चित बिस्मित कछू, सो आचरज पवित्र ॥ २६॥

याही को विस्मय थायीभाव जानिये ।

अचरज का उदाहरण-सवैया

देखत क्यों न अपूरब इन्दु में द्वै अरबिन्द रहे गहि लाली।

त्यों पदमाकर कीरबधू इक मोती चुगै मनो ह्वै मतवाली ॥
ऊपर ते तम छाय रह्यो रबि की दब ते न दबै खुलि ख्याली ।
यों सुनि बैन सखी के बिचित्र भये चित चकित से बनमाली २७

निर्वेद का लक्षण-दोहा

नलकृत पुल लखि सिन्धु में, भये चकित सुरराव ।
रामपाद नत से सबहिं, सुमिरि अगस्त्य प्रभाव॥ २८॥
विफल श्रमादिक ते जु कछु, उर उपजत पछिताव ।
सद्गति हित निर्बेद सों, सम रस को थिरभाव ॥ २९॥

निर्बेद का उदाहरण-सवैया

ह्वै थिरमंदिर में न रह्यो गिरि कंदर में न तप्यो तप जाई ।
राज रिझाये न कै कबिता रघुराज कथा न यथामति गाई ॥
यों पछितात कछू पदमाकर कासों कहौं निज मूरखताई ।
स्वारथ हू न कियो परमारथ योंहीं अकारथ बैस बिताई ३०

पुनर्यथा

भोग में रोग बियोग सँयोग में योग में काय कलेश कमायो ।
त्यों पदमाकर वेद पुराण पढ़्यो पढ़िकै बहु बाद बढ़ायो ॥
दौर्‍यो दुरास में दास भयो पै कहूँ बिसराम को धाम न पायो ।
कायो गमायो सु ऐसही जीवन हाय मैं राम को नाम न गायो ३१

दोहा

पद्माकर हौं निज कथा, कासों कहौं बखानि ।
जाहि लखौं ताहै परी, अपनी अपनी आनि ॥ ३२ ॥

इति श्रीकूर्मवंशावतंसश्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेन्द्रश्री
सवाईमहाराजजगत्सिंहाज्ञया मथुरास्थानेमोहनलाल
भट्टात्मजकविपद्माकरविरचिते जगद्विनोदनाम्नि
काव्ये स्थायीभाव प्रकरणम् ॥ ५ ॥

रसनिरूपण-वर्णन

दोहा

मिलि बिभाव अनुभाव पुनि, संचारिन के बृंद ।
परिपूरण थिरभाव यों, सुर स्वरूप आनंद ॥ १ ॥
ज्यों पय पाय बिकार कछु, है दधि होत अनूप ।
तैसे ही थिरभाव को, बरणत कबि रस रूप ॥ २ ॥
सो रस है नव भाँति को, प्रथम कहत शृंगार ।
हास्य करुणा पुनि रौद्र गनि, बीर सु चारि प्रकार ॥ ३ ॥
बहुरि भयानक जानिये, पुनि बीभत्स बखानि ।
अद्भुत अष्टम नवम पुनि, सात सुरस उर आनि ॥ ४ ॥

शृंगार-रस-वर्णन

जाको थायी भाव रति, सो शृंगार सुहोत ।

मिलि बिभाव अनुभाव पुनि, संचारिन के गोत ॥ ५ ॥
रति कहियतु जो मनलगनि, प्रीति अपर परजाय।
थायीभाव शृँगार के, भल भाषत कबिराय ॥ ६ ॥
परिपूरण थिरभाव रति, सो शृँगार रस जान।
रसिकन को प्यारी सदा, कबिजन कियो बखान ॥ ७ ॥
आलंबन शृंगार के, तिय नायक निरधार।
उद्दीपन सब सखि सखा, बन बागादि बिहार ॥ ८ ॥
हाव भाव मुसकानि मृदु, इमि औरहु जु बिनोद।
है अनुभाव शृँगार नव, कबिजन कहत प्रमोद ॥ ९ ॥
उनमादिक संचरत तहँ, संचारी है भाव।
कृष्ण देवता श्याम रँग, सो शृँगार रसराव ॥ १० ॥
सो शृँगार द्वै भाँति को, दम्पति मिलन सँयोग।
अटक जहाँ कछु मिलन की, सो शृंगार बियोग ॥ ११ ॥

संयोग शृंगार का वर्णन-पुनर्यथा-छप्पै

कल कुण्डल दुहुँ डुलत खुलत अलकावलि बिपुलित।
स्वेद सीकरन मुदित तनक तिलकावलि सुललित ॥
सुरत मध्य मति लसत हरष हुलसत चष चंचल।
कबि पदमाकर छकित झपित झपि रहत दृगंचल ॥

इमि नित बिपरीत सुरति समै अस तिय सुखसाधक जु सब।
हरि हर बिरञ्चि पुर उरगपुर सुर पुर लै कह आज अब ॥ १२॥

दोहा

तिय पिय के पिय तीय के, नख शिख साजि शृँगार।
करि बदलौ तन मनहुँ को, दम्पति करत बिहार ॥ १३॥
जहँ बियोग पिय तीय को, दुखदायक अति होत।
बिप्रलंभ शृंगार सो, कहत कबिन को गोत ॥ १४॥

वियोग-शृंगार का वर्णन पुनर्यथा–सवैया

शुभ शीतल मंद सुगंध समीर कछू छलछंद से छ्वै गये हैं
पदमाकर चाँदनी चंदहू के कछू औरहि डौरन च्वै गये हैं ॥
मनमोहन सों बिछुरे इतही बनि कै न अबै दिन द्वै गये हैं।
सखि वे हम वे तुम वेई बने पै कछू के कछू मन ह्वै गये हैं १५॥

पुनर्यथा–सवैया

धीर समीर सुतीर ते तीछन ईछन कैसहु ना सहती मैं।
त्यों पदमाकर चाँदनी चंद चितै चहुँ ओरन चौंकती जी मैं॥
छाय बिछाय पुरैन के पातन लेटती चंदन की चवकी मैं।
नीच कहा बिरहा करतो सखि होती कहूँ जोपै मीचु मुठी मैं १६॥

पुनर्यथा–सवैया

ऐसी न देखी सुनी सजनी घनी बाढ़त जात बियोग की बाधा।

त्यों पदमाकर मोहन को तब ते कल है न कहूँ पल आधा ॥
लाल गुलाल घलाघल में दृग ठोकर दै गई रूप अगाधा।
कै गई कै गई चेटक सी मन लै गई लै गई लै गई राधा॥१७॥

दोहा

अटकि रहे किन कामरत, नागर नंदकिशोर।
करहु कहा पीकन लगे, पिक पापी चहुँ ओर ॥ १८ ॥
त्रिबिध बियोग शृंगार यह, इक पूरब अनुराग।
बरणत मान प्रवास पुनि, निरखि नेह की लाग ॥ १९ ॥
होत मिलन ते प्रथम ही, ब्याकुलता उर आनि।
सो पूरब अनुराग है, बरणत कबि रसखानि ॥ २० ॥

पूर्वानुराग का उदाहरण पुनर्यथा-कवित्त

जैसी छबि श्याम की पगी है तेरी आँखिन में ऐसी छबि तेरी श्याम आँखिन पगी रहै। कहै पदमाकर ज्यों तान में पगी है त्यों ही तेरी मुसकानि कान्ह प्रान में पगी रहै ॥ धीर धर धीर धर कीरति किशोरी भई लगन इतै उतै बराबर जगी रहै। जैसी रट तोहिं लागी माधव की राधे ऐसी राधे राधे राधे रट माधवै लगी रहै ॥ २१ ॥

पुनर्यथा-कवित्त

मोहिं तजि मोहनै मिल्यो है मन मेरो दौरि नैनहूँ

मिले हैं देखि देखि साँवरो शरीर। कहै पद्माकर त्यों तान मय कान भये हौं तौ रही जकि थकि भूली सी भ्रमी सी बीर॥ ये तौ निरदई दई इनको दया न दई ऐसी दशा भई मेरी कैसे धरौं तन धीर। हो तो मनहूँ के मन नैनन के नैन जो पै कानन के कान तो पै जान तो पराई पीर॥ २२॥

पुनर्यथा-कवित्त

मधुर मधुर मुख मुरली बजाय धुनि धमकि धमारन की धाम धाम कै गयो। कहै पद्माकर त्यों अगर अबीरन की करिकै घलाघली छलाछली चितै गयो॥ को है वह ग्वालिनी गुवालन के संग में अनंग छबिवारो रसरंग में भिजै गयो। ब्वै गयो सनेह फिर छ्वै गयो छरा को छोर फगुवा न दै गयो हमारो मन लै गयो॥ २३॥

दोहा

ज्यों ज्यों बर्षत घोर घन, घन घमण्ड गरुवाइ।
त्यों त्यों परति प्रचण्ड अति, नई लगन की लाइ॥ २४॥
सूचक पिय अपराध को, इंगित कहिये मान।
त्रिबिध मानसो मानिये, लघु मध्यम गुरु आन॥ २५॥
पर तिय दरशन दोष ते, करै जु तिय कछु रोष।
सुलघु मान पहिचानिये, होत ख्याल ही तोष॥ २६॥

लघुमान-वर्णन-कवित्त

वाही के रँगी है रँग वाही के पगी है मग वाही के लगी है सँग आनँद अगाधा को । कहै पदमाकर न चाह ताजि नेकु दृग तारन ते न्यारो कियो एक पल आधा को ॥ ताहू पै गोपाल कछु ऐसे ख्याल खेलत हैं मान मोरिबे को देखिबे करि साधा को । काहू पै चलाइ चष प्रथम खिझावै फेरि बाँसुरी बजाय कै रिझाय लेत राधा को ॥ २७ ॥

दोहा

ये हैं जिन सुख वे दिये, करति क्यों न हिय होस ।
ते सब अबहिं भुलाइयतु, तनक दृगन के दोस ॥ २८ ॥
और तिया के नाम कहुँ, पिय मुख ते कढ़ि जाय ।
होत मान मध्यम मिटै, सौंहन किये बनाय ॥ २९ ॥

मध्यम मान वर्णन-कबित्त

बैसही लौं थोरी पै न भोरी है किशोरी यह याकी चित चाह राह और की मँझैयो जिन । कहै पदमाकर सुजान रूपखान आगे आन बान आन की सुआन कै लगैयो जिन ॥ जैसे अब तैसे साधि सौंहनि मनाइ ल्याई तुम इक मेरी बात येती बिसरैयो जिन । आजु की घरी ते जैसे

भूलि हौं भले ही श्याम ललिता को लैकै नाम बाँसुरी बजैयो जिन ॥ ३० ॥

दोहा

आनि आनि तिय नाम लै, तुमहिं बुलावत श्याम।
लेन कह्यो नहिं नाह को, निज तिय को जो नाम ॥ ३१ ॥
आनि तियारत पीउ लखि, होत मान गुरुआइ।
पाइ परें भूषण भरें, छूटत कहूँ बराइ ॥ ३२ ॥

गुरुमान वर्णन-कवित्त

नीकी को अनैसी पुनि जैसी होय तैसी तऊ यौबन की मूरतैं न दूरि भागियतु है। कहै पदमाकर उजागर गोबिन्द जो पै चूकिगे कहूँ तो एतो रोष रागियतु है॥ प्रेम रस हाथ लै जगाय लै हिये सों हित पाइलै पहिरि चलु प्रेम पागियतु है। येरी मृगनैनी तेरी पाइ लागि बेनी पाइ पाइ लागि तेरे फेर पाइ लागियतु है ॥ ३३ ॥

भविष्यत् प्रवास का लक्षण-दोहा

निरखि नेकु नीको बनो, या कहि नन्दकुमार।
सुभुज मेलि मेल्यो गरे, गजमोतिन को हार ॥ ३४ ॥
पिय जु होइ परदेश में, सो प्रवास उर आन।
जाते होत बधून को, अति संताप निदान ॥ ३५ ॥

सो प्रवास द्वै भाँति को, इक भविष्य इक भूत ।
तिनके कहत उदाहरण, रस ग्रंथन के सूत ॥ ३६ ॥

भविष्यत् प्रवास का उदाहरण-सवैया

औसर कौन कहा समयो कहा काज बिबाद ये कौनसी पावन ।
त्यों पदमाकर धीर समीर उशीर भयो तपि कै तन तावन ॥
चैत की चाँदनी चारु लखे चरचा चलिबे की लगे जु चलावन ।
कैसी भई तुम्हैं गङ्ग की गैल में गीत मलारनके लगे गावन ३७॥

नये प्रवास का लक्षण-दोहा

रमन गमन सुनि शशिमुखी, भई दिवस का चन्द ।
परखि प्रेम पूरण प्रकट, निरखि रहे नँदनन्द ॥ ३८ ॥

नये प्रवास का उदाहरण-सवैया

कान्ह पगे कुब्जा के कलोलनि डोलनि छोड़ दई हर भांती।
माधुरी मूरति देखे बिना पदमाकर लागै न भूमि सोहाती॥
का कहिये उनसों सजनी यह बात है आपने भाग समाती ।
दोष बसंत को दीजै कहा उलहै न करील की डारन पाती ३९॥

पुनर्यथा-कवित्त

रैन दिन नैनन ते बहतो न नीर कहा करतो अनंग को उमंग शर चाप तो । कहै पदमाकर त्यों राग बाग बन

कैसो तैसो तन ताय ताय तारापति ताप तो ॥ कीन्हों जो बियोग तो सँयोगहू न देतो दई देतो जो सँयोग तो बियोगहि न थाप तो । होतो जो न प्रथम सँयोग सुख वैसो वह ऐसो अब तो न या बियोग दुख ब्यापतो ॥ ४० ॥

अभिलाष का लक्षण—दोहा

सुनत सँदेश बिदेश तजि, मिलते आय तुरंत ।
समुझी परत सुकंत जहँ, तहँ प्रकट्यो न बसंत ॥ ४१ ॥
इक बियोग शृंगार में, इती अवस्था थाप ।
अभिलाषा गुण कथन पुनि, पुनि उद्वेग प्रलाप ॥ ४२ ॥
चिंतादिक जे षट कही, बिरह अवस्था जानि ।
संचारी भावन बिषे, हौं आयहुँ जु बखानि ॥ ४३ ॥
ताते इत बर्णत न मैं, अभिलाषादिक चारि ।
तिनके लक्षण लक्ष सब, हौं भाषत निरधारि ॥ ४४ ॥
तिय अरु पिय जो मिलन की, करैं बिबिध चित चाह ।
ताही को अभिलाष कहि, बरणत हैं कबिनाह ॥ ४५ ॥

अभिलाष का उदाहरण—कबित्त

ऐसी मति होति अब ऐसी करौं आली बनमाली के शृँगार में शृँगारिबोई करिये । कहै पदमाकर समाज तजि काज तजि लाज को जहाज तजि डारिबोई करिये ॥ घरी

घरी पल पल छिन छिन रैन दिन नैनन की आरती उतारिबोई करिये। इन्दु ते अधिक अरबिन्द ते अधिक ऐसो आनन गोबिन्द को निहारिबोई करिये॥ ४६॥

गुणकथन का लक्षण-दोहा

पिय आगम ते प्रथम ही, करि बैठी तिय मान।
कबधौं आइ मनाइ हैं, यही रही धरि ध्यान॥ ४७॥
करै बिरह में जो जहाँ, पियगुण गुणन बखान।
ताही को गुण कथन कहि, बरणत सुकबि सुजान॥ ४८॥

गुणकथन का उदाहरण-कबित्त

हौं हूँ गई जान तित आइगो कहूँ ते कान्ह आनि बनितानहूँ को झपकि झलो गयो। कहै पदमाकर अनंग की उमंगनि सों अंग अंग मेरे भरि नेह को छलो गयो॥ टानि ब्रज ठाकुर ठगोरिन की ठेलाठेल मेलाकै मँझार हित हेला कैं भलो गयो। छाह छ्वै छला छ्वै छिगुनी छ्वै छ्ग छोरन छ्वै छलिया छबीलो छैल छाती छ्वै चलो गयो॥४९॥

पुनर्यथा-सवैया

चोरन गोरिन में मिलिकै इतै आई ही हाल गुवाल कहाँ की।
को न बिलोकि रह्यो पदमाकर वा तिय की अवलोकनि बाँकी॥

बीर अबीर की धुँधुरि में कछु फेर सों कै मुख फेरिकै झाँकी ।
कै गई काटि करेजनि के कतरे कतरे पतरे करिहाँकी ॥ ५० ॥

उद्वेग का लक्षण-दोहा

गुणवारे गोपाल के, करि गुणगणनि बखान ।
इक अवधिहि के आसरे, राखति राधा प्रान ॥ ५१ ॥
बिरह बिंब अकुलाय उर, त्यों पुनि कछु न सुहाय ।
चित न लगत कहुँ कैसहूँ, सो उद्वेग बनाय ॥ ५२ ॥

उद्वेग का उदाहरण-कवित्त

घर ना सुहात ना सुहात बन बाहिर हूँ बाग ना सुहात जे खुशाल खुशबोही सों । कहै पद्माकर घनेरे धन धाम त्यों ही चंद ना सुहात चाँदनी हूँ जोग जोही सों ॥ साँझ ना सुहात ना सुहात दिन माँझ कछू ब्यापी यह बात सो बखानत हौं तोही सों । राति ना सुहात ना सुहात परभात आली जब मन लागि जात काहू निरमोही सों॥५३॥

प्रलाप का लक्षण दोहा

ह्वै उदास अति राधिका, ऊँचे लेति उसास ।
सुनि मनमोहन कान्ह को, कुटिल कूबरी पास ॥ ५४ ॥
बिरही जन जहँ कहत कछु, निरखि निरर्थक बैन ।
तासों कहत प्रलाप हैं, कबि कबिता के ऐन ॥ ५५ ॥

प्रलाप का उदाहरण-कवित्त

आम को कहत अमिली है अमिली को आम आकही अनारन को आँकिबो करति है। कहै पदमाकर तमालन को ताल कहै तालनि तमाल कहि ताकिबो करति है॥ कान्है कान्ह काहू कहि कदली कदंबनि को भेंटि परिरम्भन में छाकिबो करति है। साँवरे जू रावरे यों बिरह बिकानी बाल बन बन बावरी लौं ताकिबो करति है॥ ५६॥

पुनर्यथा—कवित्त

प्रानन के प्यारे तन ताप के हरनहारे नंद के दुलारे ब्रजबारे उमहंत हैं। कहै पदमाकर उरूझे उर अंतर यों अंतर चहेहूँ जे न अंतर चहत हैं॥ नैननि बसे हैं अंग अंग हुलसे हैं रोम रोमनि रसे हैं निकसे हैं को कहत हैं। ऊधो वे गोबिन्द कोऊ और मथुरा में यहाँ मेरो तो गोबिन्द मोहि मोहि में रहत हैं॥ ५७॥

मूर्च्छा का लक्षण-दोहा

निरखत घन घनश्याम कहि, भेंटन उठति जु बाम।
बिकल बीच ही करत जनु, करि कमनैती काम॥ ५८॥
दशा बियोगहि की कहत, जुहै मूरछा नाम।
जहँ न रहत सुधि कौन हूं, कहां शीत कहँ घाम॥ ५९॥

मूर्च्छा का उदाहरण-कवित्त

ये हो नन्दलाल ऐसी ब्याकुल परी है बाल हाल ही चलौ तो चलो जोरी जुरि जायगी। कहै पदमाकर नहीं तो ये झकोरैं लगे ओरे लै अचाक बिन घोरे घुरि जायगी॥ सीरे उपचारन घनेरे घनसारन को देखत ही देखौ दामिनी लौं दुरि जायगी। तौहीं लग चैन जौ लौं चेती है न चंदमुखी चेतैगी कहूँ तौ चाँदनी में चुरि जायगी॥ ६०॥

दोहा

तौ ही तौ भल अवधि लौं, रहै जु तिय निरमूल।
नहिं तो क्यों करि जियहिगी, निरखि शूल से फूल॥६१॥

शृंगाररस वर्णन समाप्त॥

हास्यरस का लक्षण-दोहा

थायी जाको हास है, वहै हास्यरस जानि।
तहँ कुरूप कूदब कहब, कछु बिभाव ते मानि॥६२॥
भेद मध्य अरु ऊँच स्वर, हँसबोई अनुभाव।
हरष चपलता औरहू, तहँ संचारी भाव॥६३॥
श्वेतरंग रसहास्य को, देव प्रथम पति जासु।
ताको कहत उदाहरण, सुनत जो आवै हासु॥६४॥

हास्य-रस का उदाहरण-कवित्त

हँसि हँसि भाजैं देखि दूलह दिगंबर को पाहुनी जे आवैं हिमाचल के उछाह में। कहै पदमाकर सुकाहू सों कहै को कहा जोई जहाँ देखै सो हँसेई तहाँ राह में॥ मगन भयेऊ हँसैं नगन महेश ठाढ़े औरे हँसेएऊ हँस हँसकै उमाह में। शीश पर गंगा हँसैं भुजनि भुजंगा हँसैं हाँस ही को दंगा भयो नंगा के बिवाह में॥ ६५॥

दोहा

क मूसर नाचत नगन, लखि हलधर को स्वाँग।
हँसि हँसि गोपी फिरि हँसैं, मनहुँ पिये सी भाँग॥ ६६॥

करुणारस का लक्षण-दोहा

आलंबन प्रिय को मरण, उद्दीपन दाहादि।
थायी जाको शोक जहँ, वहै करुणारस यादि॥ ६७॥
रोदति महिपति नादि जहँ, बरणत कबि अनुभाव।
भिरवेदादिक जानिये, तहँ संचारी भाव॥ ६८॥
चित्र कबूतर के बरण, बरुण देवता जान।
या विधि को या करुणारस, बर्णत कबि कबितान॥ ६९॥

करुणारस का उदाहरण-कवित्त

आँसुन अन्हाय हाय हाय कै कहत सब औधपुरबासी

के कहा यों दुःख दाहिये। कहै पदमाकर जुलूस युवराजी को सु ऐसो धनी है न जाय जाके शीश चाहिये॥ सुत के पयान दशरथ ने तजे जो प्रान बाढ़्यो शोकसिन्धु सो कहां लौं अवगाहिये। मूढ़ मंथरा के कहे बन को जु भेजे राम ऐसी यह बात कैकेयी को तौ न चाहिये॥ ७०॥

दोहा

राम भरत मुख मरण सुनि, दशरथ के बन माँह।
महि परि भे रोदत उचरि, हा पितु हा नरनाह॥ ७१॥

रौद्ररसथायी का लक्षण-दोहा

थायी जाको क्रोध अति, वहै रौद्ररस नाम।
आलंबन रिपु रिपु उमँड़, उद्दीपन तिहि ठाम॥ ७२॥
भृकुटि भंग अति अरुणाई, अधर दशन अनुभाव।
गरब चपलता और हू, तहँ संचारी भाव॥ ७३॥
रक्त रंग रस रौद्र को, रुद्र देवता जान्न।
ताको कहत उदाहरण, सुनहु सुमति दै कान॥ ७४॥

रौद्ररस का उदाहरण-कबित्त

बारि टारि डारौं कुम्भकर्णहिं बिदारि डारौं मारौं मेघनादै आजु यों बल अनंत हौं। कहै पदमाकर त्रिकूटही

को ढाहि डारौं डारत करेई यातुधानन को अंत हौं ॥ अच्छहि निरच्छ कपिरुच्छ है उचारौं इमि तोसे तिच्छ तुच्छन को कछु वैन गन्त हौं। जारि डारौं लंकहि उजारि डारौं उपवन फारि डारौं रावण को तौ मैं हनुमन्त हौं ॥ ७५ ॥

बीररस का लक्षण-दोहा

अधर चब्ब गहि गब्ब अति, चहि रावण को काल।
दृग कराल मुख लाल करि, दौरेउ दशरथलाल ॥ ७६ ॥
जाको रस उत्साह शुभ, है इक थायी भाव।
सुरस बीर है चारि बिधि, कहत सबै कबिराव ॥ ७७ ॥
युद्धबीर इक नाम है, दयाबीर बिय नाम।
दीनबीर तीजी सुपुनि, धर्मबीर अभिराम ॥ ७८ ॥
युद्धबीर को जानिये, आलम्बन रिपुजोर।
उद्दीपन ताको तबहिं, पुनि सेना को सोर ॥ ७९ ॥
अँग फरकन दृग अरुनई, इत्यादिक अनुभाव।
गरब असूया उग्रता, तहँ संचारी नाव ॥ ८० ॥
इन्द्र देवता बीर को, कुंदन बरण बिशाल।
ताको कहत उदाहरण, सुनिजन होत खुशाल ॥ ८१ ॥

बीररस का उदाहरण-कबित्त

सोहै अत्र आंदे जे न छोड़े सीस संगर की लंगर

लँगूर उच्च ओज के अतंका में । कहै पदमाकर त्यों हुंकरत फुंकरत फैलत फलात फाल बाँधत फलंका में ॥ आगे रघुबीर के समीर के तनय के संग तारी दै तड़ाक तड़ा-तड़ के तमंका में । शंका दै दशानन को हंका दै सबंका बीर डंका दै बिजय को कपि कूदि पस्यो लंका में ॥ ८२ ॥

पुनर्यथा—कबित्त

जाही ओर सोर परै घोर घन ताही ओर जोर जंग जालिम को जाहिर दिखात है । कहै पदमाकर अरीन की अवाई पर साहब सवाई को ललाई लहरात है ॥ परिघ प्रचंड चमू हरषित हाथी पर देखत बनत सिंह माधव को गात है । उद्धत प्रसिद्ध युद्ध जीतिही के सौदा हित रौदा ठनकारि तन हौदा में न मात है ॥ ८३ ॥

दोहा

धनुष चढ़ावत भे तबहिं, लखि रिपुकृत उतपात ।
हुलसि गात रघुनाथ को, बखतर में न समात ॥ ८४ ॥

दयाबीर का लक्षण—दोहा

दयाबीर में दीन दुख, बरणत आदि बिभाव ।
दूरि करब दुख मृदु कहब, इत्यादिक अनुभाव ॥ ८५ ॥
सुधृत चपलता औरहू, तहँ संचारी भाव ।

दयाबीर बरणत सबै, याही बिधि कबिराव ॥ ८६ ॥

दयावीर का उदाहरण-सवैया

पापीअजामिलपार कियो जेहि नामलियोसुतही को नरायन ।
त्यों पदमाकर लात लगे परविप्रहु के पग चौगुने चायन ॥
को अस दीनदयालु भयो दशरत्थ के लाल से सूध सुभायन ।
दौरेगयंद उबारिबेको प्रभु बाहन छोड़ि उबाहने पायन ॥८७॥

दोहा

मिले सुदामा सों जुकरि, समाधान सनमान ।
पग पलोटि मग श्रम हरेउ, ये प्रभु दयानिधान ॥ ८८ ॥

दानबीर का लक्षण-दोहा

दान समय को ज्ञान पुनि, याचक तीरथ गौन ।
दान बीर के कहत हैं, ये बिभाव मतिभौन ॥ ८९ ॥
तृण समान लेखत सुधन, इत्यादिक अनुभाव ।
ब्रीड़ा हरषादिक गनौ, तहँ संचारी भाव ॥ ९० ॥

दानबीर का उदाहरण-कबित्त

बकसि बितुंड दिये झुण्डन के झुण्ड रिपु मुण्डन की मालिका दई ज्यों त्रिपुरारी को । कहै पदमाकर करोरिन को कोष दिये षोड़शहू दीन्हे महादान अधिकारी को ॥ ग्राम दिये धाम दिये अमित अराम दिये अन्न जल

दीने जगती के जीवधारी को। दाता जयसिंह दोय बातैं तौ न दीन्ही कहूँ बैरिन को पीठि और दीठि परनारीको॥९१॥

पुनर्यथा-कवित्त

संपति सुमेर की कुबेर की जु पावै ताहि तुरत लुटावत बिलंब उर धारै ना। कहै पदमाकर सुहेम मय हाथिन के हलके हजारन के बितर उचारै ना॥ गंज गजबकस महीप रघुनाथ राव याहि गज धोखे कहूँ काहू देइ डारै ना। याही डर गिरिजा गजानन को गोइ रही गिरति गरे तैं निज गोद तैं उतारै ना॥ ९२॥

दोहा

दै डारै जनु भिक्षुकनि, नहिं रावणहिं सुलंक।
प्रथम मिल्यो याते प्रभुहिं, सुबिभीषण है रंक॥ ९३॥

धर्मवीर का लक्षण-दोहा

धर्म बीर के कवि कहत, ये बिभाव उर आन।
बेद सुमृति शीलन सदा, पुनि पुनि सुनब पुरान॥ ९४॥
बेद-विहित क्रम बचन बपु, औरहु है अनुभाव।
धृतिआदिक बरणतसुकबि, तहँ संचारी भाव॥ ९५॥

धर्मवीर का उदाहरण-कवित्त

तृन की समान धन धाम राज त्याग करि पाल्यो पितु

बचन जो जानत जनैया है । कहै पदमाकर बिबेक ही को बानों बीच साँचो सत्यबीर धीर धीरज धरैया है ॥ सुमृति पुराण बेद आगम कह्यो जो पंथ आचरत सोई शुद्ध करम करैया है । मोद मति मंदर पुरंदर मही को धन्य धरम धुरंधर हमारो रघुरैया है ॥ ९६ ॥

दोहा

धारिजटा बल्कल भरत, गन्यो न दुख तजि राज ।
भे पूजत प्रभुपादुकन, परम धरम के काज ॥ ९७ ॥

भयानक का लक्षण-दोहा

जाको थायी भाव भय, वहै भयानक जान ।
लखन भयंकर गजब कछु, ते बिभाव उर आन ॥ ९८ ॥
कंपादिक अनुभाव तहँ, संचारी मोहादि ।
कालदेव कैला बरण, सु भयानक रसयादि ॥ ९९ ॥

भयानक का उदाहरण-कवित्त

झलकत आवै झुंड झिलम झलानि झप्यौ तमकत आवैं तेग वाही औ सिलाही है । कहै पदमाकर त्यों दुन्दुभी धुकार सुनि अकबक बोलै यों गनीम औ गुनाही है ॥ माधव को लाल कालहू तैं बिकराल दल साजि धायो ये दई दई धौं कहा चाही है । कौन को कलेऊ धौं करैया भयो

काल अरु कापै यों परैया भयो गज़ब इलाही है ॥ १०० ॥

पुनर्यथा-कवित्त

ज्वाला की जलन सी जलाक जंग जालन की जोर की जमा है जोम जुलुम जिलाहे की । कहै पदमाकर सुरहियो बचाये जग जालिम जगतसिंह रंग अवगाहे की ॥ दौरि दावादारन पै द्वार सौ दिवाकर की दामिनी दमंकनि दलेल दिग दाहे की । कालकी कुटुम्बिनि कला है कुल्लि कालिका की कहर की कुंत की नजरि कछवाहे की ॥ १०१ ॥

छप्पै

भुवन धुंधुरित धूलि धूलि धुंधुरित सुधूमहु ।
पदमाकर परतच्छ स्वच्छ लखि परत न भूमहु ॥
भग्गत अरि परिपग्ग मग्ग लग्गत अँग अंगनि ।
तहँ प्रताप पृथिपाल ख्याल खेलत खुलि खग्गनि ॥
तहँ तबहिं तोपि तुंगनि तड़पि तंतड़ान तेगनि तड़कि ।
धुकि धड़ धड़ धड़ धड़ धड़ाधड़ धड़धड़ात तद्धाधड़कि १०२॥

दोहा

एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराइ ।
बिकल बटोही बीचहीं, परो मूरछा खाइ ॥१०३॥

बीभत्स रस का लक्षण–दोहा

थाई जासु गलानि है, सो बीभत्स गनाव।
पीब मेद मज्जा रुधिर, दुर्गंधादि बिभाव॥ १०४॥
नाक मूँदिबो कम्प तन, रोम उठब अनुभाव।
मोह असूया मूरछा, दिक संचारी भाव॥ १०५॥
महाकाल सुरनील रँग, सू बिभत्स रस जानि।
ताको कहत उदाहरण, रसग्रंथनि उर आनि॥ १०६॥

बीभत्स का उदाहरण–छप्पै

पढ़त मंत्र अरु यंत्र अंत्र लीलत इमि जुग्गिनि।
मनहुँ मिलत मदमत्त गरुड़ तिय अरुण उरग्गिनि॥
हरबरात हरषात प्रथम परसत पलपंगत।
जहँ प्रताप जिति जंग रंग अँगअंग उमंगत॥
जहँ पदमाकर उत्तपति अति रन रक्कत नदियबहत।
चखचाकित चित्त चरबीन चुभि चकचकाइ चंडीरहत॥ १०७॥

दोहा

रिपुअंत्रन की कुण्डली, करि जुग्गिनि जु चबाति।
पीबहि में पागी मनो, जुवति जलेबी खाति॥ १०८॥

अद्भुतरस का लक्षण–दोहा

जाको थाई आचरिज, सो अद्भुत रस गाव।

असंभावित जेते चरित, तिनकोलखताबिभाव ॥ १०९ ॥
बचनबिचलबोलनि कँपनि, रोम उठनि अनुभाव ।
बितरक शंका मोह ये, तहँ संचारीभाव ॥ ११० ॥
जासु देवता चतुरमुख, रंग बखानत पीत ।
सो अद्भुत रस जानिये, सकल रसनको मीत ॥ १११ ॥

अद्भुतरस का उदाहरण-कवित्त

अधम अजान एक चाढ़िकै बिमान भाष्यो पूछत हौं गङ्गा तोहिं परिपरि पाइहौं । कहै पदमाकर कृपा करि बतावै साँची देखे अति अद्भुत रावरे सुभाइहौं ॥ तेरे गुण गानहूं की महिमा महान मैया कान कान नाइ के जहान मध्य छाइहौं । एक मुख गाये ताके पंचमुख पाये अब पंचमुख गाइहौं तौ केते मुख पाइहौं ॥ ११२ ॥

पुनर्यथा-कवित्त

गोपी ग्वाल माली जुरे आपुस में कहैं आली कोऊ यशुदा के औतास्यो इन्द्रजाली है । कहै पदमाकर करै को यों उताली जापै रहन न पावै कहूँ एको फन खाली है ॥ देखै देवताली भई बिधि के खुशाली कूदि किलकत काली हेरि हँसत कपाली है । जनम को चाली येरी अद्भुत दै ख्याली आजु काली की फनाली पै नचत बनमाली है ११३

पुनर्यथा–कवित्त

मुरली बजाइ तान गाइ मुसकाइ मंद लटकि लटकि माई नृत्य में निरत है । कहै पदमाकर गोबिन्द के उछाह अहि बिष को प्रबाह प्रतिमुख ह्वै झिरत है ॥ ऐसो फैल परत फुसकरत ही में मानो तारन को बृंद फूतकारन गिरत है । कोप करि जौलौं एक फन फुफकावै काली तौलौं बनमाली सोऊ फन पै फिरत है ॥ ११४ ॥

सात दिन सात राति करि उतपात महा मारुत झकोरै तरु तोरै दीह दुख मैं । कहै पदमाकर करी त्यों धूमधारन हू एते पै न कान्ह कहूँ आयो रोष रुख मैं ॥ छोर छिगुनी के छत्र ऐसो गिरि छाइ राख्यो ताके तरे गाय गोप गोपी खरी सुख मैं । देखि देखि मेघन की सेन अकुलानी रह्यो सिन्धु में न पानी अरु पानी इन्दुमुख मैं ॥ ११५ ॥

दोहा

घन बर्षत कर पर धस्यो, गिरि गिरिधर निरशंक ।
अजब गोपसुत चरित लखि, सुरपति भयो सशंक ॥ ११६ ॥

शान्तरस का लक्षण–दोहा

सुरस शान्त निर्बेद हैं, जाको थायी भाव ।
सतसंगत गुरु तपोबन, मृतक समान बिभाव ॥ ११७ ॥
प्रथम रुमांचादिक तहाँ, भाषत कबि अनुभाव ।

धृति मति हरषादिक कहे, शुभ संचारी भाव ॥ ११८ ॥
शुद्ध शुक्ल रँग देवता, नारायण है जान ।
ताको कहत उदाहरण, सुनहु सुमति दै कान ॥ ११९ ॥

शान्तरस का उदाहरण-सवैया

बैठि सदा सतसंगहि में बिष मानि बिषयरस कीर्ति सदाहीं ।
त्यों पदमाकर झूठ जितो जग जानि सुज्ञानहिं के अवगाहीं ॥
नाककी नोकमें डीठि दिये नित चाहै न चीज कहूँ चित चाहीं ।
संतत संत शिरोमणि है धन है धन वे जन वे परवाहीं ॥१२०

दोहा

बन बितान रबि शशि दियो, फल भख सलिल प्रबाह ।
अवनि सेज पंखा पवन, अब न कछू परवाह ॥ १२१ ॥
सब हित तें बिरकत रहत, कछू न शंका त्रास ।
बिहित करत सुनहित समुझि, शिशुवत जे हरिदास ॥ १२२ ॥

दोहा

जगतसिंह नृप हुकुम तें, पदमाकर लहि मोद ।
रसिकन के बश करन को, कीन्हों जगतबिनोद ॥१२३॥

इति श्रीकूर्मवंशावतंसश्रीमहाराजराजेन्द्रश्रीसवाई महाराज
जगत्सिंहाज्ञया मथुरास्थायि-मोहनलालभट्टात्मज
कविपद्माकरविरचिते जगद्विनोदनाम्निकाव्ये
नवरसनिरूपणप्रकरणंसमाप्तिम्पफाण
इतिशम्


Y-3